अन्तरा शब्दशक्ति

शब्द से संवेदना तक,
संवेदना से विचार तक और
विचार से परिवर्तन तक।

अन्तरा शब्दशक्ति – साहित्यिक वेब अंक (अगस्त 2026)

अगस्त 2026 (अंक - 5)

रचनाएँ प्रेषित करने हेतु संपर्क सूत्र :- antrashabdshakti@gmail.com | 9009423393 / 9009465259

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

सृजन की पाँचवीं साहित्यिक यात्रा

सृजन की रोशनी से प्रकाशित होता समय

अगस्त का महीना वर्षा की हरियाली के साथ स्वतंत्रता और संकल्प का संदेश लेकर आता है। स्वतंत्रता केवल बंधनों से मुक्ति नहीं, बल्कि अपने विचारों को निर्भीकता से व्यक्त करने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने का नाम भी है।

साहित्य इसी स्वतंत्र चेतना का सशक्त माध्यम है। कलम जब संवेदना से जुड़ती है, तो शब्द केवल शब्द नहीं रहते, वे विचार और परिवर्तन की आवाज बन जाते हैं। आज के तेजी से बदलते समय में साहित्य की भूमिका इसलिए और महत्वपूर्ण हो जाती है कि वह हमें संवेदनशील बनाए रखे और मनुष्यता से जोड़े।

अन्तरा शब्दशक्ति का उद्देश्य भी रचनाकार और पाठक के बीच ऐसा ही सार्थक संवाद स्थापित करना है। सृजक-सृजन समीक्षा के माध्यम से हमारा प्रयास है कि रचनाकारों की रचनात्मकता को मंच मिले और पाठकों को विविध साहित्यिक स्वर पढ़ने-सुनने का अवसर प्राप्त हो।

इस अगस्त वेब अंक में विभिन्न विधाओं की रचनाएँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। आशा है, ये रचनाएँ आपके मन को स्पर्श करेंगी और कुछ नए विचारों को जन्म देंगी।

आइए, स्वतंत्रता और रक्षाबंधन मित्रतादिवस जैसे पावन इस माह में हम अपनी कलम को विचारों की स्वतंत्रता, संवेदनाओं की व्यापकता और सृजन की सार्थकता से जोड़ें।

अन्तरा शब्दशक्ति की यात्रा

> शब्द से संवेदना तक,
> संवेदना से विचार तक और
> विचार से परिवर्तन तक।

अगले वेब अंक के लिए रचनाएँ आमंत्रित

- देश-विदेश के सभी रचनाकारों से आगामी वेब अंक के लिए मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ सादर आमंत्रित हैं।
- विधाएँ: कविता, गीत, ग़ज़ल, दोहा, मुक्तक, लघुकथा, कहानी, आलेख, संस्मरण, व्यंग्य, समीक्षा आदि।
- रचना के साथ संक्षिप्त परिचय एवं फोटो अवश्य भेजें।

आइए, अपनी कलम की आवाज़ को अन्तरा शब्दशक्ति के मंच तक पहुँचाएँ।

1/08/2026 से 31/08/2026 वेबअंक में प्रकाशित रचनाकारों की सूची।

01.08.2026
1- विजयानन्द विजय
2- वीरेंद्र हीरालाल पथरिया
3- कविता चौहान
4- मनोज जैन

02.08.2026
1-पूनम कतरियार

03.08.2026
1- दिनेंद्र दास
2- डॉ. नवीन कुमार भट्ट
3- स्वर्णा शरद राव

04.08.2026
1- डॉ. मंजू मंगलप्रभात लोढ़ा

05.08.2026
1- राजेश रेड्डी
2- अरविंद नायक
3- स्वरिका कीर्ति
4- योगी नारायण नाथ

06.08.2026
1-शुभा मिश्रा
2-रीतु जाजू
3-डॉ.अनुराधा प्रियदर्शिनी
4-मुकेश कुमार सिन्हा
5-निशा श्रीवास्तव

07.08.2026
1- नंदिता
2- पूर्णिमा साह
3- शालिनी
4-रंजना पाण्डेय
5-श्रीधर पांडेय कृष्णार्थ

08.08.2026
1-डॉ. मीरा कनौजिया
2-सीमा निगम रायपुर
3-कामिनी कौशिक
4-रंजना बिनानी

09.08.2026
1- पुष्पा अरविंद शर्मा

10.08.2026
1-अनिता शरद झा
2-डॉ. मीता अग्रवाल
3-उद्देश्य तिवारी
4-निशा श्रीवास्तव
5-प्रो.(डॉ.)भगवत स्वरूप

11.08.2026
1-डॉ.नवीन कुमार भट्ट
2-प्रमदा ठाकुर अमलेश्वर
3-विशाखा सिंघल।
4-प्रणव राज

12.08.2026
1-राज किशोर वाजपेयी
2-पुष्पा गुप्ता प्रांजलि
3-अमृता राजेंद्र प्रसाद
4-सन्तोष पाण्डेय
5-अभिलाषा सिह

13.08.2026
1-डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना
2-उमा झुरेले
3-विभा नविशा सोनी
4-मनोरमा रतले

14.08.2026
1-शिल्पी नवनीत तपा
2-राजेश्वरी बाजपेई
3-आलोकधन्वा
4-अर्चना सोनी कटनी

15.08.2026
1-डॉ. अमृता शुक्ला
2-विशाखा सिंघल।
3-पद्मा मिश्रा
4-दिलीप आचार्य
5-प्रज्ञा जायसवाल

16.08.2026
1-राधा गोयल

17.08.2026
1-शिवनारायण जी
2-चन्द्रबिंद सिंह
3-वृंदा पंचभाई
4-अभिलाषा सिह
5-भगवती प्रसाद द्विवेदी

18.08.2026
1-महेंद्र जैन
2-रूबी भूषण
3-कमलेश कंवल
4-चोपेश्वर कुमार साहू
5-मीरा भार्गव सुदर्शना

19.08.2026
1-साधना छिरोल्या
2-सतीश कुमार
3-संजय कानूनगो
4-तृप्ता श्रीवास्तव
5-डॉ. अनिल श्रीवास्तव

20.08.2026
1-महेश शर्मा
2-नवीन माथुर पंचोली
3-श्रद्धा पाठक
4-विभा नविशा सोनी
5-जाह्नवी मालेवार

21.08.2026
1-ध्रुव गुप्त
2-ममता खरे
3-सिद्धि बृज
4-डॉ. भावना शेखर
5-योगिता चौरसिया

22.08.2026
1-श्वेता सोनेकर
2-छोटेलाल सारस्वत
3-विनय कुमार श्रीवास्तव
4-रश्मि अभय

23.08.2026
1-पद्मा मिश्रा

24.08.2026
1-नीरज पाराशर
2-वीरेंद्र दसौंधी
3-संजय वर्मा
4-मालिनी त्रिवेदी पाठक
5-रामेश्वर शर्मा

25.08.2026
1-अमितारवि दुबे
2-श्रीमती सीमा पाण्डेय
3-डॉ. मंजरी अरविंद
4-साधना छिरोल्या
5-नंदिनी लहेजा

26.08.2026
1-डॉ. निरुपमा वर्मा
2-माधवी उपाध्याय
3-संजय वर्मा

27.08.2026
1-डॉ. सुशीला पाल
2-उद्देश्य तिवारी
3-मोहन जोशी

28.08.2026
1-डॉ. प्रीति समकित सुराना
2-साधना छिरोल्या
3-शिवशंकर दुबे

29.08.2026
1-महेन्द्र तिवारी
2-पद्मा मिश्रा
3-दिनकर राव दिनकर

30.08.2026
1-पुष्पा अरविंद शर्मा

31.08.2026
1-अदिति रूसिया
2-किरण मोर
3-साधना छिरोल्या

वेबसाइट: www.antrashabdshakti.com
ई–मेल: antrashabdshakti@gmail.com
मोबाइल/व्हाट्सऐप: 9424765259 / 9009465259

डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक-संपादक,
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

सृजक-सृजन समीक्षा
रविवारिय केंद्रीय रचनाकार विशेषांक

आज अन्तरा शब्दशक्ति के पटल पर आ. पूनम कतरियार, हजारीबाग (jharkhand) का परिचय एवं उनकी पाँच रचनाएँ पाठकों की समीक्षा एवं विचारार्थ प्रस्तुत हैं।

प्रेरक होने के साथ सरल, सहज और भावप्रधान भाषा में लिखी गई इन रचनाओं में सम्भावनाएं , संस्कार, बदलते सामाजिक मूल्य, तकनीक का प्रभाव, रिश्तों की गरमाहट, प्रकृति, जीवन-दर्शन तथा सकारात्मक सोच का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

आप सभी सुधी पाठकों एवं साहित्यकारों से विनम्र अनुरोध है कि रचनाओं का गंभीरतापूर्वक अध्ययन कर अपनी निष्पक्ष, सारगर्भित एवं रचनात्मक समीक्षा अवश्यप्रदान करें। आपके सुझाव और मार्गदर्शन किसी भी रचनाकार के सृजन-पथ को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करते हैं।

प्रस्तुतकर्ता डॉ. प्रीति समकित सुराना संस्थापक एवं संपादक **अन्तरा शब्दशक्ति**

कविताएँ

1.संभावनाएं

पूरी शिद्दत से
पैनी निगाहें मेरी
भेदती हैं
अमावस की रात को।
सूक्ष्म निरीक्षण करती हैं
कि,गर्भ में उसके
कोई चिन्ह तो शेष होगा
पूनम के आने का?
हां, बहुत पीड़ा है,
बेचैनी है,कातरता है।
रात निढाल हैं,
अपनी ही व्यवस्था से।
परंतु, सुखद लगता है मुझे
कि, रात बांझ नहीं है।
गर्भ में उसके
रोशनी के बीज स्वस्थ हैं
और समय पर
सूरज जरूर आयेगा।
हमारे चारों तरफ,
वृक्षों,विटप-वल्लरियों,
इंसान के शक्ल के आताताियों में,
सुषुप्त ही सही, संभावनाएं हैं।
उन्हें मारने की जितनी कोशिश की हमने
वे उतने ही सत्तर्क होकर,
अणु-परमाणु बन, सुरक्षित हो गये हैं।
मेरे भटकाव की परिणति,
आनंदित हो सबको बताना चाहती हैं
कि,संभावनाएं खत्म नहीं हुई है।

2.बाढ़

बिजलियाँ हैं कड़कड़ाती
मतवाले बादल कहर बरपाते
दिन में छाया अँधेरा,
काली रात भी भयानक!
फसल सहमे खड़े हैं,
खेत आँसूओं से भरे हैं
गंगा का है रौद्र रुप अब,
सोन भी उफान पर अब
ताल-तलैया नद बने हैं
खाने के लाले पड़े हैं
पेट काट डाला था जिनको
छप्पर भी सब ढह रहे हैं
भरभरा घर गिर रहे हैं!
हाय टूटें स्वपन कितनें!!
पाला था तन-मन से जिनको,
मवेशियाँ सब बह गये हैं!
अबकी कर्जा न सध पायेगा,
मुनिया का गौना टल जायेगा,
फटी कथरी बच गई तो,
अम्माँ का जाड़ा कट जायेगा
पलकों ने थामे हैं आँसू,
गर, जो मिल गये धार में वे
कोई कहाँ ठहर पायेगा?
गाँव हमारा बह जायेगा!

3.बाल कविता

बगीचा घूमने बंदर आयें!
टोपी पहनकर बंदर आया
चूनरी ओढ़ बंदरिया आई!
बाग में अमरुद का पेड़ था
उसमें बस एक अमरुद था!
दोनों को था अमरुद खाना,
उनके बीच हो गई लड़ाई!
बंदरिया पर खिसियाया बंदर
बंदरिया ने उसे नख चुभोंयी
अमरुद ले बंदरिया भागी
सोचा, डर से भागा बंदर!
बंदर को खरोंच लगी थी,
दर्द से बिलबिला रहा था!
उसने लंबी छलाँग लगाई
बाजु वाले छत्त पर पहुँचा!
फिर, सीढ़ी से चुपके उतरा
टोपी बंदरिया के सिर रखा
बंदरिया कुछ समझती जबतक
अमरुद छीनकर भाग गया बंदर!

लघुकथाएँ

4.मोक्ष

छुपते- छुपाते साँझ के धुँधलके में वह जंगल के पासवाले विश्राम-गृह में प्रवेश की। श्याम-कमनीय गात, खंजन- नैन और चेहरे के भोलेपन ने साहब पर जादू कर दिया। उसे देखते ही उनके मन में कुछ होने लगा। वह उठकर बड़े प्यार से उसे अपने करीब बिठा निहारने लगे। इधर सेमली कमरे की भव्यता देख अंदाज लगाने लगी कि साहेब पैसेवाला है! तभी साहब ने उसके लट सहलाते प्रेमपूर्वक पूछा,
" कितने समय से यह धंधा कर रही हो?"
" जी, वो...वो आज पहली बार...दू हजार रुपया का बहुत जरूरत था तो..." उसने हकलाते हुए जवाब दिया।
"मतलब...?"साहब की आवाज में आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता थी।
" मेरा मरद शादी करके बाहर कमाने गया, फिर कभी लौटा नहीं।"
"कितने साल हो गये?" " दस- ग्यारह बरस का बेटा है, बाप- बेटे ने कभी एक- दूसरे को देखा ही नहीं ..." थरथराकर सेमली ने कहा।
आगे वह कह रही थी,
" पितरपख है न! पंडी जी बोले है कि इतने बरस नहीं आने से आदमी को मरा मान,उसका तर्पण करना होता है, तभी उसकी मुक्ति होगी।" वह सिसक पड़ी।अचानक साहब को दरबान की बात याद आई...साहब, सेमली के पति की अकाल मृत्यु हुई थी, बिना तर्पण के तो भटकता ही होगा न!" उसकी नजर अपनी परछाई पर गई और वह डर गया, पसीने मस्तक पर चहचहाने लगें।
साहब का नशा हिरन हो गया,उन्होंने सेमली के हाथ दो हजार रुपये देकर कहा," जा,बेटे के पास जा, वह घर में अकेला डर रहा होगा।"
" लेकिन साहब..."चकित सेमली आश्चर्यसे बोली,"साहब, आप बहुत अच्छे हैं!!"वह अँधेरे में तेजी से बाहर की ओर भागी। सकथ ही बूदबूदा रही थी, "आपका ऋण चुकाये बिना मेरी मुक्ति नहीं होगी साहेब..."

5.खुखुरी

रेशमा ने आईने में खुद को निहारा, दुपट्टे को सीने से हटाकर पीछे की ओर खींचकर बाँह के अंदर से लाकर कमर पर खोंसा और तेज परफ्यूम की शीशी से स्प्रे कर पूरे शरीर को तेज महक से सराबोर कर, एक फड़कता हुआ भोजपुरी गाना गुनगुनाने लगी,
"छलकत हमरो जवनियाँ ऐं राजा ...
तभी उसका प्रोग्राम-ऑर्गनाइजर 'गुड्डम मास्टर' आ गया।" वाह रेशम रानी,अब तू भोजपुरी पब्लिक का नब्ज परफेक्टली पकड़ ली है। थोड़ा इ ब्लाउज के जगह उ 'बार'में डांस करते समय वाला 'चोलिया' पहन ले तो कसम से पब्लिक पूरा स्टेज नोट से भर देगा।"
रेशमा के रेशमी बदन पर अपनी हवस-दृष्टि गड़ाए,गुड्डम उसपर चील की तरह लपका। तभी रेशमा ने अपने ब्लाउज में छिपाये खुखुरी को फुर्ती से निकाल,गुड्डम के गले से सटाकर धमकाया,
"मास्टर,अनपढ़ विधवा हूँ। बच्चों को पालने की खातिर मजबूरीवश हुनर बेचकर घर चला रही हूँ, कोई धंधा नहीं कर रही।"
गुड्डम की घिग्घी बँध गई। वह घबराकर बोला, "अरे,मैं तो मजाक कर रहा था। तू तो बुरा मान गई। चल जल्दी आ स्टेज पर,पब्लिक हंगामा कर रही है।" और तेजी से कमरे से बाहर की और भागा।
" वो तो मैं भी मजाक ही कर रही थी मास्टर,तुम तो नाहक ही डर गये!चल, आती हूँ।"
खुखरी वापस ब्लाउज में रखती हुई रेशमा के चेहरे पर विजयी मुस्कान थी।

पूनम कतरियार,
हजारीबाग (jharkhand)

रचनाकार का परिचय

नाम : पूनम कतरियार
पति : कीर्तिशेष प्रवीण कुमार
माता- पिता : स्मृति शेष कल्याणी कतरियार एवं तारकेश्वर नाथ कतरियार
जन्म : 8 अगस्त,हजारीबाग (झारखंड)
शिक्षा : एम.ए (विनोबा भावे विश्विद्यालय,हजारीबाग(झारखंड), यूजीसी उत्तीर्ण , निधि वितरक परीक्षा उत्तीर्ण
निवास : बोरिंग कैनाल रोड,पटना-1
संप्रति : निजी व्यवसाय: निवेश- सलाहकार तथा लेखन में सक्रिय।

लेखन :

- ✓ कहानी,कविता,लघुकथा एवं समीक्षा-लेखन,राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक संस्थाओं द्वारा कहानी, समीक्षा, कविता, लघुकथा पुरस्कृत।
- ✓ कई साझा कविता संकलन, कहानी संकलन, समीक्षा पुस्तकें, लघुकथा संकलन एवं तीन- चार एकल काव्य संकलन प्रकाशित।
- ✓ ' शिवानी जन्मशती समारोह'पर वर्ष भर उनकी रचनाओं पर ऑनलाइन कार्यक्रम।
- ✓ सुप्रसिद्ध वेब साहित्यिक पत्रिका, लघुकथा. कॉम समेत 'संरचना','लघुकथा कलश' जैसी सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं में लघुकथा तथा लघुकथा- विधा पर मेरी समीक्षा प्रकाशित।
- ✓ नेपाली भाषा में लघुकथा का अनुवाद ।
- ✓ भारत-नेपाल अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्योत्सव में कविता- पाठ एवं सम्मान।
- ✓ नेपाली भाषा में लघुकथा का अनुवाद ।

अनुवाद:

- ✓ 'सबरंग' (अनिल शूर 'आजाद') की हिन्दी लघुकथाओं का मगही- भाषा में अनुवाद।
- ✓ डीडी, बिहार' (दूरदर्शन) के साहित्यिक कार्यक्रम में लघुकथा-पाठ।
- ✓ मेरी लघुकथा 'कच्चे धागे' पर लघु-फिल्म ।

निर्देशक : अनिल पतंग

- ✓ प्रसिद्ध लघुकथाकार श्री रजनीश दीक्षित और आदरणीय उमेश महादोषी द्वारा मेरी लघुकथाओं का वाचन।
- ✓ स्थानीय चैनल पर लाइव काव्य-पाठ, पटना के प्रसिद्ध पुस्तक मेला के कार्यक्रमों में नियमित रुप से कविता- पाठ एवं लघुकथा पाठ।

सम्मान:

- ✓ अखिल भारतीय प्रगतिशील लघुकथा मंच के राष्ट्रीय अधिवेशन में विशिष्ट वक्ता के तौर पर आमंत्रित ।
- ✓ मंत्रिमंडल सचिवालय राजभाषा विभाग, बिहार सरकार के कवि सम्मेलन में आमंत्रित।
- ✓ 'साहित्य सेवी सम्मान': 2025-- बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन ।
- ✓ 'डॉ. दीनानाथ शरण सम्मान': 2024- चित्रगुप्त सामाजिक संस्थान, बिहार।
- ✓ 'वैदेही-सम्मान': 2023-मिथिला सांस्कृतिक मंच।
- ✓ अंतरा शब्दशक्ति गौरव सम्मान वूमन आवाज सम्मान 2018,(भोपाल में)।
- ✓ मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019
  शब्द कोविद सम्मान (नागपुर) और अन्य कई सम्मान ।

प्रशस्ति-पत्र :

विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं तथा सोशल मीडिया के साहित्यिक आयोजनों में समय-समय पर अनेक प्रशस्ति-पत्र एवं सम्मान।

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

मछलियों की आवाज़

चेन्नई के समुद्री तट पर काफी भीड़ थी। सभी लोग चाहते थे कि हमें भी मछलियां मिले,हमें भी मछलियां मिले...! मछुआरे की जाल में तड़प तड़पकर मछलियां पुकार रही थी। हमें बचाओ, हमें बचाओ...! मछुआरा हमें मारे जा रहे हैं; परंतु शून्य आकाश में तीर चलाने के समान उनकी आवाज़ गूंज रही थी। टहलते हुए एक संत वहां पर पहुंचे गये, जो मछलियों की भाषा जानता था। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा, "तुम लोग मछलियों की चीख ध्यान से सुनो, वह कुछ बोल रही है।"

लोग व्यंग्य से हंसते हुए कहा,"हा हा हा....! आप ही बता दें, मछलियां क्या बोल रही है?"

"मछलियां बोल रही है, लोगों ने हमें फसाने के लिए जाल (नेट) बनायें हैं। समुद्र में जाल डाल देते हैं और हम सब फस जाते हैं। हम सब मछलियां भी वैज्ञानिकों से गुहार लगाये है । वैज्ञानिकों ने अब हमारी बातें सुन ली है। हमारे कहने पर ही मोबाइल में नेट डाल दिया गया है। ताकि आदमी एक बार नेट खोलें और उनके अंदर और क्या है और क्या है...? देखते-देखते अंदर नेट (जाल) में फसते-फसते चला जाय। उसकी थाह लगाना, उनसे निकल पाना मुश्किल हो जाय। हमें तो केवल एक बार ही फसाते हैं। आदमी तो रोज फस रहा है अपना जीवन बर्बाद खुद कर रहा है।

नोट- मोबाइल सदुपयोग करने पर काम की चीज है। लेकिन दुरुपयोग करने पर समय, बुद्धि एवं शक्ति बर्बाद करना है।

दिनेंद्र दास
कबीर आश्रम दुपचेरा (गुरुर)
जिला-बालोद, छत्तीसगढ़

आदर्श शिक्षक

श्री टेकचंद रोहणी जी को समर्पित

ज्ञान का दीप जलाने वाले,
हर मन में विश्वास जगाने वाले।
सादा जीवन, ऊँचे विचार,
ऐसे हैं गुरु, हमारे आधार।

छह जुलाई की वह शुभ बेला,
कर्तव्य-पथ का हुआ था मेला।
मझगवां की पावन धरती पर,
शिक्षा का दीप जला निडर।

साइकिल से प्रतिदिन चल पड़ते,
धूप, वर्षा, आँधी सब सहते।
कठिन राह भी हार न मानी,
सेवा ही थी उनकी कहानी।

गणित को सरल बना देते,
हर प्रश्न का हल सिखला देते।
तर्क, अनुशासन, आत्मविश्वास,
भर देते हर छात्र के पास।

डाँट में भी ममता की धारा,
हर विद्यार्थी था आँख का तारा।
भविष्य सँवारने का था सपना,
शिक्षक धर्म निभाया अपना।

गीत, सभा और खेल के संग,
भर देते विद्यालय में रंग।
हर प्रतिभा को मंच दिलाया,
जीवन का सच्चा अर्थ बताया।
आम के पौधे जो रोपे थे,
आज विशाल वृक्ष वे हो गए।
फल-फूलों से देते संदेश,
सेवा का रहता अमिट परिवेश।

विद्यालय से नाता ऐसा,
जैसे गंगा का निर्मल धारा।
हर नववर्ष मिठास लुटाते,
टॉफी देकर प्रेम जताते।

निर्धन बच्चों के सच्चे साथी,
ज्ञान-दान ही सबसे बड़ी थाती।
सेवा, करुणा, त्याग महान,
यही रहा उनका सम्मान।

हे गुरुश्रेष्ठ! आपको प्रणाम,
आपसे ही रोशन हर धाम।
पीढ़ियाँ सदा गाएँगी गान—
"श्रेष्ठ शिक्षक, श्रेष्ठ इंसान।"

आपका जीवन अमर प्रकाश,
सद्गुणों का अनुपम इतिहास।
जब तक शिक्षा का होगा मान,
गूँजेगा आपका पावन नाम।

डॉ नवीन कुमार भट्ट नीर
जिला उमरिया मध्यप्रदेश

कविता

कागज़ पर आसमां
में हरा रंग भरते
बच्चे को सिखाया गया
कि आसमां
कभी हरा नहीं होता..

परिकथा पढ़ती
लड़की को
बताया गया कि
परी कथाएं सच नहीं होती..

पर मुझे हमेशा पता था
कि कविताओं में
सब कुछ संभव है,

कविता में पहाड़
नदी का हाथ पकड़
रोक सकते हैं
उसे बह जाने से,

बुरांश साल भर
खिल सकते हैं
और कोई रोज़
मुट्ठी भर दे सकता है
उन्हें अपने प्रिय को,

और
रख कर अपने गाल
पर हाथ और
आंखों में कौतूहल लिए,
बड़े ध्यान से मेरी हर
कविता सुनते हो तुम
मेरी कविताओं में..

हाँ, कविताओं में
सब कुछ सम्भव है..

स्वर्णा शरद राव

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
मंगलवार, 4 अगस्त 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

चातुर्मास, आत्मिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का स्वर्णिम अवसर

चातुर्मास केवल चार महीनों की अवधि नहीं, बल्कि आत्म-जागरण, आत्म-शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का अनुपम अवसर है। यह स्वयं भी एक महापर्व है और अनेक पावन पर्वों का समवाय भी। भारतीय संस्कृति और जैन दर्शन में इन चार महीनों का अत्यंत विशेष महत्व है, क्योंकि यही वह समय है जब मनुष्य बाहरी संसार से कुछ विराम लेकर अपने अंतर्मन की यात्रा करता है।

चातुर्मास का प्रारंभ **आषाढ़ पूर्णिमा** से माना जाता है। यह **महर्षि वेदव्यास** सहित अनेक महान ऋषियों की जन्मतिथि है तथा इसी दिन **गुरु पूर्णिमा** का पावन पर्व भी मनाया जाता है। वैष्णव परंपरा के अनुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी (देवशयनी एकादशी) से **भगवान विष्णु** योगनिद्रा में प्रवेश करते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी (देवोत्थान एकादशी) पर जागृत होते हैं। इसी कारण इन चार महीनों में विवाह एवं अन्य मांगलिक कार्य सामान्यतः नहीं किए जाते। इसका गूढ़ संदेश यह है कि यह समय बाहरी उत्सवों का नहीं, बल्कि आत्मोत्सव का है।

जैन परंपरा में भी चातुर्मास का महत्व अत्यंत विशिष्ट है। पर्युषण महापर्व, संवत्सरी तथा क्षमायाचना जैसे महान पर्व इन्हीं चार महीनों में आते हैं। यदि जीवन में ये चार महीने ही न हों, तो आत्मा अपने दोषों का परिमार्जन कैसे करेगी? आत्मा को ऊँचाइयों के शिखर तक पहुँचाने के लिए चातुर्मास एक आध्यात्मिक प्रशिक्षण काल है।

वर्ष भर हम भौतिक सुख-सुविधाओं, व्यवसाय, परिवार और सांसारिक व्यस्तताओं में उलझे रहते हैं, किंतु चातुर्मास हमें स्वयं के भीतर झाँकने का अवसर देता है। यह आत्मा को माँजने, तपाने और सोने से कुंदन बनाने का समय है। यदि बारह महीनों में से ये चार महीने निकाल दिए जाएँ, तो जीवन का आध्यात्मिक पक्ष लगभग शून्य हो जाएगा। जैसे किसान वर्षा ऋतु में खेत में बीज बोता है और वही बीज आगे चलकर पूरे वर्ष के जीवन का आधार बनता है, उसी प्रकार चातुर्मास में किए गए तप, स्वाध्याय, संयम, ध्यान और सदाचार के संस्कार पूरे जीवन को प्रकाशित करते हैं। यह आत्मा की भूमि में धर्म के बीज बोने का श्रेष्ठ समय है। इन्हीं संस्कारों से जीवन में **शांति, संतोष, समता, करुणा और आत्मिक आनंद** का अमूल्य फल प्राप्त होता है।

वर्षा ऋतु में असंख्य सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति होती है। ऐसे समय में विहार करने से अनजाने में भी जीव हिंसा हो सकती है। इसलिए अहिंसा के परम उपासक जैन साधु-साध्वियाँ अपने शिष्यों सहित एक ही स्थान पर वर्षायोग की स्थापना कर चातुर्मास व्यतीत करते हैं। आषाढ़ पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक चलने वाला यह वर्षावास केवल उनकी साधना का समय नहीं, बल्कि समाज को धर्म, संयम और सदाचार की प्रेरणा देने का भी अवसर है।

केवल जैन धर्म ही नहीं, भारत की अनेक आध्यात्मिक परंपराओं में भी वर्षावास का विशेष महत्व है। संत-महात्मा इन महीनों में एक स्थान पर रहकर साधना, उपासना, जीवदया, सेवा, करुणा, व्रत, उपवास और लोककल्याण के कार्य करते हैं तथा समाज को धर्ममय जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

साधु का स्वभाव तो सदैव प्रवाहित नदी की निर्मल धारा के समान होता है—चलते रहना, बहते रहना। किंतु जन-जन में धर्मभाव जागृत हो, आत्मा का कल्याण हो और समाज सन्मार्ग पर अग्रसर हो, इसलिए वे चार महीने एक स्थान पर विराजते हैं। उनका सान्निध्य, प्रवचन और मार्गदर्शन ही समाज की आध्यात्मिक शक्ति है।

चातुर्मास गृहस्थों के लिए भी एक संदेश है कि जहाँ तक संभव हो अनावश्यक यात्राओं से बचें, एक स्थान पर रहकर अधिकाधिक स्वाध्याय, साधना, धर्माराधना, ध्यान और आत्मचिंतन में समय लगाएँ तथा जीवदया का विशेष ध्यान रखें। यह समय बाहरी व्यस्तताओं से विराम लेकर अंतर्मन की यात्रा करने और जीवन में संयम को उतारने का श्रेष्ठ अवसर है।

जैन परंपरा में **भगवान श्रीकृष्ण** द्वारा **भगवान नेमिनाथ** के समक्ष यह संकल्प लेने का उल्लेख मिलता है कि वे चातुर्मास के चार महीने द्वारका में रहकर धर्मध्यान करेंगे। इसी प्रकार गुजरात के महान धर्मनिष्ठ राजा कुमारपाल ने अपने गुरु आचार्य **श्री हेमचंद्राचार्य** के समक्ष प्रतिज्ञा की थी कि चाहे युद्ध जैसी विकट परिस्थिति ही क्यों न आ जाए, वे चातुर्मास में पाटण नहीं छोड़ेंगे। उनके राज्य में जीवदया की ऐसी भावना थी कि पशुओं तक को छाना हुआ जल पिलाया जाता था। यह केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि प्रत्येक प्राणी के प्रति करुणा, अहिंसा और संवेदनशील जीवन-दृष्टि का जीवंत उदाहरण था।

जैन आगमों में चातुर्मास के दौरान श्रावक-श्राविकाओं के लिए नौ प्रकार के शुद्ध आचरण बताए गए हैं—

- ✓ सामायिक एवं प्रतिक्रमण
- ✓ आवश्यक क्रियाएँ
- ✓ पौषध
- ✓ देवपूजन
- ✓ स्नात्र पूजा
- ✓ ब्रह्मचर्य पालन
- ✓ धर्मक्रिया
- ✓ दान
- ✓ तप

ये नौ शुद्ध आचरण चातुर्मास के वास्तविक आभूषण हैं। इनका पालन आत्मा को निर्मल बनाता है और जीवन को आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर ले जाता है।

चातुर्मास हमें यह भी स्मरण कराता है कि धर्म केवल मंदिर, उपाश्रय या पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के प्रत्येक व्यवहार में उतरना चाहिए। जब संयम, करुणा, क्षमा, अहिंसा और सदाचार हमारे आचरण का अंग बन जाते हैं, तभी चातुर्मास की वास्तविक साधना सार्थक होती है।

चातुर्मास क्यों?

1. *आत्मा से परमात्मा की ओर बढ़ने के लिए।*
2. *अहं से अर्ह की ओर अग्रसर होने के लिए।*
3. *आसक्ति से अनासक्ति की यात्रा के लिए।*
4. *हिंसा से अहिंसा की ओर बढ़ने के लिए।*
5. *उपासना, स्वाध्याय, आराधना, तप, जप और ध्यान के लिए।*
6. *सम्यग्दर्शन एवं धर्म-जागरण के लिए।*
7. *संतों के सान्निध्य से जीवन को दिशा देने के लिए।*
8. *आत्मशुद्धि एवं आत्मोत्थान के लिए।*
9. *प्रत्येक क्षण का सदुपयोग कर प्रमादरहित जीवन जीने के लिए।*
10. *संयम, करुणा, क्षमा और जीवदया को जीवन में उतारने के लिए।*

वास्तव में चातुर्मास केवल चार महीने नहीं, बल्कि आत्मा का वसंत है। यही वह काल है जिसमें मनुष्य अपने भीतर छिपे दिव्य स्वरूप को पहचान सकता है। आइए, इस चातुर्मास में पूज्य आचार्य भगवंतों एवं साधु-साध्वियों के सान्निध्य का अधिकाधिक लाभ लें, संयम, सेवा, स्वाध्याय, तप, ध्यान और धर्ममय जीवन का संकल्प लें तथा आत्मा को परमात्मा बनने की दिशा में एक सार्थक कदम बढ़ाएँ।

डॉ. मंजू मंगलप्रभात लोढ़ा, वरिष्ठ साहित्यकार

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

कविता

ज़िंदगी तू ने लहू ले के दिया कुछ भी नहीं
तेरे दामन में मिरे वास्ते क्या कुछ भी नहीं

आप इन हाथों की चाहें तो तलाशी ले लें
मेरे हाथों में लकीरों के सिवा कुछ भी नहीं

हम ने देखा है कई ऐसे ख़ुदाओं को यहाँ
सामने जिन के वो सच-मुच का ख़ुदा कुछ भी नहीं

या ख़ुदा अब के ये किस रंग में आई है बहार
ज़र्द ही ज़र्द है पेड़ों पे हरा कुछ भी नहीं

दिल भी इक ज़िद पे अड़ा है किसी बच्चे की तरह
या तो सब कुछ ही इसे चाहिए या कुछ भी नहीं

राजेश रेड्डी

ख़ामोशी

लफ़्ज़ों के मायने हैं बहुत, ख़ामोशी में बोलिए
असर होता है बहुत, यूँ ही न टटोलिए

जुबां ख़ामोश हो तो, आंखें बात करती हैं
यूँ ही हैरां न हों मगर, समय से ही बोलिए

उसकी बातों में असर, यूं भी बहुत गहरा है
बेज़ुबां लगता है, शब्दों को तौलिए

बात आसां है मगर, यूं ही नहीं समझोगे
उसने इशारे किए, अब यूं मत बोलिए

बात बिगड़ी भी वहीं, वो तो चुपचाप रहा
बोलने वाले हैं बहुत, समझें तो बोलिए

'नायक' बेबस है ज़ुबां, आंखों में अश्क लिए
भीगे हुए लफ़्ज़ों को और न टटोलिए!

अरविंद नायक

कविता

झूठी है सब साज सजावट,
झूठे सब शृंगार !
सावन ! मत आना इस द्वार।

यहाँ मिलन के गीत नहीं हैं, यहां न प्रेम कहानी,
यहाँ न रति के रंगमहल हैं, यहां न राजा रानी ,
अंगुलियों से आशाओं के धागे कब से छूटे,
बादल, बरखा, झूले ,कजरी सब हैं हमसे रूठे,

एकाकीपन सीख चुका मन,
नहीं माँगता प्यार।
सावन ! मत आना इस द्वार।

बरखा! तुम मत छेड़ो हमको,अपनी पीर पुरानी,
तन भीगेगा बाहर बाहर, मन है रेगिस्तानी,
कोना कोना स्याह हुआ मन, कैसे दीप जलाऊँ?
स्वर ही सारे रूठ गए हैं, कैसे गीत सुनाऊँ?

हरी चूड़ियाँ पहन पहन कर,
देख चुकी सौ बार।
सावन ! मत आना इस द्वार।

श्वेत श्याम है भाग्य हमारा, तेरे उत्सव धानी,
रंगमंच सी ऋतुएँ बदलीं, बदली नहीं कहानी,
तुम उत्सव हो,यहां उदासी, क्या सम्बन्ध हमारा?
अर्थहीन हैं रंग तुम्हारे, आना व्यर्थ तुम्हारा,

इन आँखों की मौन व्यथा से
जाओगे तुम हार।
सावन ! मत आना इस द्वार।

स्वरिका कीर्ति

क्षितिज पार की भट्टी

सड़कें सो जाने के बाद ही वह अनाम भट्टी (शराबखाना) जागती थी। दीवार पर लटकी मद्धम लाल रोशनी लोगों के चेहरे नहीं, बल्कि उनके धुंधले साये ही ज़मीन पर बिखेरती थी। हवा में शराब की तीखी गंध के साथ किसी अज्ञात इत्र और पुरानी लकड़ी की रहस्यमयी महक घुली हुई थी।

उसी धुंधले कोने में बैठी प्याकुली के गिलास में छलकता तरल पदार्थ लाल नहीं, काला दिखाई दे रहा था।

हंसराज उसके सामने बैठ गया। प्याकुली की गहरी आँखों में एक आदिम तृष्णा और गंभीर शून्यता एक साथ तैर रही थी। उनके बीच कोई शारीरिक स्पर्श नहीं हुआ, लेकिन उन दोनों सायों के बीच की खामोशी ही इतनी गर्म हो गई कि भट्टी की ठंडी हवा अचानक घुटन भरी बन गई।

"यहाँ आने वाले लोग शराब से बहकने नहीं आते हंसराज," प्याकुली की आवाज़ में एक सम्मोहन था, "वे तो अपनी अतृप्त प्यास और पाप धोने आते हैं।"

हंसराज प्याकुली के चेहरे को देखता रहा। वहाँ कामवासना और दर्शन का एक ऐसा अनोखा संगम था, जहाँ शब्द खो जाते थे और केवल अगाध आकर्षण बाकी रह जाता था। बिना किसी स्पर्श के ही दोनों की आत्माएँ किसी अलौकिक चरम सीमा पर पहुँचकर विलीन होती महसूस हो रही थीं।

"मुझे लगता है, मैं इस भट्टी और तुम्हारी इस मादक उपस्थिति से कभी उबर नहीं पाऊँगा," हंसराज ने मंत्रमुग्ध होते हुए कहा।

प्याकुली ने काँच का गिलास धीरे से टेबल पर रख दिया। उसके होंठों पर एक ठंडी और रहस्यमयी मुस्कान फैल गई।

"उबर भी कैसे सकते हो हंसराज?" प्याकुलि ने धीरे से कहा, "यह भट्टी जीवित लोगों के लिए बनी ही नहीं है। तुम तो तीन दिन पहले ही मर चुके थे, आज तो बस अपनी बची हुई अतृप्त वासना बुझाने यहाँ पहुँचे हो।"

योगी नारायण नाथ
इटहरी १, सुनसरी (नेपाल)

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

नकली दुनिया

इन दिनों निष्पक्ष खबरें छपतीं नहीं
बल्कि बेची जातीं हैं

निष्पक्ष न्याय भी कहाँ होता है
बल्कि केसेस डिस्पोजल किये जाते हैं

इस कठिन समय में
ईश्वर भी स्वयं को ठगा सा अनुभव करता है

धर्म राजनीति का उपकरण बन
कर रहा है गुमराह

संकट में पड़ी सभ्यता भय से पीली पड़ गई है

अपना मूल स्वरूप राख की ढेरी में दबाकर
न जाने लोग कैसे इतने प्रसन्न दिखते हैं

इस नकली दुनिया में
ये पीड़ा क्या असली है?

शुभा मिश्रा

जीवन एक युद्ध

युद्ध कर युद्ध कर युद्ध धरा तुझे पुकारती ,
युद्ध ही तो है जीवन का सारथी।
जैसे ढल कर बढ़ता सूरज
युद्ध का डंका बजाता है ,
अंधकार को समेट कर
अरूणोदय-आभा छलकाता है।
जैसे पतझड़ में बिखरा पेड़,
नयी कोंपलें सजाता है,
युद्ध कर मौसम से वो,
हरियाली की छाँव छलकाता है।
घटता-बढ़ता चंद्र गगन में ,
अगणित रूप रचाता है ,
युद्ध कर अमावस में वो ,
पूर्णिमा को मुस्काता है।
जैसे जीवन की बढ़ती नदियाँ,
लहरों से टकराती हैं
युद्ध कर तूफानों से वो,
सागर में मिल जाती हैं।
न झुक, न रुक तू चल ऐ प्रार्थी,
संघर्ष भरे जीवन में है युद्ध ही सारथी।

रीतु जाजू

साजन मेरे अब आ जाओ

साजन मेरे अब आ जाओ, सूने नैना।
पलक बिछा डेहरी निहारें, बीती रैना।।
रिमझिम सावन देखो आया, छीने चैना।
अगन लगाए तपन बढ़ाये, भीगे डैना।।

उड़ना है अंबर को छूने, साथी आओ।
साथ चलेंगे पंख पसारे, गाना गाओ।।
सूरज से मिलकर आना है, देना बैना।
देखो नभ में चमक रहा है, कैसा पैना।।

ताप बहुत है सूरज देखो, झुलसे जाएँ।
आखिर क्या उसके सम्मुख, जाकर पाएँ।।
दूर गगन नापें हम धरती, मान सुनैना।
जब जब कारे मेघा बरसे, बोले मैना।।

डॉ अनुराधा प्रियदर्शिनी
मथुरा, उत्तर प्रदेश

दर्पण

1

ख़्वाहिशों से
ख़्वाबों तक,

ख़्वाबों से
वास्तविकता तक,

बस
तस्वीरों की पुतलियाँ
चमकती रहीं,
छमकती रहीं।
कभी
मेरी नज़रों में झाँकना।
वहाँ
एक दर्पण है,
जिसके फ्रेम में
तुम
ताउम्र
जड़ी हुई हो।

2

आइना
आज भी कह देता है

पलकों में
इतना पानी बचाए रखना
कि मासूमियत
सूखने न पाए।

3

जब से
आँखों में
सहेज ली है
तुम्हारी तस्वीर,

दर्पण भी
पूछने लगा है
गुलाबी सवाल।

मुकेश कुमार सिन्हा

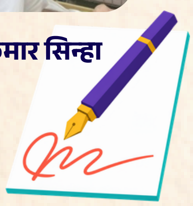

मेरी धनक..!

खिले हुए टह टह पीले
अमलताश की आभा में
जैसे एक शान्तिमयी ऊर्जा
समाहित होती है
सम्मोहित करती हुई सी....
उसी ऊर्जा का सम्मोहन हो तुम।
दमकते हुए गुलमोहर में अंतर्निहित
उसकी संचेतना हो तुम...!
वसंत की भूमिका हो,
और....
मेरे जीवन की व्याख्या की
विशेष टिप्पणी हो तुम...!!

--निशा श्रीवास्तव,
नोयडा

रुह

जब ज़िस्म साथ छोड़े
पूछो न हाल क्या होता
पल में सब छूटे सांसो से
रुह खुद से बेनाम होती हैं...

अपनों के लिए सिर्फ तड़प
आँखों में ज़िन्दगी दिखती
पल में सब छूटे सांसो से
रुह अपनों से अंजान होती है...

वक़्त बेवक़्त कभी आना
किस्मत का आग़ाज़ होता
पल में सब छूटे सांसो से
रुह एक वक़्त पे जुदा होती है...

न कोई फ़रियाद दूरतलक़
सन्नाटे का मंज़र मिलता
पल में सब छूटे सांसो से
रुह पे किसकी नज़र होती है...

आँखों में अश्को का समंदर
दिल मौन से बेहाल होता
पल में सब छूटे सांसो से
रुह दर्द से बेख़बर होती है...

छोड़ के जाने वाले बेगाने
कब तक कोई याद करता
पल में सब छूटे सांसो से
रुह आहत से निज़ात होती है...

नंदिता तू भी एक ज़िस्म
ज़िस्म ही तो ख़ाक होता
पल में सब छूटे सांसो से
रुह आखिर बेज़ान होती है...!!

#मेरी_रूह@
#नंदिता @
लखनऊ

एक प्याली चाय

यादों की गलियारों से गुजरते हुए
कोरिडोर में आते ही अनमने से बैठी
एक प्याली चाय हाथों में लिए,,
गुमशुम- सी खोई-खोई मैं।
अस्ताचल को जाती रश्मी
सहमी सी मांग रही थी विदाई,,
गोधूली के कैनवास पर,,,,,
उभर रही थी एक तस्वीर,
कुछ जानी-पहचानी सी।
बातें पुरानी बता रही थी।
भूली ही कब थी मैं ,,,
तुम्हारी सारी ही बातें,

हर रोज बताया करती इन पौधों को
अंकुर से किसलय ,कलि से फूल,,
तुम्हारे किस्सों से वाकिफ हैं सभी
फूलों की खुशबू कोरिडोर होते हुए,
दबे पांव कमरे तक आ जाती,,
हर शाम महका जाती है ।।
काश!! खुशबू तुम तक पहुंच पाती,,
आज शाम का है मौन निमंत्रण,,
एक प्याली चाय और हो रुहों का बंधन।।

Purnima Sah CHAND
Rampurhat
(W.B.)

ग़ज़ल

मतला....

बैठ कर दहलीज़ पर आराम से
राह तकती हूँ तुम्हारी शाम से

बच नहीं सकता कोई दामन यहाँ
दौर-ए-हाज़िर में किसी इल्ज़ाम से

रहगुज़र पर इश्क़ की रख कर क़दम
दिल कभी डरता नहीं अंजाम से

ये हक़ीक़त है बुरा क्या मानना
दोस्त तक मिलते महज़ अब काम से

इश्क़ दामन थाम कर महबूब का
पार लग जाता कठिन आयाम से

किस तरह बाहर निकल कर आये दिल
दर्द-ओ-ग़म के इक बड़े गोदाम से

ज़िंदगी उनके लिए ही है हसीं
दिल लगा बैठे हैं जो गुलफ़ाम से

🌼शालिनी🌼
🌼लखनऊ 🌼

धृष्ट नवप्रस्तारित छंद

यति 16, 12
पदांत – सगण
शीर्षक – तुम क्या जानो (गीत)

तुम क्या जानो मेरे मन में, कितने सपने पलते।
आँखो की पलकों पर मेरे, कितने राज पिघलते।।

दिवस चला अब साँझ मिलन को, सूरज भी अब ढलता।
प्रियतम मेरे नैन थके अब, कौन भला मन पढ़ता।।
आए हो अब साथ चलूँगी, पंथ निहारुँ जगते।
तुम क्या जानो मेरे मन में, कितने सपने पलते।।

हिय का मेरे हाल पूछ लो, ऐसे क्यों हो कहते।
अब तो मेरा मन तुम बूझो, नैना मेरे बहते।।
भोर सुहानी सी लगती है, संग पिया जब रहते
तुम क्या जानो मेरे मन में, कितने सपने पलते।।

मैं विरहन आशा में बैठी, मुझे साथ है चलना।
संग चलूँगी पास रहूँगी, मत मुझसे कुछ कहना।।
हँस -हँसकर देखा करते तुम, कनखी से तुम छलते।
तुम क्या जानो मेरे मन में, कितने सपने पलते।।

रंजना पाण्डेय 'मुक्ता'
मिर्जापुर उत्तर प्रदेश

अंतस

गहराता अंतस बाहिर सिमटता रहा
चन्द लफ़्ज़ों में वो बातें कहता रहा

भीतर ही भीतर चुपचाप डूबता रहा
हंसी पहनकर वो फिज़ा में तैरता रहा

इश्क़ की गुंजाइश वो तलाशता रहा
दरीचे से आते सायों को ताकता रहा

बीते लम्हों में वो डूबता उतराता रहा
मौजूदा मसाइलों से वो टकराता रहा

इंतजार में वो अपने दिन काटता रहा
रोज़ ज़िंदा होता और रोज़ मरता रहा

श्रीधर पांडेय कृष्णार्थ
मिर्जापुर , उत्तरप्रदेश

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

मन का सावन

आयो रे सखी !अति पावन, मनभावन, मन का सावन
रिमझिम रिमझिम फुहार पड़े, नन्ही- नन्ही बूंदे झर लावन।
पिय मोरे गए विदेश,चिर प्रतिक्षित, नायिका आस लगावन।
हरीतिमायुक्त, रंगीन ओढ़नी, प्रकृति नायिका खूब सुहावन।

हिलमिल सखियां कजरी गाएं,आओ पहने सब हरी चुनरियां।
हरी वाटिका ,हरे पल्लव, हर्षित मन, हरित पहने सब चूड़ियां।
घूमर घूमर कर बदरा बरसे,हित मोरा, उमंगित, लेत हिलुरिया।
मेरे मन का सावनबरसे, सजन मोरे कब आओगे, घर दुवरिया।

काली काली घटा घिर आई, रक्त वर्ण दामिनी, कर गई उजास।
अबहूं पिय मोरे घर नहीं आए, ताकत रैन, जिय मोर ह्वै उदास।
अंतस विरह, वियोगिनी, पिय बिनु तड़पत, ज्यो वारि बिनु मीन।
दिग्दिगंत,भयोअंधियारों, चिंतातुर,बाट निहारत,काया मोरी क्षीण।

सुंदर सा झूला, गौरा रानी ने हिमालय पर्वत पर डाला।
संगीत ध्वनि, कजरी ,गौरा की सखियां कजरी का गाना।
मस्त मलंगभोले, धतूरा भांग खाए ,शिवजीमन मतवाला।
गोरा भोले संग में, झूला झूले ,सखियां देती हैं हिचकोला।

पावन पर्व, मंगल मोक्ष, दायक ,विमल,ध्वनि अलंकृत।
अखिल, अलौकिक,मनमोहक, बाजत मधुर समलंकृत।
माता गौरीशंकर, श्रृंगारिक,परिवेश,रिमझिम अच्छादन।
जय,अनुपम,अद्भुत, संगमसावन झूमशिव गौरा मनरंजन।

डॉ मीरा कनौजिया
काव्यांशी
कानपुर उत्तर प्रदेश

नारी हूँ मैं

किन शब्दों में दूँ मैं परिचय अपना
कहीं गृहलक्ष्मी हूँ तो कहीं पराया धन
कहीं देवी स्वरूपा हूँ तो कहीं पैर की जूती
कहीं जीने का संबल तो कहीं दर्द का समंदर
कहीं हँसती हुई तो कहीं रोती सदा
कहीं अपनी सी तो कहीं अबूझ पहेली
कहीं तन्हा उदास तो कहीं बसंत बहार
कहीं समस्या सुलझाते तो कहीं सिहरती सहमी
कहीं दाम्पत्य सहेजती तो कहीं बिखरता दाम्पत्य
कहीं पिता पति के नाम तो कहीं जगमग व्यक्तित्व
कहीं कुशल गृहिणी हुँ तो कहीं कैरियर वुमन
कहीं अर्धांगनी हूँ तो कहीं वस्तु स्वरूप मेरा
कहीं बेसहारा हूँ तो कहीं आज की आवाज
कहीं कथा बांचती हूँ तो कहीं होंठ सीले मेरे
कहीं ममतामयी माँ तो कहीं गर्भ में खत्म मातृत्व
नियति के अकाट्य मंच पर परिचय यही मेरा
झंझावतों से लड़ती सम्हलती संघर्ष करती,
जीवन के दो राहे पर खड़ी आज की नारी हूँ मैं ।

सीमा निगम रायपुर छत्तीसगढ़
मो- नं - 7869458122

तीजन बाई

छत्तीसगढ़ की वसुंधरा ने बिटिया रानी पाई ।
पंडवानी पर्याय बनी "डॉक्टर तीजन बाई" ।

साधारण परिवार में जन्मी बेटी ने,
ऐसी प्रतिभा दिखलाई,,,
संघर्षों के कठिन डगर ने,
सफलता की माला पहनाई ,,,
कापालिक शैली में पंडवानी गायन को अपनाई।
पंडवानी पर्याय बनी "पद्मश्री" तीजन बाई।।

हार ,निराशा,अपमान में
तनिक नहीं घबराई,,,
लगन ,परिश्रम और निश्चय ने,
तंबूरे को आधार बनाई,,,
गुरु कृपा और रागी के संग पूर्वजों की मान बढ़ाई।
पंडवानी पर्याय बनी, "पद्म भूषण" तीजन बाई।।

दसों रसों में अभिनय प्रस्तुति से,
कथा को जीवंत बनाया है,,,,
कला संस्कृति और गायन से,
लोक सप्तरंग चढ़ाया है,,,
महान विभूति"तीजन बाई"की अभिनंदन बेला आई।
पंडवानी पर्याय बनी, "पद्म विभूषण" तीजनबाई ।।

स्तब्ध हुआ छत्तीसगढ़,
मौन हुआ तंबूरे का तान,,
अलविदा कह गई तीजन बाई
लोक कला को दे आसमान,,,
कला के रंग में रंग कर, ली अंतिम विदाई।
पंडवानी की पर्याय बनी, पद्म भूषण तीजन बाई।।

कामिनी कौशिक
रिसाई पारा धमतरी
मोबाइल नंबर_
9893214499

विषय
मेघ मल्हार के प्रेम गीत

विधा : काव्य

यह रचना आज इस मंच के सिवा और कहीं प्रेषित नहीं की गई है

पावस ऋतु के आते ही मन गुनगुनाने लगता,मेघ मल्हार के प्रेम गीत,
बादल गरजते, बिजली चमकती, याद आने लगता मनमीत।

छत पर बैठी राह निहारुं, बैरी कोयलिया गाए गीत,
भीगी पलकें.. अब आ भी जाओ,न भाए तुझ बिन संगीत।

दिन रात तेरी मैं राह निहारूं, मदमस्त मौसम मन में जगाए प्रीत,
रिमझिम रिमझिम बारिश की बूंदे, गुनगुना रही मधुरिम संगीत।

इंद्रधनुष आकाश में छाया,सात रंगों का सुंदर दृश्य संजीव,
मेघ मल्हार के प्रेम गीत सुन, मन तड़पे हैं तुझ बिन मीत।

स्वरचित

रंजना बिनानी काव्या
गोलाघाट असम

सृजक-सृजन समीक्षा

रविवारिय केंद्रीय रचनाकार विशेषांक

आज अन्तरा शब्दशक्ति के पटल पर *प्रदीप कुमार अरोरा जी, पुणे* का परिचय एवं उनकी पाँच रचनाएँ पाठकों की समीक्षा एवं विचारार्थ प्रस्तुत हैं।

प्रदीप जी की रचनाओं में प्रकृति, प्रेम, रिश्तों की आत्मीयता, सामाजिक सरोकार, मानवीय संवेदना और जीवन-दर्शन के विविध रंग सहजता से उभरते हैं। सरल, सहज एवं भावप्रधान भाषा में कही गई उनकी रचनाएँ कहीं मन को प्रकृति से जोड़ती हैं, कहीं स्मृतियों के कोमल संसार में ले जाती हैं और कहीं सामाजिक विसंगतियों पर गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं। प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से जीवन के गहरे अनुभवों को अभिव्यक्त करना उनकी रचनात्मक विशेषता है।

आप सभी सुधी पाठकों एवं साहित्यकारों से विनम्र अनुरोध है कि प्रस्तुत रचनाओं का गंभीरतापूर्वक अध्ययन कर अपनी निष्पक्ष, सारगर्भित एवं रचनात्मक समीक्षा अवश्य प्रदान करें। आपकी समीक्षात्मक दृष्टि रचनाकार के सृजन-पथ को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करेगी।

प्रस्तुतकर्ता डॉ. प्रीति समकित सुराना संस्थापक एवं संपादक अन्तरा शब्दशक्ति

रचनाकार का परिचय

प्रदीप कुमार अरोरा

पिताजी	स्व. श्री बाबुलाल जी अरोरा
माताजी	स्व. श्रीमती कमल आशा जी अरोरा
संप्रति	सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी
रुचि	लेखन, चित्रांकन, सुलिपि प्रसार, बाग़वानी, भ्रमण.
सम्पादन	"अभिषेक" (त्रैमासिक) (1992-98)
प्रकाशन	विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं में संपादकीय पत्र, कविता, व्यंग्य लेख, लघुकथा, व्यंग्य चित्र (कार्टून) का प्रकाशन,

कृतियाँ

1. हिन्दी सुलेख मार्गदर्शिका (1998)
2. पग–पग शिखर तक (2019) कविता संग्रह
3. रीता प्याला (2019) शृंगार काव्य
4. बैरी सावन (2026) विरह काव्य
5. हाशिए पर सिमटी दुनिया (2026) निर्जीव जगत का स्पंदन (कविताएँ)

आगामी कृतियाँ :

1. शब्द और भावों का श्रावण मास
2. अनुराग पर्ण

आत्मकथ्य

मेरे लेखनकर्म का उद्देश्य:- सृष्टि के हर उस अंश के प्रति अपने मन के भाव व्यक्त कर, कृतज्ञता ज्ञापित करना, जिनके प्रति मुझे आजन्म ऋणी रहना है।

संपर्क

जे -302, "पार्क आस्ट्रा", हिंजेवाड़ी, फेस -1, पुणे 411057
सचल भाष : 9425192297, 8889055581
email-arora.pku@gmail.कॉम

र च ना एँ

1 "आँगन की हरीतिमा"

छत पर रेलिंग के सहारे,
हवा में झूल रहा है
मिट्टी और हरियाली का एक छोटा-सा संसार।
ये मिट्टी के प्याले
या प्लास्टिक की रंगीन टोकनियाँ,
ज़मीन से कटे हुए
उन सपनों की तरह हैं,
जो ऊँचाई पर भी मुस्कुराना जानते हैं।
जब आँगन में ठंडी हवा गुज़रती है,
तो नीचे लटकती ये टहनियाँ
झूम उठती हैं,
मानो हवा इनके कानों में
कोई पुराने गीत गुनगुना रही हों।
इनकी जड़ों के पास ज़मीन का
कोई ठोस आधार नहीं
सिर्फ़ एक छोटा-सा दायरा है,
फिर भी
इनकी पत्तियाँ नीचे की ओर झुलतीं हुई
स्वतंत्रता का उत्सव मनाती हैं।
यह जीवन का एक और रूप है
जहाँ हम बंधे हुए तो हैं
ज़िम्मेदारियों की ज़ंजीरों से,
पर खिलने के लिए
पूरे आकाश की नीलिमा हमारी है।

2 ग़ज़ल

"एक लेखक की धर्माई पूछी"

फिर हमने रहनुमाई पूछी,
बस्ती की आग लगाई पूछी।

बाप बिना कभी रह न पाई,
उस बिटिया से बिदाई पूछी।

सौंदर्य त्याग जने जो बेटे
उस माँ की भरपाई पूछी।

अपने आँगन के गमलों से
कितनी फसल उगाई पूछी।

तमगा पाए कागा से हमने
कौन-सी ग़ज़ल है गाई पूछी।

गिट्टी तोड़ती वामा से फिर
बढ़ी हुई महंगाई पूछी।

पूछा नाम औ' जाति सबने,
एक लेखक की धर्माई पूछी।

3 "आहट की आरज़ू" (पाती अपने प्रिय को)

प्रिये,
आज भी
आहटें तुम्हारी
जब मन की दहलीज़ छूती हैं
आकुल होकर धड़कनें
संगीत बुनने लगती हैं,
आँखों के
अमिय बिंदुओं में
समा जाती है तुम्हारी छवियाँ,
जो याद दिलाती है
आलिंगन की
उस पहली चाहत का आधार।

मैंने
आकाश इंदु को
निहारना छोड़ दिया,
तुम्हारी मुस्कान ही
पूनम की आभा थी,
दुपट्टे की छाँव में
सिमटी वो गुनगुनी धूप
आत्मीयता के गहरे रंगों से
सराबोर लगती थी,
आलोकित था हृदय
मात्र तुम्हारे होने से,
यह आत्मीय रिश्ता
आखरी सांस तक बना रहे।

हियांशी,
बस आस्था और स्मृति बनकर तुम
मुझमें समाए रहना।

4 "क्यों आघात करें"

आजा फिर जनउत्थान की हम बात करें,
बैठ विपक्ष में क्यों किसी पर घात करें।

मारा हुआ तो पहले से है, वो मजबूरी का,
और भला क्यों मुफ़लिसी की रात करें।

निजहित ही होता नहीं, दुनिया में सब कुछ,
पलभर आनंद की खातिर क्यों उत्पात करें।

हेड भी मेरा टेल भी मेरा, ये तो कोई बात नहीं,
क्यों लूटें अपनों का सबकुछ क्यों आघात करें।

ग़म ही ग़म है मुझको, तुझको, उसको, सबको,
हो जाए ग़म दूर 'प्रदीप' वही शुरुआत करें।

5 "चाय छलनी"

रोज
उफनते हुए गर्म प्रवाह को वह
अपने सीने से
गुजारती है।
कसैलापन
वह स्वयं सोख लेती है
ताकि प्याले में
सिर्फ मिठास
और सुकून का अर्क जा सके।
उसके तन-बदन का रंग
बदल चुका है,
लेकिन
दूसरों की सुबह की ताजगी के लिए
वह कभी हार नहीं मानती।
उसके कर्म में
संतों-सा उपदेश छुपा है-
'रिश्तों की मिठास बनाए रखने के लिए
कड़वे घूँट स्वयं पीना
बेहद जरूरी है।'

प्रदीप कुमार अरोरा

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

दोस्ती

ख्वाबों के सफ़र में हकीकत बया कर
दोस्ती शब्दों से परे नैनों में क़ैद होती है
कब क्यूँ कहाँ सोच का समय नही है
एहसासों में हमसफर बन जीवंत होते है

क्षणिक मिलन दिल की बात होती हैं
फिर लौट जाते अपने दैनिक जीवन में
छवि आँख उतर भावनाओं में मुस्काती है
नीम शहद जीवन हर रंग को सजाती है

दुनिया की नजरों में बेमिसाल दोस्ती है
इतिहास गढ़ चर्चा निहित होती हैं
दिल से दिल की बातें जोड़ते
हर इंद्रधनुषी रंगों में छटा बिखेरती है

सफ़र के अंतिम पढ़ाव में हकीकत बया
कर हमने निभाई दोस्ती खूबसूरत रस्में है
दुनिया बेख़बर रंगीन शामें होती हैं
सुनहरी यादों में खों आज जीवंत होती है

अनिता शरद झा

अधुना मानों आँच 'तापती'

बंधन को स्वीकार किया था,
रिश्ते नाते मेल किए ।
संग चले थे हाथ पकड़ कर
छोड़ अकेले खेल किए।।

मन वीणा झंकार मधुरता,
जीवन की मुस्कान बनी,
तोड़ सभी बेडी अवगुंठन
गीत सुरों की तान बनी,
सुख-दुख समदर्शी नित झेले
छोड़ दूसरी गैल किए।

लाख बिठा दो पहरे जग में,
हेरा-फेरी कब टूटी?
बेशरमी की बातें भाती,
मन की फिसलन कब छूटी?
भौतिकता के पीछे दौड़े
धर्म-कर्म सब जेल किए।
अधुना मानों आँच तापती
जगत बड़ा बाजार हुआ।
टूटी मर्यादा जंजीरे
नैतिकता व्यापार हुआ।।
स्वार्थों की अंधी आँधी ने
आवाजाही रेल किए ।।

डॉ मीता अग्रवाल मधुर
रायपुर छत्तीसगढ़
9826540456

कैसे रिश्ते?

सुनहरे रिश्तों के धागे,
कच्चे से दिखने लगे हैं
जिनसे दिल लगाया था,
दिल वे बिकने लगे हैं।

सजाये थे आँख में सपने,
टूटकर गिरने लगे हैं
क्या पता था हमें,
वे किसी से मिलने लगे हैं।

दुःख इस बात का होता,
गलियों में दिखने लगे हैं
क्या कमी थी प्यार में,
झूठ भी कहने लगे हैं।

परिवेश इतना दूषित हुआ,
प्रेमी भी छिपने लगे हैं
शादी के पाक रस्मों को,
बेरहमी से कुचलने लगे हैं।

विश्वास जिनका डगमगाया,
हरकतें ऐसी करने लगे हैं
'उदय' सकुचाता है कहते,
रिश्ते सरेआम टूटने लगे हैं।

उद्देश्य तिवारी 'उदय'
सतना, मध्यप्रदेश

मेरी धनक..!

खिले हुए टह टह पीले
अमलताश की आभा में
जैसे एक शान्तिमयी ऊर्जा
समाहित होती है
सम्मोहित करती हुई सी....
उसी ऊर्जा का सम्मोहन हो तुम।
दमकते हुए गुलमोहर में अंतर्निहित
उसकी संचेतना हो तुम...!
वसंत की भूमिका हो,
और....
मेरे जीवन की व्याख्या की
विशेष टिप्पणी हो तुम...!!

निशा श्रीवास्तव, नोयडा

बिना मोल का झोल

[कुंडलिया]

-1-

ऊबड़ - खाबड़ चेहरा, टेढ़ी - मेड़ी देह।
मेरी प्यारी आत्मा, रहती है इस गेह ।।
रहती है इस देह , बने हैं नौ दरवाजे।
ठोस गैस अवलेह, द्रवित रस ताजे - ताजे।।
'शुभम्'कहाँ पर वास, नहीं कर हाबड़-ताबड़।
आया जी को रास, चेहरा ऊबड़ - खाबड़।।

-2-

दर्पण के आगे खड़ी,मन में अटल विचार।
सबसे सुंदर नारि मैं, रची धरा करतार।।
रची धरा करतार, अप्सरा हूँ मैं न्यारी।
भला और है कौन,मोहिनी मम सम नारी।।
'शुभं' पुरुष को बाँध,करूँ क्यों सहज समर्पण।
हाव-भाव अनिवार्य,सोचती सम्मुख दर्पण।।

-3-

टेड़ी चलता चाल जो,अपने ही घर - द्वार।
कौन उसे समझा सके, पर्वत सरिता खार।।
पर्वत सरिता खार , नारि-नर हैं ही ऐसे।
चलते उत्तर ओर, बताते दक्षिण वैसे।।
'शुभम्' नहीं सिर बीच,बुद्धि घुटने या एड़ी।
जैसे नागिन - नाग, चाल मानव की टेड़ी।।

-4-

ऊपर चिपका आवरण,उसके नीचे खाल।
अंतर का जाना नहीं, कैसा तेरा हाल।।
कैसा तेरा हाल, नहीं साहस भी इतना।
दिखती देह पवित्र, शीश धड़ टाँगें टखना।।
'शुभम्' दिखाता भाव,जंतु सब जैसे भूपर।
भरे अहं के घाव, हजारों भीतर ऊपर।।

-5-

आलू -गोभी की तरह, हुए मनुज के भाव।
समझे औरों को नहीं, भरा रहे उर ताव।।
भरा रहे उर ताव,स्वयं को कर्ता जाना।
जलता हुआ अलाव, बिखरता ताना-बाना।।
'शुभम्' फिसलता नित्य,मुष्टिका से ज्यों बालू।
बिना मोल का झोल,सड़क पर लुढ़का आलू।।

शुभमस्तु !

प्रो.(डॉ.) भगवत स्वरूप 'शुभम्'

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

आदर्श शिक्षक

श्री टेकचंद रोहणी जी को समर्पित

ज्ञान का दीप जलाने वाले,
हर मन में विश्वास जगाने वाले।
सादा जीवन, ऊँचे विचार,
ऐसे हैं गुरु, हमारे आधार।

छह जुलाई की वह शुभ बेला,
कर्तव्य-पथ का हुआ था मेला।
मझगवां की पावन धरती पर,
शिक्षा का दीप जला निडर।

साइकिल से प्रतिदिन चल पड़ते,
धूप, वर्षा, आँधी सब सहते।
कठिन राह भी हार न मानी,
सेवा ही थी उनकी कहानी।

गणित को सरल बना देते,
हर प्रश्न का हल सिखला देते।
तर्क, अनुशासन, आत्मविश्वास,
भर देते हर छात्र के पास।

डाँट में भी ममता की धारा,
हर विद्यार्थी था आँख का तारा।
भविष्य सँवारने का था सपना,
शिक्षक धर्म निभाया अपना।

गीत, सभा और खेल के संग,
भर देते विद्यालय में रंग।
हर प्रतिभा को मंच दिलाया,
जीवन का सच्चा अर्थ बताया।

आम के पौधे जो रोपे थे,
आज विशाल वृक्ष वे हो गए।
फल-फूलों से देते संदेश,
सेवा का रहता अमिट परिवेश।

विद्यालय से नाता ऐसा,
जैसे गंगा का निर्मल धारा।
हर नववर्ष मिठास लुटाते,
टॉफी देकर प्रेम जताते।

निर्धन बच्चों के सच्चे साथी,
ज्ञान-दान ही सबसे बड़ी थाती।
सेवा, करुणा, त्याग महान,
यही रहा उनका सम्मान।

हे गुरुश्रेष्ठ! आपको प्रणाम,
आपसे ही रोशन हर धाम।
पीढ़ियाँ सदा गाएँगी गान—
"श्रेष्ठ शिक्षक, श्रेष्ठ इंसान।"

आपका जीवन अमर प्रकाश,
सद्गुणों का अनुपम इतिहास।
जब तक शिक्षा का होगा मान,
गूँजेगा आपका पावन नाम।

डॉ.नवीन कुमार भट्ट नीर
जिला उमरिया
मध्यप्रदेश

औरत की ख्वाहिश

ना चाँद सितारे ना आसमां
चाहिए ,
रहे हम सूकून से ज़मी वो हमें चाहिए।

हर वक्त औरत पर सख़्त पहरा क्यों हुआ,
जो तोड़ दे इस बंध को तूफ़ा वो हमें चाहिए।

बिकती हर आबरू औरत की सरे बाज़ार ,
नीलामियों को रोक दे वो शख्स हमें चाहिए।

हवाओं में ज़हर भरा घुटन भरी हर सांस है,
महक आज़ादी की घुले फिज़ा वो हमें चाहिए।

औरत हो पाकीज़ा सवाल क्यों उठे,

हर पाक़ साफ़ मर्द का इम्तिहान हमें चाहिए।

बेख़ौफ़ घूमते दरिन्दे शिकार ए तलाश में,
सरे आम सज़ा मौत हो कानून वो हमें चाहिए।

ना आगे हो दहेज़ की ना तलाक़ तीन लफ्ज़ के,
बदले जो वक्त के साथ वो रिवाज़ हमें चाहिए।

क्यों ढूंढते हो नारी में सावित्री सीता को
वियोगी योगी लक्ष्मण सा, पुरूषार्थ हमें चाहिए।

पट्टी लगी आँखों में इंसाफ़ देने को,
तौले जो दर्द बानू का तराज़ु

जो छोड़ जाए आधी रात पति पुत्र को,
क्या माफ़ करेगा समाज ऐसी नारी को।

ग़र ढूंढ भी लेती है वह ईश बुद्ध को,
ऊंगलियां ना उठेगी क्या उसके सतीत्व को।

कुछ ऐसे ही सवालों का जवाब हमें चाहिए।

ना चाँद सितारे ना आसमां चाहिए ,
रहें हम सूकून से ज़मीन वो हमें चाहिए।

प्रमदा ठाकुर
अमलेश्वर
छ.ग.

लौट आओ आंगन अपने

हँसता चेहरा दिखता हो जहां,
खुल कर जी सको जहां।
अपनापन मिलता हो जहां,
कितनी यादें है जिस आंगन में।

हर पल राह देखती है तेरी।
कब आए तू, फिर मुस्कुराए तू
साथ घुलमिल जाएंगे सब
चेहरे पर तेरे मुस्कान लाएंगे सब।

लौट आ आंगन अपने
फिर एक नई राह अपना।
जीवन अभी पूरा पड़ा है
फिर से उसे खिला।

बहुत हो चुके आंसू तेरे
अब खुशी को अपना।
आंगन बुला रहा तेरा
आकर इसे अब अपना।

खुशी खुशी दुनिया अपनी बसा
हर हालात में बस मुस्कुरा।
लौट आ आंगन अब अपने
इंतज़ार तेरा कर रहे है तेरे अपने।

विशाखा सिंघल।
(दिल्ली)

मेरी अपनी मधुशाला

पीले जितना पी सकता है
तू इन अंगूरों की हाला,
मैं खड़ा हूं तेरे बगल में
लेकर दोनों हाथों में प्याला।

कवि बनकर आया साकी
लेकर कविताओं की हाला,
मन भर सुनता जा तू
सुनाती जाएगी मेरी मधुशाला। (1)

यहां का पता भूल न पाते
जो लोग हाथों में लिए रहते प्याला,
मैं भी उन्हें भूल न पता
जो उन्हें पिलाता हूं हाला।

कवि का रस ऐसा चढ़ा
की कभी खाली न होता उनका प्याला,
शाम को उनके साथ
खड़ी होकर चल दी मेरी मधुशाला। (2)

प्रणव राज, बिहार

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

सावन

सावन का परिवेश निराला
सम्मोहक दृश्य रचाता है।
बादल खेले आँख मिचोली,
ये ऊधम खूब मचाता है।
धरा ओढ़ कर रही चुनरियां,
अपना मन इससे है हारी।
सावन की शोभा है प्यारी।
सावन की महिमा है न्यारी।।

लिये दामिनी संग गगन में,
ढूँढ रहा अपनी धरती को।
संजीवनी लुटा वर्षा की,
दे जीवन धरती मरती को।
झूला डलें डाल पर झूले,
झूल रहे उस पर बनवारी।
अद्भुत छटा दिखी सावन की,
संग श्याम के राधा प्यारी।
युग जाता जिस पर बलिहारी।
सावन की महिमा है न्यारी।।

सावन तो शिव को मनभावन,
हरियाली चहुँओर सजी है।
दादुर मोर पपीहा हर्षित,
कलरव में हर राग बजी है।
ग्रीष्म गई अब तपन मिटी है,
पावस की आई है वारी।
हँसती कलियाँ नाचैं भौंरे,
आल्हादित सारी फुलवारी।
आज प्रकृति कितनी सुखकारी।
सावन की महिमा है न्यारी।।

राज किशोर वाजपेयी "अभय"
ग्वालियर

सजल

ऐसे कुछ भी मत बोला कर।
पहले शब्दों को तोला कर।।

कोई अपना नहीं यहाँ पर।
यों भेद न सबसे खोला कर।।

पग-पग पर सब ठगने बैठे।
खुद को इतना मत भोला कर।।

सरल नहीं कुंडलिया लिखना।
पहले दोहा फिर रोला कर।।

अगर कहीं हो बात सुलह की।
ज़हर वहाँ तू मत घोला कर।।

अगर लक्ष्य है पाना तो सुन।
मन से कह दे मत डोला कर।।

पुष्पा गुप्ता प्रांजलि
कटनी (मध्य प्रदेश)

ऐसा मुझे लगता है

ऐसा मुझे लगता है
हर किसी की जिंदगी में होती है,
एक अनसुनी कहानी।
ऐसा मुझे लगता है
की होगी हम सबने
कड़ी से कड़ी मशक्कत
कभी रोटी के लिए
कभी कपड़ों के लिए कभी खुद
के लिए
कभी अपनों के लिए
और, इन सब में ही खो गयी
सबकी जवानी।
ऐसा मुझे लगता है
ख्वाहिशें ,सब की होगी
आसमां को छूने की
चांद पर बसने की
पंछी की तरह उड़ने की
फूलों की तरह हंसने की।
पर ऐसा हर कोई कर नहीं पाता।
बात रह जाती है आनी जानी।

अमृता राजेंद्र प्रसाद
शिक्षा एम ए समाजशास्त्र

कहो सुंदरी!

कहो सुंदरी! किसने तुमको कातिल क्रूर बनाया?

प्रेम आत्मा को निर्मल कर
मन पावन करता है
कोमल ,करुणामय भावों को
अंतर में भरता है

नयन प्रेम से भरे कभी
निर्दयी नहीं हो पाते
टूटे सपनों की अर्थी को
सहें, देखकर जाते।

हत्यारिन बनकर बोलो क्या
तुमने आखिर पाया?

भोले मुखड़े के पीछे
शैतान नजर आ जाता
प्रेम नशे से परे उतरकर
तुझे समझ वो पाता।

जाने किस मिट्टी से तेरा
मन मस्तिष्क बना था
बड़े अभागे थे वे ,जिन
लोगों ने उसे जना था।

हाय मरे तू भी वैसे ही
अब विनाश है छाया।

दौलत कम ही रहे कि
थोड़े संस्कार हों ज्यादा
नहीं बुरा है प्रेम करें,पर
हों विचार से सादा।

इस हद तक हैवान बने
वह प्रेम नहीं कर सकता
अय्याशी को ही जीवन का
लक्ष्य बनाकर फिरता।

ऐसे मूर्खों का हे ईश्वर
पड़े न मन पर साया।

अभिलाषा सिह

ग़ज़ल

देश बचाना, देश बचाना रे

"सरित" मतलबी यारों से, खुद बचना, देश बचाना रे l
झूठ खोखले नारों से, खुद बचना, देश बचाना रे ll

रोज रोज की तू-तू मैं-मैं ,इससे लाभ नहीं होगा l
राजनीति- जयकारों से, खुद बचना, देश बचाना रे ll

भारतीयता पर काला धब्बा लग सकता है रोको l
संसदीय गलियारों से,खुद बचना, देश बचाना रे ll

हाय राम अब कौन पढ़ेगा, संसद में मेरी पाती l
जातिवाद ठगहारों से, खुद बचना, देश बचाना रे ll

पीड़ित ज़न की कौन सुनेगा, रोज लुटेरे लूट रहे l
शीश काटते आरों से, खुद बचना, देश बचाना रे ll

"सरित" बाहरी खतरों से भी ज्यादा भीतर से खतरा l
कोटि कोटि गद्दारों से, खुद बचना, देश बचाना रे ll

ग्राम कवि सन्तोष पाण्डेय
"सरित" गुरु जी
गढ़ रीवा मध्य प्रदेश

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

काव्य

अंगारों में तप के जिए हम
लौह सी कठोर हुई ज़िन्दगी
अब तो सांसों पर भी आफत है
इतनी कमजोर हुई ज़िन्दगी।

रात्रि के दर्पण में झांकें हम
दूर दूर मीलों तक माके हम
टूट रही दीवारें आस की
नयनों की लोर हुई ज़िन्दगी।

शहरों में शोर का दबाव है
सन्नाटा पसरा तनाव है
मूल हाथ में तनिक बचा नहीं
क्रूर ब्याजखोर हुई ज़िन्दगी।

रिश्तों की शीत हुई गर्मियां
कहीं न अपनेपन की उर्मियां
सामने है लाशें सम्बन्धों की
हृदय का धंधोर हुई ज़िन्दगी।

बोली में तेजाबी गंध है
संस्कार में विकृत छंद है
सच की उछालती है पगड़ियां
भारी मुंह जोर हुई ज़िन्दगी।

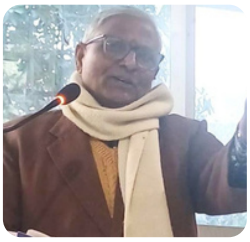

डॉ गोरख प्रसाद
मस्ताना

हरियाली तीज

सावन आया झूम कर हरियाली चारों ओर छाई,
तीज के पावन पर्व ने खुशियों की फुहार बरसाई।
मेहंदी रची पिया के नाम की भीनी- भीनी खुशबू वाली हाथों में ,
सावन में सजी हरी- हरी चूड़ियां सबके हाथों में ।
मांग में सजे
सुहाग के सपने, नैनों में कजरा लगा प्यार से,
हर आंगन में हो मंगल ,हर युगल का दिल भरा हो प्यार से।
बागों में सावन के झूले लगे, आपस में हंसी ठिठोली कर गीत गायें,
चूड़ी की खनक, पायल की रुनझुन मन को खूब लुभायें।
बारिश की इन बूंदे संग बरसे साजन का प्यार अनमोल,
आसमान तक जाकर झूला झूले सालों- साल जिसका लागे न मोल।
शिव- पार्वती की गाथा, हर तीज हमें याद दिलाए,
आपस में अटूट प्रेम और विश्वास का अमरदीप हृदय में जलाएं ।
प्रकृति ओढ़े हरि चुनरिया धरती लगे सुहानी,
हरियाली तीज पर बने जीवन की नई कहानी।
आज मनायें तीज सखी री ऐसा करें श्रृंगार साजन जाए रीझ,
आ जाओ साजन,पुकारें प्यार से जीवन हो जाए उमंगों से अजीज।

उमा झुरेले, अध्यक्षा
(गहोई रश्मि कला साहित्य मणि)
जबलपुर

काव्य

हे जंगल के प्रबल दावेदार बिरसा मुंडा
हे वीर नारायण सोना खान के योद्धा
लेकर तीर तरकश फिर से आओ
आओ विनोबा फिर से आओ
बनकर आवाज बनकर ढाल
बचाओ धरा को बचा लो हसदेव को
बचा लो ऊंघते अनमने सतपुड़ा के
घने जंगल को, बचा लो अरावली को
उन पहाड़ों को पर्वतों को गहरी खाई को
लिखो बुराशं की इबादत को फिर से
बचा ने घायल भटकते बाघों को
जो ढूंढ रहे हैं अस्तित्व घने घासों का
उछलते भागते हिरन बारहसिंगा को
जो अब नहीं भागते कस्तूरी के पीछे
वो ढूंढते है खोजने जंगल को गुफाओं को
छुपाने खुद को अपने बच्चों को
आओ फिर से जंगल की आवाज बनकर
बसाओ जंगल घास-फूस का कीचड़ ताल का
मच्छरों से सने घने और घने हो ऊँचे ऊंघते जंगल

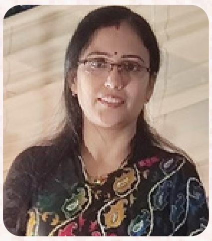

विभा नविशा सोनी
मुंगेली छत्तीसगढ़

माँ का बच्चो के नाम पत्र

मेरे बच्चों ,
मुझे.....
भगवान मत बनाओ ।
मुझे एक इंसान ही रहने दो,
क्यों तुम सब ऐसा कर रहे हो...
पहले .....तुम सब ने
गौ माता के साथ किया
उन्हें माता मानकर
दरदर भटकने को छोड़ दिया
अब मेरी बारी
मेरे बच्चों....
मै भी तुम्हारे साथ
वैसे ही रहना चाहती हूं
जैसे मै तुम्हारे बचपन मे
तुम्हारे साथ-....
खेलती थी खाती थी...
और तुम्हारी तोतली बोली
सुनकर खुश होती थी
बस मुझे .....भी
तुम्हारा कुछ समय चाहिए
तुम्हारा साथ चाहिए
मै तुम्हारा मुस्कुराता हुये
चेहरा देखना चाहती हूँ
तुम्हारी पीड़ा मे मलहम लगाना चाहती हूँ
कलेजे से लगाकर ये कहना चाहती हूं
रो मत मेरे लाल....
तेरी माँ है ना...।
तेरी माँ तेरे साथ हैं,
देखती हूं...,
कौन मेरे लाल का,
बाल भी बाँका करता है
तू चुप हो जा ..।
मै,.. भगवान से भी लड़ लूगी।
मेरे जीते जी मेरे बच्चे का
कोई भी ,...
कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता ।
ऐसे ...बेटा मै ...
माँ बनकर जीना चाहती हूँ
अपनी ममता क़ो तुम पर वारना चाहती हूँ
ना कि तुम मुझे....
भगवान समझकर
मेरे दोनो समय पैर पड़ो
और मेरे चेहरे तक को
ढंग से ना देखो
कि माँ ....
आज तुम इतनी उदास क्यों हो..?
माँ तुम्हें क्या हुआ..?
कहकर घडी दो घड़ी
मेरे पास बैठो
बस यही एक माँ की
अपने बच्चे से आस है
शायद कोई ना कोई
बेटा ये समझ जाऐगा
और अपनी माँ को
फिर भगवान नही
वही प्यारी भोली माँ बनायेगा

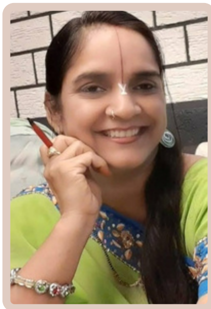

मनोरमा रतले,दमोह

स्त्री/पुरुष

स्त्रियों ने पुरुषों को पूजा,
उन्हें लगा हम भगवान हैं।
स्त्रियों ने पुरूषों को प्रेम में गरम भोजन हाथों में दिया,
उन्हें लगा हम महान हैं।
स्त्रियों ने पुरूषों का हर आदेश सर माथे रखा,
पुरुष को लगा ये हमारी गुलाम हैं।
स्त्रियाँ प्रेम में झुकती रहीं,
और पुरुष अहम में झुकाता रहा।
पुरुषों ने हाथ उठाया स्त्रियाँ चीखी-चिल्लाई,
फिर भी उसने पुरुष के लिए सब सुविधाएं जितनी उसकी वश में थी जुटाई।
लेकिन जब स्त्री सब सहते-सहते थक गई,
फिर वो इक दिन लक्ष्मी से काली बन गई।
फिर पुरुष का अहम गया,
स्त्री को पाँव की जूती समझने का वहम गया।
अब वो झुकी नहीं न ही चिल्लाई,
अब तो वो शेरनी बन थी गुर्राई।
हाँ, पर एक बात और...
कुछ पुरुषों ने सह कर भी सबकुछ,
स्त्रियों को सिर माथे बैठाया।
उन पुरुषों ने सचमुच,
परमेश्वर का दर्जा पाया।
न हर स्त्री श्रेष्ठ है,
और न हर पुरुष शैतान।
बस इसी के साथ देती हूँ,
मैं अपने शब्दों को विराम।

स्वरचित : शिल्पी नवनीत तपा

आनंदित जीवन

आनंदित जीवन का मूल मंत्र जानिए, संतोषी सदा सुखी,
असंतोषी परम दुखी मानिए।

मन की दौड़ रोक लो, जो मिला उसी में मुस्कराओ,
छोटी-छोटी खुशियों को दिल से गले लगाओ।

तुलना की आग बुझा दो, ईर्ष्या को दूर भगाओ,
अपनी थाली देखो, दूसरे का हलवा मत ललचाओ।

बीते कल का रोना छोड़ो, आने वाले का डर त्यागो,
आज अभी इस पल में जी लो, जीवन-रस तुम पाओगे।

दूसरों के दुख बाँटो, अपना सुख सबको परोसो,
माफ़ी देना सीखो, मन के बोझों को रोज़ खरोसो।

प्रकृति से नाता जोड़ो, सुबह की किरण को नमन करो,
पंछी की चहक सुनो, हरियाली का वंदन करो।

कर्म करो निष्काम भाव से, फल की चिंता मत पालो,
सेवा में आनंद ढूँढो, प्रेम-दीप हर घर में बालो।

हँसी को अपना साथी मानो, आँसू को भी निज जीवन के हौंसले बनाओ,
हर हाल में शुक्रिया कहो, प्रभु का नाम सदा गुनगुनाओ।

राजेश्वरी बाजपेई
जबलपुर {म. प्र.}

कविता

हार-जीत तो
आते-जाते रहेंगे
सब कुछ पार्थिव है यहाँ
लेकिन इच्छाएँ नहीं हैं
पार्थिव
इनकी ताज़गी
रहेगी यहाँ
हवा में!
इनसे बनती हैं नई जगहें
एक बार हारने के बाद भी

एक बार और जीतने की इच्छा
पृथ्वी पर कभी ख़त्म नहीं होगी।

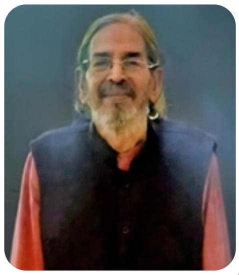

आलोकधन्वा

यथार्थ

मेरी माँ सपने नहीं संजोती, जूझती है यथार्थ से
सपने भी सच होते हैं, नहीं उलझाती इस झूठ में।
मेरी माँ सुंदर नहीं है, क्योंकि उसे सजने संवरने आईना निहारने का वक्त नहीं है पर मन की सुंदरता में कोई, जोड़ नहीं है।।
मेरी माँ अनपढ़ है, पर हमें किस खूबसूरती से गढ़ा
किसी को डॉ. तो किसी को इंजीनियर बना दिया है
मेरी माँ कोमल पर शसक्त नारी है, हम पर आने वाली हर मुश्किल पर भारी है।
मेरी माँ धनवान नहीं है, पर मुझसा कोई भाग्यवान नहीं है
जिसके पास माँ रूपी धन है वो भला क्या किसी धनिक से
कम है वो भला क्या किसी धनिक से कम है

अर्चना सोनी कटनी

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शनिवार, 15 अगस्त 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

आज़ादी

आज़ादी आज हो गई है अस्सी साल की।
इसे पाने में भूमिका थी लाल बाल पाल की।
मनमानी करके नफरत, दंगे मत भड़काओ,..
संघर्षों से मिली ये पूंजी है देश विशाल की।

दो सौ बरसों की गुलामी को भारत ने झेला।
फूट डाल कर राज करो ये अंग्रेजों का खेला।
देश के कई राजा-महाराजा शत्रु से मिल बैठे,
ये वो ही लोग थे जिनका मन बहुत था मैला।

फिर भी नहीं बुझी अग्नि क्रांति मशाल की।
संघर्षों से मिली ये पूंजी है देश विशाल की।
लक्ष्य था सबको साथ साथ लेकर चलना
मुश्किल कैसी आए कभी नहीं पीछे हटना।

हमसब भारतवासी भाई-बहन सब एक हैं,
धर्म जाति को छोड़कर हरदम आगे बढ़ना।
हमको शोभा लानी थी भारत मां की भाल की।
संघर्षों से मिली ये पूंजी है देश विशाल की।

देश को मुक्त कराने का संकल्प तुम्हारा था।
मुझे खून दो मैं आजादी दूंगा गूँजा नारा था।
आजाद हिंद फौज बना शत्रु को ललकारा था।
जोशीले भाषण से जन जन में स्फूर्ति ड़ाल दी।

संघर्षों से मिली ये पूंजी है देश विशाल की।
आज बहुत बदल गए हैं आज़ादी के मायने।
उश्रंखलता, हिंसा का लोग लगे दामन थामने।
इंसानियत को छोड़कर, लगे निम्नता को मानने।

इंसानियत आंसू बहाती, भाईचारा खतम सा,
अपराध करके घूमते रहते हैं, निडरता से सामने।
डोल रही समाज की नैया, जो है बिन पतवार की।
संघर्षों से मिली ये पूंजी है देश विशाल की ।

डॉ. अमृता शुक्ला

तिरंगे की शान

आज़ाद हुए इस देश ने अब तक कितने
युद्ध के मैदान में परिचय अपने दिए है।

अतीत से सीखी बातों को हमें अपनाना है
सबको मिलकर इस देश को आगे बढ़ाना है।

समय बदले, सत्ता बदले, हमें प्रयासों को अपने नही हराना है
एक स्वतंत्र भारत के निर्माण में हिंदुस्तान को आगे बढ़ाना है।

नव विचारों के साथ संस्कारों को आगे ले जाना है
एक सक्षम हिंदुस्तान अब हमें बनाना है।

हौंसला कभी नही डगमगाना है
वीरता का परचम लहराना है।

स्वर्ग जैसा सुंदर हिंदुस्तान फिर बनाना है
आत्मनिर्भर भारत हमें बनाना है
तिरंगे की शान को हमें बढ़ाना है।

विशाखा सिंघल।

युग-युग का उजियारा ...

पुण्य-भूमि यह देश हमारा, युग-युग से उजियारा है।
नील गगन में उड़े तिरंगा, हमको प्राणों से प्यारा है।
वेद-ऋचाओं से मुखरित है,
बुद्ध-विचारों की धारा,
राम-कृष्ण की कर्मभूमि यह,
नानक का भी है दुलारा,
सदियों का संस्कार हमारा,
जग में दीपित तारा है।
नभ को नाप रहा भारतअब,
सागर को भी माप रहा है,
ज्ञान-विज्ञान के रथ पर चढ़कर,
नव इतिहास छाप रहा है
श्रम-संकल्प का यह नज़ारा, नवयुग का जयकारा है।
सीमा पर प्रहरी बन खड़े हैं,
आँखों में अंगारे भर कर
हिमगिरि से ऊँचा हौसला,
हृदय में तिरंगा धर कर
वीर-रक्त का तेज अपारा, रण में ध्रुव-सा तारा है।
आतंक-अँधेरों के आगे,
नहीं कभी घुटने टेकेंगे,
अलगाव के विषधर फन को
एकजुट होकर ठोकेंगे
शांति-संकल्प सदैव हमारा ,
मानवता का सहारा है।
भीतर के षड्यंत्रों से भी,
बाहर के प्रहारों से भी,
सावधान रहना होगा अब
छल से भरे विचारों से भी
जाग्रत राष्ट्र-मन हमारा , संकट में रखवारा है।
नील गगन में उड़े तिरंगा ,हमको प्राणों से प्यारा है।
पुण्य-भूमि यह देश हमारा, युग-युग से उजियारा है।।

दिलीप आचार्य "सोमेश्वर"

यह स्वतंत्रता का महापर्व वंदन कर लो

अपनी भाषा.आकाश. धरा चंदन कर लो।
जो जान गंवा कर भी करते ऊंचा माथा,
है याद शहीदों की प्रणम्य गौरव गाथा.।
हम करें नमन भारत की पावन पुण्य धरा .
वह हरीतिमा सी शस्य श्यामला बसुंधरा ।
उस मातृभूमि का कण कण आज नमन कर लो.
यह स्वतंत्रता का महापर्व. वंदन कर लो।

जिसकी रक्षा हित वीरों ने बलिदान दिया.
खुद मिटें मगर आजादी का अभिमाान दिया.
शत बार नमन भारत के वीर सपूतों को.
कण कण गाता है जिनकी उज्जवल शौर्य कथा
उस पुण्यभूमि का प्रियवर अभिनंदन कर लो
यह स्वतंत्रता का महापर्व. वंदन कर लो.।

जो डरे नहीं भीषण आंधी तूफानों से
है नमन शहीदों की प्रणम्य गौरव गाथा.
भयभीत नही शत्रु के विकट प्रहारों से
आंसू पीकर भी कही नहीं स्व व्यथा कथा
अपनी भाषा.आकाश. धरा चंदन कर लो.
यह आजादी का महापर्व. वंदन कर लो।......।

पद्मा मिश्रा, जमशेदपुर

जय जग जननी

जय भारती ,
जय जय भारत,
जय जग जननी,
जय वसुंधरि,
जय मातृ भूमि
जय कमलासन,
जय केशरी श्वेत ,
हरित वर्ण।
तेरे पावन चरणो के दास,
जिसको तेरी ही है आस,
तेरी रक्षा के लिए मातृ,
सीमा पर खड़े है ,
फौलादी हाथ।
कर त्याग अपना घर द्वारा,
करने दुश्मन का सर्वनाश,
न देख सके कोई ,
न उठा आँख,
दे शक्ति उन्हे ,
और सबल साथ।

प्रज्ञा जायसवाल

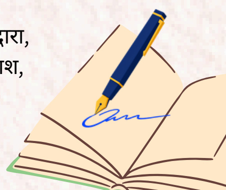

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
रविवार, 16 अगस्त 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

सृजक-सृजन समीक्षा रविवारीय केंद्रीय रचनाकार विशेषांक

आज अन्तरा शब्दशक्ति के पटल पर राधा गोयल जी, विकासपुरी, नई दिल्ली का परिचय एवं उनकी चार रचनाएँ पाठकों की समीक्षा एवं विचारार्थ प्रस्तुत हैं।

राधा गोयल जी बहुआयामी रचनाकार हैं। साहित्य-सृजन के साथ सामाजिक सरोकार, पर्यावरण संरक्षण, पठन-पाठन तथा रचनात्मक गतिविधियों में उनकी निरंतर सक्रियता दिखाई देती है। उनकी प्रकाशित कृतियों में अनेक पद्य एवं गद्य संग्रह शामिल हैं। उनकी रचनाएँ विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं, ई-पत्रिकाओं, वेब पोर्टलों तथा साझा संकलनों में प्रकाशित होती रही हैं। अनेक साहित्यिक सम्मानों से सम्मानित राधा जी का लेखन जीवन के विविध पक्षों, सामाजिक विसंगतियों, नारी-अस्मिता, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं को स्वर देता है।

आइए, राधा गोयल जी की रचनाओं से परिचित हों और अपने विचारों एवं समीक्षात्मक प्रतिक्रियाओं से उनका उत्साहवर्धन करें।

प्रस्तुतकर्ता डॉ प्रीति समकित सुराना
संस्थापक अन्तरा शब्द शक्ति

राधा गोयल जी का संक्षिप्त परिचय

नाम:- राधा गोयल

जन्मतिथि:- 03/08/1948

जन्मस्थान:- दिल्ली

शिक्षा:- स्नातक (पत्राचार माध्यम द्वारा), बी.एड., कटिंग टेलरिंग सर्टिफिकेट कोर्स, योग डिप्लोमा, रंग चिकित्सा, मुद्रा विज्ञान, शिवाम्बु चिकित्सा व एक्यूप्रेशर का अल्पकालिक कोर्स।

कार्यक्षेत्र:- मुख्य लिपिक के पद से अगस्त 2008 में सेवानिवृत्त।

रुचियाँ:- पाक कला, पठन-पाठन, लेखन, व्यर्थ समझी जाने वाली वस्तुओं का उचित उपयोग तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाना।

स्थाई पता:- एफ ब्लॉक, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

प्रकाशित कृतियाँ:-

12 एकल पद्य संग्रह – काव्य मंजरी, निनाद, जीवन एक खिलौना, नयी उम्मीद नया आसमान, अजब अनोखे खेल, एक ख्वाब अधूरा सा, आपातकाल में सृजन फुलवारी, अन्तर्नाद, ऊँची नीची है डगरिया, प्यासी धरती तपस्विनी सी, भीगे सपने, संवेदना के स्वर।

17 एकल गद्य संग्रह – पाती प्रीत भरी (भाग-1), पाती प्रीत भरी (भाग-2), हादसा, नया मोड़, क्या-क्या न सहे हमने सितम, तेरे नाम, यादों के झरोखे से (भाग-1), गली जाजमपुरिया, सृजन समीक्षा, बकरा मिल गया, अकस्मात, यात्रा वृत्तांत/देश-परदेश भाग-1, यात्रा वृत्तांत देश-परदेश भाग-2, सामाजिक मुद्दे श्रृंखला-1, सामाजिक मुद्दे श्रृंखला-2, कब जागोगे, मन के जीते जीत।

1976 से 1978 के दौरान नियमित रूप से एक मासिक पत्रिका में रचनाओं का प्रकाशन।

अंतरराष्ट्रीय स्तर की पुस्तकों में सहभागिता:

- इनसे हैं हम – गुमनाम शहीदों के बारे में गद्य लेखन।
- भारत के भारत रत्न।
- आजादी का जश्न भाग-1 में गुमनाम क्रांतिकारियों के बारे में तीन लेख।
- आजादी का जश्न भाग-2 में दो गुमनाम क्रांतिकारियों की कहानी।
- भारत के अशोक चक्र विजेता, हिन्द के प्रहरी, स्वराज के स्वर, हौसलों के स्वर – पद्म श्री सम्मान से सम्मानित विभूतियों के बारे में।
- हौसलों के हमसफर – ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकारों के बारे में पद्य संग्रह।
- वैश्विक हिन्दी सम्मेलन मंच में 14/09/2021 को लेख प्रकाशित।

70 से अधिक साझा संग्रहों में सहभागिता। प्रतिष्ठित पत्रिकाओं तथा स्टोरी मिरर, प्रतिलिपि, हिन्दी प्रतिलिपि, युवा प्रवर्तक, हिन्दी भाषा डॉट कॉम, नवकिरण द्वैमासिक पत्रिका, आदित्य संस्कृति एवं अन्य ई-पत्रिकाओं में रचनाओं का नियमित प्रकाशन।

विशेष उपलब्धियाँ:- उनकी गद्य पुस्तक नया मोड़ को पुरस्कृत श्रेणी की पुस्तकों में चयनित किया गया।

आदित्य संस्कृति द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में 368 लेखकों ने अपनी प्रविष्टियाँ दी थीं, जिनमें 22 लेखकों की पुस्तकें चयनित हुईं।एक अन्य पुस्तक तेरे नाम को भी पुरस्कृत किया गया, जिसमें 168 लेखकों ने अपनी प्रविष्टियाँ प्रस्तुत की थीं।

सम्मान:- राधा गोयल जी को शताधिक साहित्यिक एवं सामाजिक सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनमें इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, लन्दन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज अंतर्राष्ट्रीय काव्य श्री सम्मान, अन्तरा शब्द शक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, वूमेन आवाज सम्मान, मातृभाषा उन्नयन सम्मान, कलम के सिपाही, भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, साहित्य साधक सम्मान, समय साक्षी सम्मान, समर्थ नारी गौरव सम्मान, जीवन योद्धा सम्मान, प्रजातंत्र का स्तंभ गौरव सम्मान, इंद्रप्रस्थ तूलिका स्वर्ण, वात्सल्य सम्मान 2021-22, लाल बहादुर शास्त्री साहित्य रत्न सम्मान 2022-23, हुंकार सम्मान, गुरु आशीर्वाद सम्मान, साहित्य मेधा चक्र सम्मान, कर्मयोगी सम्मान, भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी सेवी सम्मान 2022, संचित काव्य तरंग साहित्य सम्मान, विश्व भारती हिंदी सम्मान 2020, लक्ष्य भेद शक्ति आराधना सम्मान, शब्द अमृत सृजन सम्मान 2021, हिंदी गौरव सम्मान, प्रणेता साहित्य गौरव सम्मान, नारी शक्ति सम्मान 2023, सृजन सम्मान 2023, महिला शक्ति सम्मान, आयुष गौरव सम्मान 2023, निरपेक्ष पत्रकारिता विषय पर सम्मान पत्र तथा अन्य अनेक सम्मान शामिल हैं।

अक्टूबर 2008 में इंडिया हैबिटेट सेंटर में एसोसिएशन इंडियन एपिलेप्सी सोसाइटी के 9वें वार्षिक सम्मेलन में "मरीज बीमारी से नहीं, बीमारी के एहसास से मरता है" विषय पर बोलने के लिए भी उन्हें सम्मानित किया गया।

स्टोरी मिरर जैसे बहुभाषी साहित्य मंच पर अनेक बार ऑथर ऑफ द वीक के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया।

संपर्क:- चलितभाष : 9811599770 ई-मेल : radhagoyal222@gmail.com

रचनाएँ

1.आरोप-प्रत्यारोप

कहना तो बहुत कुछ है अगर कहने पे आऊँ,
पर सोचती हूँ कहने से क्या होगा?
कभी सोचती हूँ
कम से कम मन का आक्रोश कुछ तो कम होगा।
हर समय हमारे जीवन में आरोप- प्रत्यारोप का दौर चलता ही रहा
एक झुकता रहा
दूसरा झुकाता ही रहा
पर झुकने की भी एक सीमा होती है
तुम केवल आरोप लगाते रहे
मैंने हर आरोप को सिर माथे स्वीकार किया
कभी-कभी प्रतिरोध भी किया
लेकिन ज्यादातर केवल मौन समर्पण ही किया
तुम मेरे मौन समर्पण को अपना अधिकार समझते रहे
मेरे तन मन और जीवन पर हमेशा केवल तुम्हारा अधिकार रहा
क्या मेरे इस जीवन पर सिर्फ तुम्हारा ही अधिकार है?
मेरा कुछ भी नहीं?
जब- जब अपनी इच्छा से जीने की कोशिश की,
आरोपों- प्रत्यारोपों का रेला चल पड़ा।

आखिर मेरे अधिकार कहाँ हैं?आरोप लगाने मुझे भी आते हैं। प्रत्यारोप मैं भी कर सकती हूँ।
पर क्या होगा इस आरोप और प्रत्यारोप से?
जीवन की साँझ आ गई है।
अच्छा यही है कि शांति से जीवन गुजार लें।
ज्यादा परफेक्शन की उम्मीद से
अपना और दूसरों का जीवन बर्बाद करके क्या होगा?
माना कि तुममें बहुत परफेक्शन है
पर सबसे परसेप्शन की उम्मीद क्यों रखते हो?
इसीलिए हर समय हर किसी पर आरोप- प्रत्यारोप लगाते रहते हो।
कभी सोचा है कि इस व्यवहार से बुढ़ापे में क्या हाल होगा?
सब छोड़ कर चले जायेंगे।
कोई साथ नहीं देगा।
फिर बिस्तर में पड़े- पड़े सोचते रहना
और अपने व्यवहार पर शर्मिंदा होते रहना।

4.बरसो मेघा झूम के

बरसो मेघा झूम के
इस धरती को चूम के
प्यासी धरती तपस्विनी सी करती आज गुहार।
तप्त धूप से व्यथित प्राणियों को लो आज उबार।
पानी पानी की चहुं ओर मची है आज गुहार,
कृषक फसल कैसे बोएगा, करता करुण पुकार।
कुछ भी अच्छा नहीं लगे अब, बिन पानी सब सून,
उपवन हैं सब सूने सूने, खिला न कोई प्रसून।
सब उदास मायूस हुए से, ताक रहे आकाश,
बरसो मेघा झूम-झूम कर, यूँ न करो निराश।

बिना तुम्हारे धरती पर सावन कैसे आएगा?
बिना तुम्हारे कलियों का दिल कैसे खिल पाएगा?
कामदेव के तरकश से तूणीर निकल न पाएं।
अपने वाणों से प्रेमी को घायल न कर पाएं।
बिना तुम्हारे सेज सुहानी कैसे हो पाएगी?
बोझिल-से मौसम में कैसे रौनक आ पाएगी।
अबके बरस चातकी शायद प्यासी मर जाएगी।
प्यासे होठों पर अब कोई गीत नहीं आता।
सावन के बिन कोई मेघ मल्हार नहीं गाता।
तृषित धरा को अब कोई भी भाव नहीं भाता।
तरुणियों को कोई भी श्रृंगार नहीं भाता।

धरा और सारे प्राणी ही व्याकुल बहुत हुए।
पानी पानी की रट ही सब लगा रहे।
अब भी अगर नहीं बरसे तो हाहाकार मचेगा।
बिन पानी इस धरती का अस्तित्व ही आज मिटेगा।
लोगों की पीड़ा को देखो, बरसो मेघा झूम के।
हर्षित कर दो हृदय सभी का, इस धरती को चूम के।

2.मेघों की सीनाजोरी

घन घनन घनन गरजे मेघा मूसलाधार बरसात हुई।
बादल इतना ज्यादा रोए, सारी सड़कें जलमग्न हुईं।
न जाने कितने ही शहर , इस वर्षा में डूब गए।
लाखों लोग हुए बेघर , कितने पानी में समा गए।

मेघों की ये सीनाजोरी, कितने सपने छील गई।
नेताओं की उदासीनता कई जिन्दगी लील गई।
नेताओं तुमसे विनती है, उस पर थोडा ध्यान करो।
बाढ़ और सूखे से निपटने के हर संभव यत्न करो।

बरसात के मौसम से पहले कुएँ खुदवाना।
बरसात के पानी का संचय का जतन करना।
न फिर सूखा पड़ेगा और न ही बाढ़ आएगी।
पसीने से कमाई दौलतें, तब बह न पाएँगी।
अति वर्षा... अति सूखे से पीड़ित कोई न होगा।
रहनुमाओं! तुमको इस बारे में कुछ तो करना ही होगा।

3.मौन नहीं, न्याय चाहिए

दामन में दाग लगाकर, चुप रहने को मुझे मजबूर किया।
हवस शान्त की अपनी, और वीडियो भी उसका बना लिया।
सबको दिखला दूँगा, यह कहकर रोज ब्लैकमेल किया।
तन तो नोंच ही था तूने, मन भी मेरा छील दिया।
बहुत रही खामोश, मगर अब मैं खामोशी तोड़ूँगी।
मुझ जैसी सारी बहनों को, साथ में अपने जोड़ूँगी।
खुद आमन्त्रण दूँगी, आजा अपनी हवस मिटाने को,
दिल में ठान के बैठी हूँ, मैं तुझको आज मिटाने को।
केवल तुझको नहीं हवस के, जितने आज पुजारी हैं,
उन सबके ऊपर ही आई, अब तो आफत भारी है।
दृढ़ निश्चय कर डाला है, अब मौन नहीं रहना होगा।
एकजुट हो बलात्कारियों का, समूल नाश करना होगा।
नारी को अबला समझा, अब अबला नहीं रहेगी वो।
कितना बल है उसमें, नराधमों को दिखला देगी वो।
नहीं शरण कानून की लेगी, खुद ही न्याय करेगी वो।
जिस पौरुष पर दंभ है, वही अंग काट फेंकेगी वो।

5.तुहिन कणों से आच्छादित है, कुसुमित उपवन यह सारा

रजनी ने घूँघट में से, धरती की ओर निहारा।
गर्मी से व्याकुल हर जन, था तड़प रहा बेचारा।
देख मनुज की पीड़ा, रजनी के आँसू आए।
मेघों से गुहार की उसने, धरती पर आ जाएं।
सुनते ही रजनी की गुहार, मेघ चल पड़े फौरन
त्रस्त धरा के सभी प्राणियों को मिल गया प्राण धन।

नन्हें नन्हें तुहिन कणों ने, मादक नृत्य दिखाया।
आकुल त्रस्त धरा को मानो, शीतल पेय पिलाया।
नन्ही नन्ही सी बूंदें, पत्तों पर थिरक रही थीं।
मोर नाचने लगे बाग में, बुलबुल चहक रही थीं।
लोग घरों से बाहर आ,इसका आनन्द उठाएं।
मुदित मगन हो सभी खुशी से झूम झूम कर गाएं।
तुहिन कणों से आच्छादित है कुसुमित उपवन यह सारा।
अंग अंग हो गया प्रफुल्लित, मिला ताप से छुटकारा।

राधा गोयल,
विकासपुरी,दिल्ली

युद्ध

मनुष्य के नाम पर
मनुष्य की सत्ता के लिए
मनुष्य के घरों को रौंदकर
मनुष्य को मारना जो है
वह युद्ध है...!

युद्ध में हर चीज जायज है
वे सारी चीजें जो नाजायज हैं
किसी आम आदमी के लिए
किसी भी देश में!

पर युद्ध के निर्णय हम नहीं लेते
हम अर्थात दुनिया का कोई भी
आदमी
जो किसी सरकार में नहीं है,
निर्णय लेते हैं वे
जो हमारी ही खुशहाली के लिए
हमारी ही आजादी के नाम पर
हमसे जबरन मत प्राप्त करते हैं
या फिर ---
हमें बेहतर शासन देने के नाम पर
जबरन सत्तारूढ़ हो जाते हैं वे!

वे सब
हाँ, वे सब
जिन्हें हमने ही दे रखे हैं
असीमित अधिकार
लेते हैं निर्णय एक खूनी नृत्य
आयोजित करने का
और इसके बाद होता कुछ नहीं!

धरती से उठते
धुएँ के बादलों में छिपी
असंख्य मानवों की चीखें
उनके ही अथक परिश्रम के प्रतिरूप
घरों के मलबे
परत दर परत जमता
आदमी का रक्त
और हवा में गूंजता
मौत का वारण्ट
बस यही चीजें रह जाती हैं
होता तो कुछ भी नहीं!

जब आम जगहों में
ये सब हो रहा होता है
वहीं 'सुरक्षित घरों' में
नक्शे पर निशान लगते चले जाते हैं
जो बताते हैं कि--
उनकी सत्ता का कितना भाग
आया या और मिला लिया गया!

मानवता चीखती रहती है
पर उसकी चीख
उन वहशी अट्टहासों के सामने
शरमा जाती है;
पता नहीं
वह दिन कब आएगा
जब एक मानव
हाँ, एक मानव का
स्वतंत्र मूल्य स्थापित हो पाएगा !!

शिवनारायण जी

स्त्री

मैंने कहा- तितली
वह तितली बन गई

मैंने कहा- चिड़िया
वह चिड़िया बन गई

मैंने कहा- झरना
वह झरना बन गई

मैंने कहा- नदी
वह नदी बन गई

मैंने कहा- सागर
वह सागर बन गई

मैंने कहा- पृथ्वी
वह पृथ्वी बन गई

मैंने कहा- फूल
वह फूल बन गई

उसने कहा- सिर्फ़ आदमी
और हम
पहाड़ बन खड़े हो गए।

चन्द्रबिंद सिंह

मुलाकात

राह चलते किसी
अनजान राही से
जब किसी मोड़ पे
होती है मुलाकात
कोई लगता अपना सा
तो कोई बेगाना लगे
कोई इक मुलाकात में
बन जाता हमसफ़र
जीवन भर का साथी
कभी एक छोटी सी
मुलाकात रिश्तों में
बांध कर रिश्तों का
अर्थ समझा देती है
तो कभी समझाती है
अपने- पराए का फर्क
जीवन यात्रा के हम राही
जीवन के हसीन सफर में
न जाने कितने की पड़ावों पर
ठहरते तनिक विश्राम करते
और आगे बढ़ते जाते है
इस सफर में सुख -दुख
ये दो साथी मौन साथ निभाते
सुख के पल आनंद से भरे
जीवन के स्वर्ण काल से लगते
जहां हमारी मुलाकात स्वार्थी
मतलबी लोगों से होती तो
दु:ख और विपदा के पल
हमें हमारे सच्चे साथी से
मिलाते ओर अपने सच्चे
साथी से कराते हैं
हमारी मुलाकात
जीवन का अर्थ बताती
हमारा जीवन
कर जाती है सार्थक
एक छोटी सी मुलाकात

वृंदा पंचभाई

कहो सुंदरी!

कहो सुंदरी! किसने तुमको
कातिल क्रूर बनाया?

प्रेम आत्मा को निर्मल कर
मन पावन करता है
कोमल ,करुणामय भावों को
अंतर में भरता है

नयन प्रेम से भरे कभी
निर्दयी नहीं हो पाते
टूटे सपनों की अर्थी को
सहें, देखकर जाते।

हत्यारिन बनकर बोलो क्या
तुमने आखिर पाया?

भोले मुखड़े के पीछे
शैतान नजर आ जाता
प्रेम नशे से परे उतरकर
तुझे समझ वो पाता।

जाने किस मिट्टी से तेरा
मन मस्तिष्क बना था
बड़े अभागे थे वे ,जिन
लोगों ने उसे जना था।

हाय मरे तू भी वैसे ही
अब विनाश है छाया।

दौलत कम ही रहे कि
थोड़े संस्कार हों ज्यादा
नहीं बुरा है प्रेम करें,पर
हों विचार से सादा।

इस हद तक हैवान बने
वह प्रेम नहीं कर सकता
अय्याशी को ही जीवन का
लक्ष्य बनाकर फिरता।

ऐसे मूर्खों का हे ईश्वर
पड़े न मन पर साया।

अभिलाषा सिह

नई सुबह के तारे हम

हम बागों की हरियाली हैं-
चिड़ियों के चहकारे हम!
हम नदियों की कल-कल, छल-छल
नई सुबह के तारे हम!

हममें है फूलों की खुशबू
झरनों का मधुमय संगीत,
हममें रंग भरे तितली के
हम प्रकृति के हैं नवगीत।
हम श्रोता हैं परी कथा के
दुनिया के उजियारे हम!

हम जीवन के मीठे सपने
हँसी-खुशी के बाइस्कोप,
हम जब खुलकर मुस्कातेहैं
दुख हो जाता पल में लोप।
चहकें-महकें मगर न बहकें
सबसे न्यारे, प्यारे हम!
हम बागों की हरियाली हैं,
चिड़ियों के चहकारे हम!

वरिष्ठ बाल साहित्यकार
भगवती प्रसाद द्विवेदी

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

गुरु दिगम्बर संत को शत्-शत नमन

दिगम्बर संत का दर्शन,जरा मुझको भी करने दो ।
गुरु चरणों की पावन धूल, मेरे माथे पे आने दो ।।
थोड़ा दीदार गुरुवर का , खुली आंखों से हो जाए ।
चरण छूने को मन व्याकुल,चरण के पास आने दो ।।

(२)

दयालु हो कृपालु हो , दया इतनी सी कर देना ।
लगाकर आस बैठा हूं ,मेरे भावों को पढ़ लेना ।।
कृपा का पात्र समझों तो , कृपा इतनी सी कर देना ।
कटोरा ज्ञान का ख़ाली , ज़रा सा ज्ञान भर देना।।

(३)

चरणसे मैं लिपट जाऊँ ,वो पावन पुण्य भर देना ।
वेदी शुद्धि के अवसर पर , मुझे भी शुद्ध कर देना ।।
मुझे भगवान बनना है ,वो सीढ़ी पार करा देना ।
घड़ा कच्चा हूं मिट्टी का , मुझे तप से तपा देना।।

(४)

कर्म की काली कमली से , मुझे मुक्ति दिला देना ।
भेद विज्ञान होने का , मुझे भी ज्ञान दे देना ।।
अनंतानंत जन्मों के , सफ़र के बाद लौटा हूं ।
मुझे सद्गुण नवाजों ना , मेरे दुर्गुण मिटा देना ।।

(५)

मुझे मंजिल मिले तब-तक , ये अंगुली थाम के रखना ।
भँवर में डूब न जाऊं मैं , मुझे साहील पे ला देना ।।
मुझे मंदिर की वेदी का , वो पत्थर ही बना देना ।
जहां भगवान विराजे हैं , वहीं मुझको लगा देना ।।

(६)

हजारों भक्त का रेला , गुरु का पुण्य है गहरा ।
लगा है ज्ञान का मेला , गुरु का ज्ञान है गहरा ।।
मुझे भी शिष्य बनने का, वो अवसर ही दिला देना ।
मनु से बन मुनि बनकर , गुरु के साथ चल देना ।।*

रचियता:-
महेंद्र जैन 'मनु'
इन्दौर (म० प्र०)

ग़ज़ल

शाम सूरज निगलने वाली है
आस दिल में मचलने वाली है

वह हवा फिर से चलने वाली है
जिससे दुनिया दहलने वाली है

रंजिशों नफ़रतों के बढ़ने से
क्या मोहब्बत बदलने वाली है

ऐ मसीहा तेरी दवाओं से
अब तबीयत संभलने वाली है

जिससे परवाने दूर रहते हैं
वो शमा फिर से जलने वाली है।

ख़ूबसूरत ज़मीन है लेकिन
सरहदें इसकी खलने वाली है

जंग रोके ज़रा कोई जाकर
ख़ौफ़ से जाँ निकलने वाली है

रूबी भूषण

जीवन बिखरा

शीतल हो चले,
सपनें कुनकुने,
माथे पर बड़ी-सी बिंदी
साड़ी नाभि-दर्शना,

शानों पर गिरता हुआ
जुल्फ़ों का झरना।
आँखों की सलाइयों पर थे
सपन कई बुने।

जाओ न यहाँ से—
उसका यह कहना,
और नयन-कलश से
प्रेम का छलकना
दौड़ पड़ा था कैसे मन
गालों को छूने।

स्मृतियों की पलकों पर
अश्रु जैसे ओस,
मेरे छिपाते मुझे सबसे,
मैं जैसे कोई दोष।
चिंदी-चिंदी कर दिया मुझे,
निर्दय समय, तूने।

कमलेश कंवल,
उज्जैन

माँ की ममता

कोई ना जाने इस जग में, क्या होती है माँ।
माँ की चरणों में देखो, झुकता है सारा जहाँ।
नौ माह गर्भ में रखकर, संतान को जन्म दिया।
आँचल में छुपाकर माँ, लालन-पालन किया।

बच्चों का पहला शब्द, सुशोभित होती है माँ।
बच्चों को रोते देख, वो खुद भी रोती है माँ।
ममतामयी होती है माँ, वात्सल्य की मूर्ति है।
संतान के सारे दुख, पल भर में वो हरती है।

अमृतमय दूध से पोषण, केवल माँ करती है।
माँ जैसा ना कोई जग, माँ सौभाग्य भरती है।
शिक्षा और संस्कारों की जननी, माँ ही होती है।
धरती की अमूल्य धरोहर, वो माँ ही मोती है।

माँ बिना इस जग में, कोई कैसे रह सकता है।
माँ बिना घर अपना, सूना-सूना सा लगता है।
करुणा की मूर्ति माँ, छल-कपट से अंजान है।
कौन भला इस जग में, माँ से बड़ा महान है।

चोपेश्वर कुमार साहू
गातापार, जिला- धमतरी
(छ.ग.)

कविता

मित्र सदा दिल में रहें,जैसे सुमन -सुवास ।
जीना- मरना साथ में ,जीवन का उल्लास ।।

जल बिन जैसे मीन है , दीपक है बिन नेह ।
मीत बिना जीवन नहीं , बिन नारी के गेह ।।

मित्र मिले बड़ भाग्य से , रखिये प्राण समान ।
उदय हुए निज पुण्य तब ,मित्र मिला वरदान ।।

मित्र दिवस पर कामना , सुखी रहें सब मित्र ।
साथ कभी छूटे नहीं , हृदय बसें प्रभु चित्र ।।

मीरा भार्गव सुदर्शना
कटनी मध्यप्रदेश

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

मैं भारत माँ की बेटी हूँ

मैं भारत माँ की बेटी हूँ,
मैं नाज इस पर करती हूं।

मेरा भारत है प्यारा,
है विविधताओं से भरा,
प्राचीन इसकी सभ्यता,
है सांस्कृतिक विरासत से भरा।।

है राम -कृष्ण की पावन भूमि,
महात्मा बुद्ध की कर्म स्थली,
यहाँ हर धर्म लगता प्यारा,
दिखती अनेकता में एकता।।

है भरत जी की पावन धरा,
कश्यप ऋषि की स्थली,
लक्ष्मीबाई, वीर अवंतिका,
की है ये पावन भूमि।।

वीर भगतसिंह और सुखदेव की,
बलिदान गाथायें गूंजती,
शिवाजी और महाराणा की,
ललकार भी है गूंजती।।

तुलसी,राम,रहीम,की भूमि,
नानक,कबीर की वाणी भी,
नेहरू, गाँधी, विवेकानंद की,
आवाज भी है गूंजती।।

ईद ,होली और दीवाली,
मनाते धूमधाम से,
क्रिसमस और प्रकाश-पर्व भी,
मनाते खूब शान से।।

शून्य का अविष्कार कर,
मंगल ग्रह तक पहुंच गये,
विज्ञान की प्रगति कर,
कितनों को पीछे छोड़ गये।।

पूर्व में बंगाल की खाड़ी,
तो पश्चिम में अरब सागर फैला,
उत्तर में है वृहत हिमालय,
दक्षिण में हिन्द सागर फैला।।

कितने वीरों का रक्त बहा,
कितनी मांओं की गोद उजड़ी,
कितनी मांगों का सिंदूर छिना,
तब ये आजादी हमें मिली।।

पंद्रह अगस्त को मिली आजादी,
दिल्ली है राजधानी बनी,
फहराया तिरंगा प्यारा,
हम सबकी है शान बढ़ी।।

26 जनवरी 1950 को,
देश पूर्ण गणतंत्र बना,
और उसी दिन से ही फिर,
संविधान लागू हुआ।।

यहां राष्ट्रीय पुष्प कमल प्यारा,
है बरगद विशाल भी न्यारा,
जहाँ गान है देखो जन-गण-मन,
तो गीत वन्दे-मातरम।।

जहाँ गंगा बहती कल-कल कर,
गजराज हमारी राष्ट्रीय धरोहर,
जहां फल है मीठा आम भी,
तो खेल न्यारी हाकी भी।।

है राजभाषा हिंदी भी,
और मुद्रा चलती रुपये की,
मुझको इस पर तो नाज बहुत,
मैं हूँ इसकी प्यारी बेटी"।।

साधना छिरोल्या
दमोह(म.प्र.)

ग़ज़ल

बिखरे से जज़्बात लिखे हैं,
बेबस से हालात लिखे हैं।

खत भेजा है उसने मुझको,
दुनिया के आघात लिखे हैं।

लिखी है मजबूरी भी उसने,
कारण कुछ अज्ञात लिखे हैं।

लिखा,समझना संकेतों को,
मुरझाए से पात लिखे हैं।

*भीगा सा कागज़ है उस पर,
हल्दी वाले हाथ लिखे हैं*।

सतीश कुमार, उज्जैन (म.प्र.)
94259 25358

किरायेदार

हर बार कुछ न कुछ
छूट जाता है पीछे
जब भी घर बदलते हैं।
खुद का कुछ नहीं
फिर भी अपना लेते हैं
हर नए किराए के घर को
हर कोने में यादें बसा कर
अपना अपनत्व उड़ेलकर
फिर सब यहीं छोड़ जाते हैं
जब भी घर बदलते हैं।

गमलों में लगे नन्हे पौधे
जहां तक निभे साथ रखते हैं
जमीं पर लगाया जो पेड़
उदास आंखों से उससे
हाथ फ़िराते विदा लेते हैं
कुछ कुछ उसमें छोड़ जाते हैं
जब भी घर बदलते हैं ।

पड़ोस के नये नये रिश्ते,
जिनके साथ साल के
सारे त्यौहारों का आनंद सहेजते
और कभी कभी सुबह की चाय
जो संग मिल बैठ कर पीते
सारी दुनियां की बातें करते करते,
कभी नोंक झोंक, अबोला
और फिर किसी मुसीबत में

फिर एक होकर साथ निभाना
सब पीछे छूट जाता है
जब भी घर बदलते हैं ।

पर खाली कुछ नहीं रहता
बहुत सी यादें कई नए रिश्ते
अपने साथ संजो कर ले जाते हैं
जब भी घर बदलते हैं।

संजय कानूनगो, झाबुआ (म.प्र.)

कजरी

सृजन पंक्ति -झूला झूल रहे वनवारी।
हरे रामा सावन की पड़े फुहार, झूला झूल रहे वनवारी।
कदम की डाल पे बैठे मनमोहन, ग्वाल बाल सब करते नर्तन,हरे रामा राधिका करें मनुहार, झूला झूल रहे वनवारी।

दूध दही की मटकी फोड़े सखियों के छींके तोड़े,हरे रामा मिश्री संग करें फलहार , झूला झूल रहे वनवारी।

सखियाँ जब शोर मचाती,
अल्हड़ गोरी गीत सुनाती,
हरे रामा मैया जाय रही बलिहार, झूला झूल रहे वनवारी।।
या छवि पे मैं होती निछावर
लीला करते हैं गिरधर।
हरे रामा सावन की पड़े बौछार, झूला झूल रहे वनवारी।
सब गोपिन के चीर हरण कर ,
नारी धर्म शिक्षा बता रहे करतार, झूला झूल रहे वनवारी।
हरे रामा सावन की आई बहार झूला झूल रहे बनवारी।।

तृप्ता श्रीवास्तव

नज़्म

तमाम ख्वाहिशें बूंदों में बरस रही है ll
तेरी मुहब्बत को जिंदगी तरस रही है ll
इतना भी प्यासा नहीं रहा ये मन मेरा
एक तेरी यादें इस दिल में बस रही है ll
फलक पर चमक रही है बिजलियाँ
अँधेरी रातों को तन्हाई डस रही है ll
तू पास होकर भी मुझसे है दूर कितनी
देखले हम पर ये दुनिया हँस रही है ll
न चाँद उसका रहा न पास चाँदनी रही
दिलों की चाहत मझधार में फंस रही है ll
जबसे देखा उन्हें दिल में समा ही गईं
ख्वाबों में आकर बांहो में कस रही है ll
देख कर भी अनदेखी कैसे करे अनिल
इश्क की आग में जिन्दगी झुलस रही है ll

डॉ अनिल श्रीवास्तव
पारा, जिला झाबुआ (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
गुरुवार, 20 अगस्त 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

हवा

ऐ हवा ......
तेरा रूप है क्या ?
तेरा रंग है क्या ?
नहीं हमें पता।

ऐ हवा,
तू बस बहती रहती हरदम
जग को सुख पहुंचाती हरदम
जीवन के कण कण में बस कर
उर्जा देती रहती हरदम
पर क्यों हमको नजर ना आती,
थोडा सा चेहरा तो दिखा।

ऐ हवा ....

देह मेरी तुझसे ही चंचल
वन उपवन में तेरी हलचल
प्राण हमारे तुझपे निर्भर
तू ना मिले सारा जग निश्चल
इतना उपकृत हमें किया है
थोडा सा एहसाँ तो जता।

ऐ हवा ......

तू अद्भुत रचना सृष्टि की
प्रथम सूचना तू वृष्टि की
सारा जग तुझसे संचालित
तुझ पर चलती नहीं दृष्टि की
विश्व नमन करता है तुझको
रखना हम पर नेह सदा।

ऐ हवा ,
तेरा रूप है क्या ,
तेरा रंग है क्या
नहीं हमें पता,

महेश शर्मा धार वाले
लखनऊ

कोई साथ हमारे कब तक (ग़ज़ल)

कोई साथ हमारे कब तक।
जीवन और सहारे कब तक।

रात ढ़ले ही छुप जाएंगे,
नभ में चाँद,सितारे कब तक।

तय है वक़्त बहारों का भी,
धरती रूप सँवारे कब तक।,

हम रखते हैं जीत का सपना,
कोई हमसे हारे कब तक,

जिनकी चाहत है मतलब की,
उनके आप दुलारे कब तक।

आदत है जिनकी देरी की,
उनकी राह निहारे कब तक।

बूढ़ी, धुंधली आँखों में अब,
सपने, आब ,नज़ारे कब तक।

नवीन माथुर पंचोली

कविता

घुटुरन-घुटुरन हैं चले, नंद यशोदा लाल।
मैया पीछे भागती,मुस्काए गोपाल।।

पैजनियां छम-छम बजे,करधन किंकिणि शोर ।
अंक खेलते नाथ श्री ,वसुधा मात विभोर।।

हर्षाये सब देवता,गात मंगलाचार ।
दर्शन आकुल आ खड़े,देखो भोले द्वार।।

हृदय मुदित आनंद भयो,बृजवासी नर- नार।
पाय दरस हर्षित हुए, निशदिन ज्यों त्योहार।।

छैल-छबीली राधिका,छलिया रे घनश्याम ।
रास-रचाए रचइया,रसिया राधे श्याम ।।

रमावल्लभा हैं रमे, परबस राधा नाम।
राम रामेति हैं रमे, रमते आठों याम ।।

श्रद्धा पाठक

यादें

तेरी वो मुस्कान मुझे याद रहेगी,
याद रहेगी मुझे तेरी खुशबू भी।
देखा जाए तो याद रहेगा मुझे
तेरे साथ बिताया हर एक पल भी,
और हमारे सपनों में देखा हुआ
आने वाला वो कल भी।

तेरी बातें मुझे याद रहेंगी,
याद रहेगी तेरी हँसी भी।
मेरे बिना बात रूठ जाने पर
तेरा मुझे मनाना भी,
और मुझे देखकर यूँ ही
बेवजह मुस्कुराना भी।

तेरी शरारतें,
तेरी वो हसीन आँखें,
तेरा शर्माना,
और फिर दिल खोलकर
सब कुछ कह जाना—
याद रहेगा मुझे
वो सब भी।

जाह्नवी मालेवार

ऊंघते जंगल

हे जंगल के प्रबल दावेदार बिरसा मुंडा
हे वीर नारायण सोना खान के योद्धा
लेकर तीर तरकश फिर से आओ
आओ विनोबा फिर से आओ
बनकर आवाज बनकर ढाल
बचाओ धरा को बचा लो हसदेव को
बचा लो ऊंघते अनमने सतपुड़ा के
घने जंगल को, बचा लो अरावली को
उन पहाड़ों को पर्वतों को गहरी खाई को
लिखो बुराशं की इबादत को फिर से
बचा ने घायल भटकते बाघों को
जो ढूंढ रहे हैं अस्तित्व घने घासों का
उछलते भागते हिरन बारहसिंगा को
जो अब नहीं भागते कस्तूरी के पीछे
वो ढूंढते है खोजने जंगल को गुफाओं को
छुपाने खुद को अपने बच्चों को
आओ फिर से जंगल की आवाज बनकर
बसाओ जंगल घास-फूस का कीचड़ ताल का
मच्छरों से सने घने और घने हो ऊँचे ऊंघते जंगल

विभा नविशा सोनी
मुंगेली छत्तीसगढ़

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
शुक्रवार, 21 अगस्त 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

मां और चिड़िया

सुना है कि दुनिया की तमाम मांएं
मरकर चिड़िया बन जाती हैं
वे बनाती हैं घोंसले
अपने ही घर के रोशनदान
या पास के किसी पेड़ पर
सुबह-सुबह शोर मचाकर
जगाती है अपनी संतानों को
भर दिन खिड़कियों
या छत पर बैठकर
देती हैं कुछ-कुछ हिदायतें
जिन्हें अनसुनी कर देते हैं हम
दाना-पानी न डालो उन्हें
तो शिकायत भी नहीं करतीं

मेरे कमरे की खिड़की पर
रहती है एक नन्ही गौरैया
जो अक्सर आकर बैठ जाती है
मेरे गिरे हुए कंधों पर
मैं जब होता हूं अवसाद में
दबी जुबान से कानों में
कहती है कुछ-कुछ
मैं उसकी भाषा नहीं जानता
लेकिन पहचान लेता हू उसकी आंखें
और उन आंखों से झांकती
उसकी असंख्य चिंताएं

मैं आहिस्ता से कहता हूं - मां
वह मेरे कंधे पर बैठकर
आहिस्ता से पंख फड़फड़ाती है
आहिस्ता से सहला देती है
मेरे गाल
और आहिस्ता से ही मैं
गहरी नींद में डूब जाता हूं !

ध्रुव गुप्त

गीत

मौन शब्दों को अधरों पे सजाकर,मन
का भेद नहीं इस तरह खोलिये।
सुन सकती हूँ मैं आँख की दास्ताँ,आप
चाहें अगर आँख से बोलिये।

जब- जब भावों को मथा है मैने,स्तब्ध
हुआ उर लगा है कहने,
पीर नैनों से जो न बयाँ हो सकी,
मेरे जज्बात को अब नहीं तोलिये।

मौन शब्दों को~~~।

थरथराती रही है शमाँ रात भर,
बस समझिये दिखावट का ये साथ भर।
मूँद नैनों को जब है किया आकलन,
चँद रिश्ते बचे साथ जो हो लिये।

मौन शब्दों कों~~~~।

चूर पल में हुआ अब बचा न भरम,
व्यर्थ रिश्तों की नगरी मे उलझे थे हम।
टूटती साँस को थाम कर चल सकूँ,
मेरी रग मे ख़ुदा वो जुनूँ घोलिये।

मौन शब्दों को अधरों~~~~।

ममता खरे 'मधु'

टूटते रिश्ते

धुंधलाते संबंध, बिखरता नीड़
दरकते कांच से कोमल ये पावन नेह के बंधन,
अहम की एक ही ठेस में बिखर जाता है मधुवन।
जहाँ बूढ़े जनक-जननी विकल एकांत सहते हैं,
सुत-पुत्री निज धरा रचकर विमुख होकर ही रहते हैं।
प्रणय का बंध जो पावन, वो अब जर्जर हुआ जाता,
हृदय के मौन सम्भाषण पे अब प्रतिशोध छा जाता।
तनिक सी बात पे टूटन, विकल मन का भरम जाना,
सुलगते मोड़ पे सहसा सहज संबंध बिसराना।
दिखावे की चकाचौंध में विकृत सारा समाज है,
परस्पर होड़ में अंधा यहाँ हर एक मिजाज़ है।
पड़ोसी से अपरिचित आज ये मानव खड़ा तन्हा,
यंत्र से राग है गहरा, मनुज से शेष बस संशय।
बदलते काल चक्र में हर एक नाता बिखरता है,
मनुष्यता का विमल चेहरा निरंतर ही उतरता है।
समय रहते सहेजें हम ये रिसते घाव अपनों के,
कहीं वीरान न हो जाए, नगर सुंदर सपनों के।

सिद्धि बृज रतले
दमोह मध्यप्रदेश स्वरचित अप्रकाशित

तिलस्मी कृष्ण

ठिठकी है दूर जंगल में
सांवली सांझ सी कोई
भरी भरी आंखों में
अनुत्तरित प्रश्न लिए

सिलवटों वाला आँचल
ढलक गया है कंधे से
प्राची की गोद में
लुढ़क गए सूरज सा

आधे चांद की बिंदिया
माधुरी भरे पाटल
महासागर को छूते
धरती के अंतिम छोर सी चिबुक
फूटने को आतुर दूधिया झरने

कटि पर बिछी है
बैंगनी सरसराती पत्तियों वाली
चिकनी पगडंडी

धूसर मिट्टी में सने पाँव
भ्रम दे रहे
तिलस्मी कृष्ण-प्रतिमा का

जो तराशे जाने के बाद
अकस्मात् अनायास
प्रतिष्ठित हो गयी लगती है

डॉ भावना शेखर

कुण्डलिया- गुरुवर

गुरुवर को करते नमन,भरा ज्ञान भंडार।
उनकी वाणी जो सुने , पाते जीवन सार।।
पाते जीवन सार, वही ज्ञानी बन पाते।
कितना भी हो कष्ट, नहीं किंचित घबराते।।
कहती प्रेमा आज, कल्पतरु-से गुरु हितकर।
करते सदा प्रकाश,छाँटते हैं तम गुरुवर।।

योगिता चौरसिया 'प्रेमाश्री'

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

क्षणिकाएं

धोखा

कमबख्त वक़्त ने धोखा क्या दिया,
हर चेहरे के नकाब उतर गए।
दिल को सदमा तब लगा,
जब सब चेहरे अपनों के निकल गए।

आसूं

दिल के जज्बातो को
किसी तरह रोक लेते है,
कमबख्त ये आसूं
हमेशा दिल से काम लेते है,
चालक ही पड़ते है हमेशा
मुझे बेबस और शर्मिंदा करते है,
चट्टान सी बनने की
मेरी नाकाम कोशिशों को,
बेगैरत पल ये ही
तमाम कर देते है।

जुदाई

तेरी जुदाई ने मुझको
सबसे जुदा कर दिया,
लोग कहते है मैने
खुद से दगा कर लिया।

नारी

जीवन की धूप में,
छाँव है नारी।
कोमल हृदय का,
भाव है नारी।

भ्रम

भ्रम का मायाजाल
इसमे उलझता इंसान
छटपटाता रहता मगर
कभी न छूटे ये जंजाल

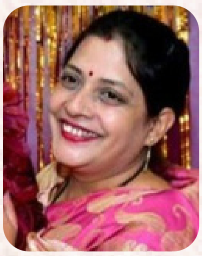

श्वेता सोनेकर
वारासिवनी

विधा:- दीपिका मापनीयुक्त मात्रिक छंद कुल मात्रा 23 यति विभाजन 10/13 ,पदांत:- 212
मापनी:- 22222 , 2222 212
मात्रा बाँट:- 2(8) , (8) 212

विषय:- मिट्टी/माटी

भारत की मिट्टी,
होती तिलक समान है।
इसकी मिट्टी पर,
हमको बहुत गुमान है।।
इस मिट्टी को माँ,
गंग चढ़ाए नीर है।
कहता जग इसको,
चंदन और अबीर है।।

सींचा वीरों ने,
इसको शोणित-धार से।
रक्षा की इसकी,
दो - धारी तलवार से।।
यह पावन मिट्टी,
भारत माँ की शान है।
इस मिट्टी पर हम,
सबको अतिअभिमान है।।

बप्पारावल से,
जन्मे इसमें वीर हैं।
कुंभा - साँगा से,
बलशाली रणधीर हैं।।
इस मिट्टी के है,
सागर चरण पखारता।
इसके वैभव को,
सारा विश्व निहारता।।

छोटेलाल सारस्वत
अजमेर (राज.)

तू चल, चला-चल...

**सूरज चलता, चंदा चलता,
चलते जग में तारे।
मंजिल नहीं,
ये एक सफ़र है।
तू चल, चला-चल,
चलता चल तू।**

**रुक गया तो वही अंत है,
चलने का आनंद अनंत है।
पर्यटक कहाँ रुकते कभी हैं,
कंकर-पत्थर, नदियाँ-नाले,
आते कई अवरोध राह में,
कहीं भटकना, कभी
उलझना,
गिरना-उठना, फिर से
चलना।**

**राह यही है -
तू जान-समझ ले,
फिर तो कोई दर्द नहीं है।
चलता रह तू निरंतर,
तू चल, चला-चल,
चलता चल तू।**

**मृत्यु के पार कहीं तो,
सुन्दर कोई चमन होगा,
किसी नये गगन की आशा में
-
चलता रह तू निरंतर,
तू चल, चला-चल,
चलता चल तू।**

विनय कुमार
श्रीवास्तव

कविता

प्रिय तुम,
सुना है ये मौसम
तुम्हारी याद का है—
शायद तभी
आज हवा कुछ ज़्यादा ही
तुम्हारा नाम लेकर गुज़र रही है।
खिड़की पर ठहरी बारिश की बूँदें
बार-बार कुछ कहती हैं,
और मैं हर बूँद में
तुम्हारा चेहरा ढूँढ़ लेती हूँ।

अलमारी में रखी
तुम्हारी दी हुई वह इयररिंग
आज फिर हाथ में आ गई,
तो लगा जैसे बीता हुआ कोई पल
चुपके से लौट आया हो।
तुम्हें याद है न,
तुम कहते थे—
कुछ रिश्ते दूरी से ख़त्म नहीं होते,
वे बस ख़ामोश हो जाते हैं।

शायद हमारा रिश्ता भी
उसी ख़ामोशी में साँस ले रहा है,
कहीं बहुत भीतर,
जहाँ अब भी तुम्हारी आवाज़
मेरे मन के दरवाज़े पर
धीरे से दस्तक देती है।
मैंने बहुत कोशिश की
तुम्हें भूल जाने की,
मगर यादें भी अजीब होती हैं—
जितना उन्हें दूर करो,
उतना ही वे भीतर उतरती जाती हैं।

आज फिर शाम ढली है,
आसमान पर बादल हैं,
हवा में वही नमी है
और आँखों में
वही अधूरी-सी बात...

सुनो ना अगर ये मौसम
तुम्हारी याद का है—
तो आओ न,
कुछ देर इस मौसम की तरह
मेरे पास ठहर जाओ।
कुछ कहना मत...
बस यूँ ही ख़ामोश रहना।
मैं तुम्हें अपनी धड़कनों के बीच
फिर से सुनना चाहती हूँ।

रश्मि
अभय

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
रविवार, 23 अगस्त 2026

सृजक-सृजन समीक्षा

रविवारिय केंद्रीय रचनाकार विशेषांक

आज अन्तरा शब्दशक्ति के पटल पर *पद्मा मिश्रा, जमशेदपुर* का परिचय एवं उनकी पाँच रचनाएँ पाठकों की समीक्षा एवं विचारार्थ प्रस्तुत हैं।

पद्मा मिश्रा, जमशेदपुर जी बहुआयामी रचनाकार हैं। साहित्य-सृजन के साथ सामाजिक सरोकार, पर्यावरण संरक्षण, पठन-पाठन तथा रचनात्मक गतिविधियों में उनकी निरंतर सक्रियता दिखाई देती है। उनकी प्रकाशित कृतियों में अनेक पद्य एवं गद्य संग्रह शामिल हैं। उनकी रचनाएँ विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं, ई-पत्रिकाओं, वेब पोर्टलों तथा साझा संकलनों में प्रकाशित होती रही हैं। अनेक साहित्यिक सम्मानों से सम्मानित राधा जी का लेखन जीवन के विविध पक्षों, सामाजिक विसंगतियों, नारी-अस्मिता, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं को स्वर देता है।
आइए, पद्मा जी की रचनाओं से परिचित हों और अपने विचारों एवं समीक्षात्मक प्रतिक्रियाओं से उनका उत्साहवर्धन करें।

यादों का संसार तो विशाल है जीवन सागर में अनुभूतियों की सीपी की तरह,, और तब सबसे पहले बचपन ही याद आता है,, उम्र के इस पड़ाव पर जब जीवन की सांझ दस्तक देने लगी है,वो भूले बिसरे पल, सहेलियां खेल खिलौने मां पिताजी और न जाने क्या क्या,, बनारस की बेटी हूं, मेरे सपनों के शहर बनारस में बिताए अनगिनत यादों के इस सफर में अनुभूतियां भी है,हर्ष और विषाद के पल भी है, जिन्होंने बहुत कुछ सिखाया है मुझे,,कविता मेरी संजीवनी -मेरा कथ्य -आत्मिक स्नेह एवं मेरे पिता की साहित्यिक प्रेरणा का प्रतिबिम्ब और भावनाओं की स्नेहिल धरती पर लिखी रिश्तों की -आराधना है । जीवन के संघर्षों ने भी बहुत कुछ सिखाया है और खुशियो: के छोटे छोटे पलों ने भी।चाहे दस वर्ष की उम्र में धर्मयुग में छपी कविता हो या कादंबिनी में प्रकाशित रचनाए। अनेक साहित्यिक राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संस्थओं से जुडना और सम्मानित होना आज भी अभिभूत करता है।

प्रस्तुतकर्ता
डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

रचनाएँ

1.

अमर रहे यह मेरी राखी,
सावन की रिमझिम बूंदों ने तन मन आज भिंगोया है
राखी की हर स्वर्ण किरण में बहना ने प्यार पिरोया है
यह बंधन अनमोल हृदय का भाव भरी मन की साखी
रोम रोम बस यही मांगता अमर रहे मेरी राखी
अमर रहे वह छोटा भैया. स्नेह हृदय का. मान रहे
अमिट रहें बचपन की यादें, खुशियों की पहचान रहे
दूर हो गई मां की देहरी, बाबुल का अंगना दूर हुआ
पर राखी का स्नेह हमेशा, साथ रहे, बस यही दुआ,
सुख में,दुख में, समदर्शी बन,बहना मांगे साथ तुम्हारा
तेरे हर आंसू मैं चुन लूं, खुशियों पर अधिकार तुम्हारा
आज श्रावणी रक्षाबंधन, आंचल भर आशीष मेरा
घर आंगन की खुशियां, महकें मुस्काये संसार तेरा,
#बहुत बहुत आशिर्वाद के साथ...

2.

शब्द को प्रतिमान देना चाहती हू
भावना को मान देना चाहती हूं
कलम.की भाषा कहां सूरज गढेगी
आगत का अनुमान करना चाहती हू
कब हमारी कल्पना सपने बुनेगी.
सृजन की दुनियां कहां गतिमान होगी.
लेखनी के शब्द गरिमामय बनेंगें
बस.यही संधान करना चाहती हूं.
मैं नहीं कहती कोई प्रतिकार न ले
बस.लेखनी को द्वंद्व का अधिभार न दें
जब मेरी कविता नया नभ गढ सकेगी.
नव किरण सी लालिमा मन में खिलेगी.
उस प्रात का आह्वान करना चाहती हूं
शब्द को प्रतिमान देना चाहती हूं.
भवितव्य का अनुमान करना चाहती हूं

3.

कर्म हेतु जीवन अर्पण का गीत.धरा को गाने दो
सुख सौहार्द्र शांति का परचम हर.घर में लहराने दो।
गीता का उपदेश पवन के पंखों पर लहराया है,
तभी तिरंगा स्वयं कृष्ण ने हाथों में आज उठाया है।
नीति कुनीति न होने पाये जन मन गौरव.हो मन.में आजादी
की रक्षा का संकल्प जगे हर जन.मन में।
चलो कृष्ण अब युद्ध समय का संकट बनकर छाया है।
तभी तिरंगा स्वयं कृष्ण ने हाथों में आज उठाया है।
भारत की इस पुण्यभूमि पर यह हरीतिमा बनी रहे
हर मन हो सत्कर्म निरत अधरों की स्मिति खिली रहे।
तप्त हृदय निर्मल हो ,जग में वंशी का रव छाया है
तभी तिरंगा स्वयं कृष्ण ने हाथों में आज उठाया है।

4.

याद करें बचपन के दिन,
यादें अकुलाये तुम बिन,
उतरे चंदा मामा, दूध कि कटोरी में,
मचली निंदिया रानी -अम्मा की लोरी में ,
बतियाँ बनाने के दिन ,
याद करें बचपन के दिन ,
आंगन की सीमा पर -लड़ते झगड़ते थे
घरौंदों के खेल में टूटते खिलौने थे ,
रूठने मनाने के दिन ,
याद करें बचपन के दिन ,
गुड़िया की चुनर में रंग नए भर लाएं ,
कागज की नावों को पानी में तैराए
रिमझिम बरसातों के दिन ,
याद करें बचपन के दिन ,
सूनी दोपहरी में ,आम के बगीचों में ,
टूटे खंडहरों में ,ताल में -तलैयों में
छुपने छुपाने के दिन ,
याद करें बचपन के दिन ,
छोटे छोटे सपनो में ,खिलता था वो बचपन ,
आसमान छूने को मचल मचल जाये मन ,
ऊंची उड़ानों के दिन ,
याद करें बचपन के दिन ,
टूटे खिलौनों पर आँखें क्यों भर आई ?
डाली से बिछड़े ज्यों बहना से हर भाई ,
सावन की राखी के दिन ,
याद करें बचपन के दिन ,
रूठने मनाने की बातें पुरानी हैं
भूलेंगे कैसे हम ,यादें आनी -जानीहैं
यादें रुलाएं तुम बिन ,
याद करें बचपन के दिन ,

5.

सिंक रही हैं भावनाएं रोटियों सी,
गोल घिरते जिन्दगी के व्यूह इतने,
हर मोड़ पर ज्यों घूमती है गोल रोटी
फिर भी कोई आस मन की अनबुझी सी,
सिंक रही हैं भावनाएं रोटियों सी,
मै घुमाती हूँ समस्याओं के पट पर,
उलझनें आटे सी कोमल और गीली,
भूख सी फैली हुई है आंच मन की,
सिंक रही हैं भावनाएं रोटियों सी,
कल फिर खिलेगा क्षुधा का विकराल सूरज,
फिर सजेगा घर का कोई एक कोना,
थालियों में सज उठेंगी कामनाएं,
फिर कोई सपना दिखाती प्यास होगी,
सब्जियों सी काटती हूँ,दर्द की हर रात बीती,
सिंक रही हैं भावनाएं रोटियों सी.
दाल पकती ज्यों कोई भूली कहानी,
हास हल्दी का.., नमक सी पीर जग की,
प्रार्थनाएं छौंक सी बेवक्त उठतीं,
घुट रही साँसों में जीवन की उदासी.
सिंक रही हैं भावनाएं रोटियों सी.
यह रसोई है मेरे सपनो की दुनिया ,

मधुरता कविता में निशि दिन घोलती हूँ,

चाकुओं को धार देती सोचती हूँ, कर रही हूँ धार पैनी अक्षरों की..
और गढ़ रही हूँ गीत कोई स्वप्नदर्शी .
सिंक. रही हैं भावनाएं रोटियों सी .

पद्मा मिश्रा
जमशेदपुर झारखंड

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
सोमवार, 24 अगस्त 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

मुझे तो हार भी पसंद है...

तुम्हारी हर खुशी में
मुझे भी सचमुच आनंद है
तम्हें जीत मुबारक
मुझे तो हार भी पसंद है...

बरसों साथ रहे हैं
सुख दुख सब झेले हैं
अपनों का जब संबल हो
खुशियों के ही मेले हैं
जो तुमको भाता है
वही मेरी भी पसंद है...

हर मुसीबत में अपनी
साथ तुझे पाता हूं
कैसे सुलझी है परिस्थिति
क्षण में ही समझ जाता हूं
जो तुझको दुख पंहुचाते
उनके लिए दरबाजे बंद हैं..

स्वरचित
नीरज पाराशर
सहायक आयुक्त
जनजातीय कार्य विभाग
इंदौर

"हर घर तिरंगा"

हर घर तिरंगा फहराएं घर-घर तिरंगा।
देशभक्ति के रंग में, हर भारती रंगा।।

केशरी,सफेद,हरा, जिसके है तीन रंग।
शौर्य, शांति, समृद्धि को रहते लिए संग।।
उतना पावन है जितनी,पावन है गंगा।
हर घर तिरंगा,फहराए घर-घर तिरंगा।

प्राण बसे हैं इसमें वीरो के, तू धागे मत जान।
रंगा है अपने क्षोणित से, इन्हें रंग मत जान।।
जिसकी आभा देखकर,मन होता है चंगा।
हर घर तिरंगा,फहराए घर-घर तिरंगा।

हम हमारे राष्ट्रध्वज पर, करते हैं अभिमान।
इसके रक्षक इसके लिए, देते अपनी जान।।
दिया संदेशा दुश्मनों को, मत लेना पंगा।
हर घर तिरंगा,फहराए घर-घर तिरंगा।

नाम: वीरेंद्र दसौंधी
विधा: वीर रस।
पता: बृजधाम कॉलोनी जैतापुर खरगोन।
मोब:9425962292।

स्त्री

सच में अगर हम कविता रचते
स्त्री पर रचे
वो प्रकृति का साक्षात् रूप होती
कविता और स्त्री दोनों ही सृजन करती
और दोनों के बिना तो
यह धरती बंजर होने में देर नहीं लगती I
कविता और स्त्री
जगह पर तमाम मोहक रूपों में दिखती
और हम अभिभूत होते जाते
जीवन चक्र की भाति
सुना था पहाड़ भी गिरते
स्त्री पर पहाड़ गिरना समझ आया।
कुछ समय बाद पेड़ पर पुष्प हुए पल्लिवत
जिन्हें बालों में लगाती थी कभी
वो बेचारे गिर कर कहरा रहे और मानो
कह रहे उन लोगो से जो
शुभ कामों में तुम्हे धकेलते पीछे
स्त्री का अधिकार न छीनो
बिन प्रकृति और स्त्री के बिना संसार अधूरा
हवा फूलों की सुगंध के साथ
गिरे हुए पुष्प का कर रही समर्थन।

संजय वर्मा "दृष्टि "
125 बलिदानी भगतसिंहमार्ग
मनावर जिला -धार (म प्र)9893070756

युद्ध

शून्य सूनी-सूनी आँखें,
ताकती है आसमान।
हुए सारे स्वप्न भंग,
मंजिल की डगर वीरान।
उम्मीद का डूबा सूरज,
संवेदना के बहरे कान।
युद्ध से कटे पंख,
कंठ से अवरुद्ध गान।

युद्ध है या गिद्ध है?
कितना भयानक है मंजर!
अभी महक रही थी बगिया,
पल में फट कर हुई बंजर।
देखो तो कितने ही घाव,
रिस रहे फूलों के अंदर।
पीर की ज्वालाओं से,
उबल रहा पूरा समंदर।

रह रह कर गूँजते हैं,
धमाके, मिसाइल और बंदूक।
विरह, वेदना से भरी,
अनाथ बालक की संदूक।
क्यों पड़ा है ठंडा चूल्हा?
चिमटे की खनक है मूक।
बारूद में घुट घुट कर जीता,
दर-दर भटकाती है भूख।

विश्व शांति ज्योत जगा कर,
बढ़ाएं मानवता का हाथ।आलोकित कर संवेदनाएं,
अनाथों को करें सनाथ।

देकर प्यार, पुनर्वास,
देकर नवजीवन और आस,
देकर भावनात्मक आधार,
देकर विश्व-शांति उपहार,
जुड़े रहें हम साथ-साथ।
जुड़े रहें हम साथ-साथ।

मालिनी त्रिवेदी पाठक
वडोदरा

लक्ष्य

जीवन पथ पर चलते चलना।
लक्ष्य हो ऊँचा बढ़ते चलना।।
****
पथ भी वही है पग भी वही है।
कांटों भरा हर मोड़ वही है।
बढ़ने में कभी न घबराना।
दर्द चुभन का सहते चलना।।
****
कदम बढ़े कार्य पूर्ण न होता।
कार्य करे हल पूर्ण न होता।
मोक्ष प्राप्ति तब संभव होगी।
आदर्श लेकर बढ़ते चलना।।
****

पाप दोष दुविधा को छोड़ो।
सहानुभूति सुविधा को जोड़ो।
एकमत की निष्ठा को लेकर।
भविष्यक भाषा कहते चलना।।

रामेश्वर शर्मा, रायपुर

प्रतीक

अपने भारत देश का, ध्वज -गौरव अभिमान।
रंग केसरी वीरता, श्वेत शांति का गान।।
श्वेत शांति का गान, हरित जीवन खुश हाली।
चक्र प्रतीक महान,प्रगति पथ गौरवशाली।
देश हुआ आजाद, वीर देखे थे सपने।
स्वतंत्रता संग्राम, प्राण प्रण ध्वज में अपने।।

होता दिव्य प्रतीक है, रहे संगठित देश।
राष्ट्र-धर्म ध्वज गान हो, प्रेम भरे परिवेश।।
प्रेम भरे परिवेश,एकता लेकर चलते।
जन गण मन सम्मान, छाँव में माँ की पलते।
आन वीरता शान, भारती का मन रोता।
संविधान-अधिकार राष्ट्र ध्वज सबका होता।।

अमितारवि दुबे

मन करता है

अब मुझे लापरवाह होने का मन करता है,
मुझे भी कोई टोके मुझे भी कोई रोके,
अब गैर जिम्मेदार होने का मन करता है।
बहुत हुआ अब समय पर सोना उठना,
अब मुझे भी नहीं है समय की परवाह,
मेरा मन भी कभी आकाश में उड़ने को करता है।
तो कभी सखियों के साथ हाथों में हाथ डाल घूमने का,
तो कभी फूलों को हौले से छूने का,
तो कभी आंचल लहराने का
मेरा भी मन करता है।
कभी जिम्मेदारियों से भागने का,
मस्त रहूं मस्ती में, जिम्मेदारियां जाये बस्ते में।
बहुत हो गई रोटी सब्जी की चिन्ता,
अब उड़ते हुए तितली को पकड़ने का मन करता है।
अब बुगुल के साथ खेलने का मन करता है,
संग उसके दौड़ कभी थक कर बैठ जाऊं,
संग बुगूल के गाडियां दौडाऊ
कभी बैंट बांल घुमाऊं,
और एक मोटा हाथी झूम कर गाऊं।
अब मेरा मन करता है,
सब छोड़ कर कहीं चली जाऊं,
और बस अपने बचपन में खो जाऊं,
और अपने बचपन में खो जाऊ।

श्रीमती सीमा पाण्डेय
रायपुर छत्तीसगढ़

सावन आया है

हरी हरी खनकें ,ये चूड़ियां
हरियाला सावन है आया।
सावन में देखो, पीहर मैं आयी।
भैया है देखो, लेने आया
हरियाला सावन है आया
हरी हरी खनकें ये चूड़ियां
हरियाला सावन है आया।
हरी खनकें ये चूड़ियां
हरियाला सावन है आया।
राखी का पावन बन्धन निराला।
मेंहदी से हाथ है, रचाया।
हरियाला सावन है, आया।
हरी-हरी खनकें ये चूड़ियां
हरियाला सावन है आया।
इंद्रधनुष की छटा निराली।
बारिश ने सबको सरसाया
हरियाला सावन है आया।
हरी हरी चूड़ियां खनकें।
हरियाला सावन है आया।
दादुर भी बोले,पपीहा भी टेरे।
ऐसे में पिया, याद आया।
हरियाला सावन है आया।
हरी हरी चूड़ियां खनकें
हरियाला सावन है आया।
गुझिया, पपड़ियां से चौका अब महकें।
अम्मां ने थाल सजाया।
हरियाला सावन है आया। हरी हरी खनकें चूड़ियां।
हरियाला सावन है आया।

डा मंजरी अरविंद गुरु
रायपुर, छत्तीसगढ़।

हिंदी हिंदुस्तान की

इस बार कॉलोनी में मासिक किटी रमा चाची के घर पर थी।कुछ दिनों से रमा चाची को अहसास हो रहा था;;; कॉलोनी के बच्चे इंग्लिश में ही गिटर-पिटर करने की कोशिश करते थे। बच्चे तो बच्चे उनकी मां यानि रमा की सहेलियां भी अपने बच्चों के सामने हिंदी को बिल्कुल तवज्जो नहीं दे रहीं थीं। बस एक ही वाक्य अंग्रेजी के शब्दों का ही प्रयोग किया करो अपना स्टैंडर्ड मेंटेन करके रखो;;; कई बार रमा विरोध भी करती कि यह क्या तुम लोग हिंदी के अपने ही देश में हिंदी को इतना कमतर आँकती हो।

*इस बार उसकी किटी सितंबर माह में पड़ने वाली थी। सितंबर माह में हिंदी दिवस के ऊपर आधारित अनेक कार्यक्रम होते हैं और कई संस्थानों में पूरे माह हिंदी महोत्सव भी मनाया जाता है, बस इसी बात से प्रेरित होकर रमा ने सोच लिया कि इस बार अपनी किटी में कुछ अलग करके रहेगी और हिंदी को, *हिंदी मेरी मां के रूप में बच्चों को सिखाने की कोशिश करेगी। बस उसने अपनी मासिक किटी का विषय रखा;;;*हिंदी हिंदुस्तान की*। भारत की आन बान शान की प्रतीक हिंदी भाषा के शुभ पर्व हिंदी दिवस पर अपनी किटी का आयोजन किया। बड़ों के साथ-साथ सभी बच्चों को विशेष रूप से आमंत्रित किया। उनके लिए अपनी हिंदी भाषा पर आधारित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं रखी। बच्चों के लिए एक मिनट वाली लिखित प्रतियोगिताएं रखी गई;;; जिसमें हिंदी भाषा से ही संबंधित प्रश्न रखे गए। सभी के उत्तर एक शब्द में देना थे। सभी प्रतियोगिताओं को उसने रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाने का पूरा प्रयास किया। सब बच्चों को *हिंदी मेरी मां* विषय पर चार पंक्तियां घर से लिखकर लाने का विषय दिया गया। अपनी सब सहेलियों के लिए भी हिंदी की रोचक लोकोक्तियों और मुहावरों पर आधारित प्रतियोगिताएं रखीं। सभी सहेलियों और बच्चों ने बहुत आनंद उठाया। रमा ने खेल-खेल में बच्चों को बहुत कुछ सिखाने की कोशिश की। यकीनन सभी को हिंदी के महत्व के साथ-साथ बहुत रोचक जानकारियां भी मिली। उसकी सभी सहेलियों को भी अपनी गलतियों का एहसास हुआ कि कहीं न कहीं हम बच्चों को अपने ही घर में अपनी ही माटी से जुड़ी सोंधी खुशबू वाली हिंदी भाषा से दूर करते जा रहे थे ,*

*और बस सब ने प्रतिज्ञा की कि वह सब दूसरी भाषा भी बच्चों को सिखायेंगी लेकिन हिंदी को सदा * हिंदी मेरी मां * के रूप में पारिभाषित करने का प्रयास करेंगी और आज कहीं न कहीं रमा चाची बहुत अधिक खुश थीं ;; उनकी सहेलियाँ भी और कॉलोनी के सभी बच्चे भी। और आज रमा चाची को अपने हिंदी के प्रति प्यार का एहसास एक अलग ही सुकून दे रहा था।*

साधना छिरोल्या
दमोह मध्य प्रदेश

रुखसत

अनवर बेटा, हमारी शबाना बिटिया का ख्याल रखना।
आज हम तुम्हें, असलम भाई की यह अमानत सौंप रहे हैं, उनके दिल का टुकड़ा।
नम आंखों संग भर्राई आवाज़ में चौधरी जी शबाना के सर पर आशीष और प्रेम भरा हाथ रखकर कहा। आज तुम्हे रुखसत करने का समय आ गया बेटी।
आँखों में आँसुंओं की धारा लिए शबाना चौधरी जी को देख रही थी।
अंकल जी ,क्या मैं आज आपको अब्बू कह सकती हूँ।
पिछले तीन साल से मैं आपकी जिम्मेदारी बन कर आपके साथ रही हूँ और आज बेटी
बन कर इस घर से रुखसत हो रही हूँ।
बेटियां अपने पिता की जिम्मेदारी नहीं बल्कि सम्बल होती है। असलम और मैं तो बचपन के दोस्त थे। कितना खुशहाल था हम दोनों का परिवार।
पर करोना महामारी ने सब तबाह कर दिया।
तीन साल पहले तुमने अपने अम्मी अब्बू खो दिए ,और मैंने, तुम्हारी आंटी और रोहन बेटे को। यहां मैं अकेला रहा गया और वहां ईश्वर ने तुम्हे बचा लिया।
बिटिया अनवर को तो असलम भाई और भाभी ही पसंद कर के गए थे तुम्हारे लिए। कहते थे देखना शबाना का निकाह बहुत धूमधाम से करूँगा।
आज मेरे बचपन के दोस्त का सपना पूरा हो गया।
बिटिया अगर तुम उस कठिन समय में मेरा सम्बल न बनती तो शायद मैं भी उस महामारी में चला जाता।

नंदिनी लहेजा
रायपुर छत्तीसगढ़

रिश्तों का बदलता संसार

रिश्तों का बदलता ये संसार देखिए,
हर चेहरे पर जैसे एक व्यवहार देखिए।
शब्दों में मिठास है, भावों में दूरी है,
मन के आँगन में अब कैसी ये मजबूरी है।
पहले जो रिश्ते थे, स्नेह की छाँव तले,
अब वो खड़े हैं जैसे समय के ठाँव तले।
बातों में अपनापन कहीं खो सा गया है,
हर कोई अपने ही घेरे में सो सा गया है।
माँ की ममता भी अब व्यस्तता में बँट गई,
पिता की छाया भी जिम्मेदारियों में सिमट गई।
भाई-बहन के किस्से अब यादों में रह गए,
मोबाइल की दुनिया में सब जैसे बह गए।
दोस्ती के अर्थ भी अब बदलने लगे हैं,
स्वार्थ की धूप में रिश्ते पिघलने लगे हैं।
साथ निभाने की कसमें अब हल्की सी लगती,
हर राह पर कोई शर्त पलने लगी है।
फिर भी कहीं-कहीं कुछ दीप अभी जलते हैं,
सच्चे रिश्तों के फूल अब भी महकते हैं।
जो दिल से जुड़े हैं, वही अमर हो जाते हैं,
समय की आँधी में भी अडिग रह जाते हैं।
आओ फिर से रिश्तों को अर्थ नया दें,
मन के सूखे कोने में प्रेम का जल भर दें।
क्योंकि यही रिश्ते जीवन का आधार हैं,
इन्हीं से सजी ये दुनिया, ये परिवार है।

डॉ निरुपमा वर्मा
एटा. उत्तर प्रदेश

कैसे लिख दूँ....!!

जी करता,कुछ ऐसा लिख दूँ।
शांत पहर के जैसा लिख दूँ॥
भावों की स्याही मे घुलकर ,
मधुर-मधुर कुछ यादें लिख दूँ॥

शब्दों में माधुर्य घोलकर,
स्वप्नों की अभिलाषा लिख दूँ।
कर दूँ अर्पित अपने मन को
सुलझाकर कुछ बातें लिख दूँ।
अपने अंतस्तल का लिख दूँ ।
जीवन की झंझावतें लिख दूँ ।
कैसे लिख दूँ ... !

श्वास! श्वास! में,अविरल, आतुर
विस्मृत ! सुखद पलों को लिख दूँ।
लेकिन कुछ लिखने से पहले,
हाथ मेरे क्यों थम जाते हैं।
अंतर -भाव सहम जाते हैं।
ऐसे में,मैं क्या-क्या लिख दूँ ...!!

जी करता,कुछ ऐसा लिख दूँ।
शांत पहर के जैसा लिख दूँ ॥
भावों की स्याही मे घुलकर,
मधुर!मधुर कुछ यादें लिख दूँ॥

माधवी उपाध्याय

आँखों के आँसू

बेटी के ससुराल में
पिता के आने की खबर
बेसब्री तोड़ देती बेटी की
आँखे निहारती राहों को
देर होने पर
छलकने लगते आँसू
दहलीज पर आवाज लगाती
पिता की आवाज - 'बेटी'
रिश्तों व काम काज को छोड़
पग हिरणी सी चाल बने
ऐसी निर्मल हवा
सूखा देती आँखों के आँसू
लिपट पड़ती अपने पिता से
रोता -हँसता चेहरा बोल उठता है
'पापा इतनी देर कैसे हो गई,'

समय रिश्तों के पंख लगा उड़ने लगा
मगर यादें वही रुकी रही
मानो कह रही हो
अब न आ सकूंगा मेरी बेटी
मगर अब भी
आँखे निहारती राहों को
याद आने पर
छलक जाते आँसू
दहलीज पर आवाज लगाती
पिता की वह आवाज
अब न आ सकी,

पिता की राह निहारने के बजाय
आकाश के तारों में वह ढूढ़ रही पापा को
कहते है न
कि लोग मरने के बाद
बन जाते है तारे
आँसू ढुलक पड़ते रोज गालों पर
और सूख जाते अपने आप
क्योंकि निर्मल हवा कभी
सूखा देती थी आँखों के आँसू
जो अब है थम।

संजय वर्मा
"दृष्टि "

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

वलय

दीद अश्कों से भरे हैं वलय
कैसे कह दें पूर्ण खड़े हैं।
न द्वेष रहा, न कोई शिकवा,
फिर भी तेरे रंग चढ़े हैं।

मुफ़लिस दिल को चाहत समझे,
प्रेम कहाँ बाज़ारों पलते।
अरमानों की कोमल धरती,
सपने बनकर भीतर जलते।

कैसे मानें तलबगार हो,
जब सब वादे झूठे निकले।
विश्वासों के महल बने थे,
क्षण में सारे धूलि में बिखरे।

बिछड़ा जो इक बार जगत में,
फिर मिलते कम लोग यहाँ हैं।
घाव समय के गहरे इतने,
कहाँ सहज ये सिल पाए हैं।

जो संग रहे वह हितकारी,
दूर रहे उससे भी प्रीति।
समय-समय का खेल निराला,
यही जगत की सच्ची नीति।

नेकी का बस मेल जगत में,
अनुकूलता जग को जीते।
मन में बैर कभी मत रखना,
प्रेम-सुधा से जीवन सींचे।

ममता, करुणा, सत्य, सहन से,
मानवता का दीप जलेगा।
जिस उर में अनुराग बसेगा,
वही हृदय ईश्वर को मिलेगा।।

जिंदगी की बची है चंद घड़ी,
है अपना अब कौन।
कशमकश जब खत्म हुई
समझदारी बस मौन ।।

डॉ. सुशीला पाल
'साथी', मुंबई

राखी आई है!

रिश्तों को सजाने
चिन्ता को मिटाने
एक भेंट लेकर आई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

क्यों उदास होते हो?
खामोश क्यों बैठे हो?
पत्र में प्यार समेटे आई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

सूनी कलाई को भरने
तेरे माथे तिलक करने
नई सौगात लेकर आई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

आँखों के मोती पोंछ लो
संकट का मुँह मोड़ लो
खुशियों के संग आई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

मत समझ, खुद को अभागा
हाथ तेरे, बँधेगा धागा
हिम्मत साथ में लाई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

बुरी नज़र से बचाने
साथ तेरा निभाने
शक्ति बनकर आई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

करेगी तेरी आरती
माँगेगी मंगल-गति
आशीषों से भर आई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

बहती रक्तधार रोकने
घाव का दर्द सोखने
ममता की छाँव लाई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

घर से विदा किया
अलविदा नहीं किया
साँसों में बसकर आई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

युद्ध के मैदान पर तू
देश का ध्वज लहरा दे तू
जीत का जश्न मनाने आई है!
बधाई हो भैया...
राखी आई है।

सूनेपन को दूर कर दे
घर को फिर से पूर्ण कर दे
द्वार खड़ी थाल सजाई है!
बधाई हो भैया...
तेरी बहना
राखी लेकर आई है।

उद्देश्य तिवारी 'उदय'

दोराहे की दुविधा

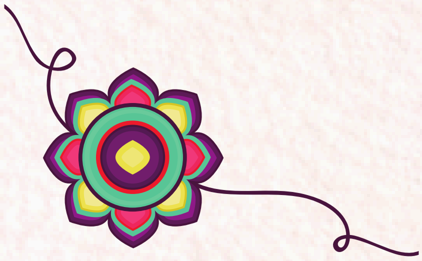

सुविधा और सपने के
द्वि मार्ग पर खड़ा युवा
दिग्भ्रमित हो सोच रहा
किस पथ पर करूं गमन।

सुविधा मार्ग पर
शहरों की
ऊंची अट्टालिकाएं
कर रही हैं आकर्षित।
मगर भविष्य पर छाए
अनिश्चितता के घने
काले बादलों से ,
सफलता पर लग रहा
सवालिया निशान।

स्वप्न मार्ग पर
उम्मीदों का उजाला
दे रहा संकेत कि,
दृढ़ इच्छा शक्ति
और परिश्रम से
असुविधाओं में भी
सपने हो सकते हैं पूरे।
पगडंडी ही पहुंचाएगी
सफलता के राजपथ पर।

मोहन जोशी ' पीयूष '

रक्षाबंधन की शुभकामनाएँ

"ब्रदर सिस्टर रिलेशनशिप डे"

रक्षाबंधन आया और हमेशा की तरह एक बार फिर दिल ने कहा कुछ बातें की जाए आप सबसे पर जाने क्यों न तो आज शब्द साथ दे रहे न भाव,..इसलिए सोचा आज अपनी आपबीती ही सुनाऊं आपको,.. शायद मेरी कश्मकश देख कुछ रास्ता सूझे,..बताइयेगा जरुर | और हां! इस बार भी गुजारिश कि मैं सिर्फ अपने विचार साझा कर रही हूं जरुरी नहीं आप सहमत हों,..तो सुनिए,..

कल कई दिनों बाद बाजार गई,सोचा ढेर सारी शापिंग करूंगी,....बच्चों की फरमाईशें,घर की जरूरतों के सामान और रक्षाबंधन की तैय्यारी भी,....सोचा सबसे पहले राखियां खरीद लूं,..

एक दुकान में पहुंची, दुकानदार एक महिला को राखीयां दिखा रहे थे, रंग- बिरंगी राखियों ने बरबस ही मुझे वहीं रोक लिया और मैं भी उनके साथ राखीयां देखने लगी,तभी मुझे आकर्षित किया उन महिला और उनकीलगभग 8-9 साल की बच्ची की बातों ने,...

बच्ची ने अपनी मां से पूछा- मम्मी राखी के त्यौहार को रक्षाबंधन का त्यौहार क्यों कहते हैं?

मां ने कहा-कयोंकि रक्षाबंधन के दिन बहन अपने भाई को राखी बांधकर रक्षा का वचन लेती है,..

बच्ची ने कहा-पर मेरा भाई तो छोटा है,जब हम स्कूल जाते हैं तो मैं उसकी रक्षा करती हूं और मम्मी,मामा तो बहुत दूर रहते हैं,..हमारी रक्षा तो पापा करते हैं,..

और पापा कहते हैं कि पुलिस हमारे शहर की और सैनिक हमारे देश की रक्षा करते हैं,..

ये सब सुनते सुनते पता नहीं मेरे विचारों का प्रवाह कब और किन-किन पगडंडियों पर गतिमान हो गया,... और एक चलचित्र की तरह मेरी आंखों के सामने से कितने ही दृश्य गुजर गए,..

टी.वी.,न्यूज़ चैनल,न्यूज़ पेपर,फिल्मों के कई दृश्य,गुवाहाटी,आसाम, काश्मिर, भोपाल,दिल्ली,उत्तरांचल आदि शहरों के नाम, और घपला,घोटाला,भ्रष्टाचार, बलात्कार,व्यभिचार,सेक्स स्कैंडल,भ्रूण-हत्या,गर्भपात जैसे शब्द कानों में गूंजने लगे खून-खराबा,चोरी-डकैती,लूट-मार जैसी वारदातो से रूबरू हुए लोगों की दहशत भरी नजरें सब कुछ मेरी नजरों के सामने से बुरे सपने की तरह गुजरते ही मेरा सिर चकराने लगा,..

और मैं पसीने से लथपथ हो गई,,..

तभी दुकानदार ने मेरी तंद्रा भंग की-मैडम,आपको क्या चाहिए,आपकी तबीयत तो ठीक है ना?

मैंने हड़बड़ाकर इधर-उधर देखा वो बच्ची अपनी मां के साथ जा चुकी थी,..

मैंने खुद को संभाला और बेमन से कुछ राखियां खरीदी,...और कुछ खरीदनें का मन किया न हिम्मत बची,...

मैं वापस जाकर गाड़ी में बैठी और ड्राइवर से सीधे घर चलने को कहा,..रास्ते भर मैं बेचैन रही,..मन में बार-बार सवाल उठते रहे कि कहां गई वो संस्कार,शिष्टाचार,भावनांए और शांति के पल,...

यंहा तो मानव ही मानव का दुश्मन बना बैठा है आज हर गली और चौराहे में ही नही बल्कि घरों में भी "अबला से सबला" बनी नारी एक तरफ अपनी अस्मिता और अस्तित्व की सुरक्षा नहीं कर पाती

और दूसरी तरफ वही नारी,नारी की दुश्मन की भूमिका निभाने से भी नही चूकती,..दैहिक शोषण,अंगप्रदर्शन,देह-व्यापार,व्यभिचार जैसे कुकृत्यों के लिए स्त्री पुरूष के बराबर ही जिम्मेदार है,..

जब कोई मर्यादा, संस्कार, नियम-कानून या बंधन मानवता के अस्तित्व को नही बचा पा रहा,..रिश्तों ने कर्तव्यों का निर्वाहन छोड़कर अधिकारों का दुरूपयोग शुरू कर दिया है,..

स्वतंत्रता जब से स्वच्छंदता में बदली है तब से मानवता शर्मसार होकर अपना वजूद खोती जा रही है,..तब क्या रक्षाबंधन जैसे पावन पर्व कलंकित होने से बच पाएगा?

उस छोटी सी बच्ची के मासूम से सवाल ने मेरे मन में उथल-पुथल मचाकर रख दी,मानो सबसे नजरे चुराती हुई सी मैं घर पहुंची,सामने अपने बच्चों को देखकर मैं घबरा सी गई और

हुआ भी कुछ ऐसा ही बच्चों ने राखी का पैकेट हाथ से ले लिया और अचानक मेरे बेटे ने पूछ ही लिया

मम्मी राखी क्यों बांधते हैं??

मैंने झट से कहा-जैसे मदर्स डे,फादर्स डे, बर्थ डे,टीचर्स डे,वूमन्स डे,फ्रेंडशिप डे आदि मनाते हैं वैसे ही ये भाई-बहन का डे है,उस दिन बहन भाई को राखी बांधती है,भाई बहन को गिफ्ट देता है और दोनो एक-दूसरे को मिठाईयां खिलाते हैं

बेटे ने कहा-वाह!"राखी डे",

बेटी ने कहा-"ब्रदर सिस्टर रिलेशनशिप डे"

मैंने चैन की सांस ली कि बड़ी कुशलता से मैंने अपने बच्चों से खुद को बचा लिया,..

नहीं दे पाई वो संस्कारों और परंपराओं वाला जवाब जो उस बच्ची की मां ने उसे दिया था और मेरी मां ने मुझे बतलाया था,...

वाकई जब "रक्षक ही भक्षक बने" तो "रक्षाबंधन के त्यौहार" का "राखी डे" या "ब्रदर सिस्टर रिलेशनशिप डे" में ही बदल जाना ही सही है

चलो कुछ तो बदला जिसने मुझे इन सवालो से बचा लिया,....

लेकिन जवाब न दे पाने की पीड़ा और पछतावा आज भी दिल मे रहरहकर हूक से उठता है,....|

डॉ. प्रीति समकित सुराना

वीरा आना रक्षाबंधन पर

तन-मन अपना न्योछावर कर,
खड़े हो डटकर सीमा पर,
मेरे प्यारे भैया तुम्हरी,
हम लें बलैयां जी भर कर।।

भेज रही हूँ पाती भैया,
स्नेह प्यार से सींचकर,
हो सके तो आना भैया,
पावन रक्षाबंधन पर।।

मां बाबुल हैं राह देखते,
तुम्हरे घर पर आने की,
भावज के हाथों भी सज गई,
हरी चूड़ियां सावन की।।

ना सोना ना चांदी मांगू,
ना रुपया बटुआ भर भरकर,
हो सके तो जल्दी आना,
भैया रक्षाबंधन पर।।

सावन के मेले हैं सज गए,
हिंडोले भी देखो डल गए,
कजरी के मेले घूमेंगे,
हम सब देखो जी भर कर।।

दुश्मन टेढ़ी नजर गड़ाए,
ताक रहा है सीमा पर,
जल्दी उसका खात्मा करके,
आना रक्षाबंधन पर।।

घर का आंगन सूना-सूना,
मन का है हर कोना सूना,
खुशियां तुम बरसाने वीरा,
आना रक्षाबंधन पर।।

गर्मी,सर्दी,पानी में भी,
डटे हो तुम तो सीमा पर,
हम सब तो हैं घर में दुबके,
दो रजाई ओढ़ कर।।

मंदिर में राधे-गोविंद,
झूलें पींगें भर भर कर,
जल्दी आना मेरे वीरा,
हम भी झुलायें जी भरकर।।

अखाड़े भी देखो सज गये,
पहलवान तैयार भी,
कुश्ती,दंगल देखने आना,
अबके रक्षाबंधन पर।।

शिव को बेल की पात चढ़ाने,
और गंग की धार भी,
कान्हा जी को राखी बांधने,
आना रक्षाबंधन पर।।

गाँव की पावन माटी पर,
सावन की बूंदे बरस गई,
सोंधी खुशबू लेने आना,
पावन रक्षाबंधन पर।।

भैया तुम्हरे कौड़ी-पांसे,
सब रखे संभालकर,
मिलकर सब अट्ठू खेलेंगे,
आना रक्षाबंधन पर।।

कच्चा रेशम चुनचुन कर,
राखी बनाई प्यार से,
अपने हाथ से बाधूँ भैया,
आना रक्षाबंधन पर।।

साधना छिरोल्या

रक्षा बंधन

श्रावण मास में बर्षा की रिमझिम आई फुहार,
शीतल घटा सहित चंद्रमा का हुआ पूर्णाकार |
श्रावण में आई खुशियों की बहार,
आया राखी का त्योहार ||
रंग बिरंगी राखियों की बगिया खिली,
बहनों के चेहरे पर खुशियां खिली |
हर दिल में प्यार ही छाये,
सभी व्यंजन थाली पर आये |
बहनों ने सजाई पूजा आरती की थाली ,
खुशियों से भर गई हर गली और मेहदियों की लाली |
कलाईयों पर जब रेशम धागा सजा,
भाइयों के मन में स्नेह और प्यार जागा ||
भाई ने दिया वचन रक्षा का प्यारे,
बहन के चेहरे पर, खुशी के दीप सारे |
कच्चे धागे का बंधन है महान,
जो बढाये भाई-बहन का सदा मान ||
दूर रहे या पास रहे भाई मेरा,
सलामत रहे उसका हर एक सबेरा ||

शिवशंकर दुबे (गंगेले)

नेपाल का जलप्रलय: गर्म होते हिमालय की भयावह चेतावनी

26 अगस्त 2026 की सुबह नेपाल के हिमालयी क्षेत्र में एक ऐसी प्राकृतिक आपदा आई जिसने पूरे दक्षिण एशिया को झकझोर दिया। नेपाल और तिब्बत की सीमा पर स्थित लांगटांग पर्वतीय क्षेत्र में एक विशाल हिमखंड और चट्टान का हिस्सा अचानक टूटकर नदी घाटी में गिर गया। इस घटना से भोटे कोशी और त्रिशूली नदी में अचानक भयंकर बाढ़ आ गई। सबसे हैरानी की बात यह थी कि उस समय क्षेत्र में बिल्कुल भी बारिश नहीं हो रही थी। यह कोई सामान्य मानसूनी जलभराव नहीं था बल्कि हिमनद के टूटने से उत्पन्न एक प्रलयकारी सैलाब था जिसने अपने रास्ते में आने वाले गांवों, पुलों, सड़कों और हजारों लोगों के जीवन को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार पहले धरती कांपी और फिर पहाड़ों से धूल का एक बड़ा बादल उठा जिसके बाद मिट्टी, बर्फ और पानी का एक विशाल रेला पूरी घाटी में फैल गया।

इस भयंकर त्रासदी का सबसे बड़ा केंद्र नेपाल का रसुवा जिला रहा। स्याफ्रुबेसी, तिमुरे और रासुवागढ़ी जैसे इलाकों में कई घर और बहुमंजिला इमारतें मलबे में दब गईं। इसके अलावा 40 किलोमीटर से अधिक सड़कें और दर्जनों पुल पानी में बह गए। नेपाल और चीन को जोड़ने वाला ग्यिरोंग सीमा मार्ग भी पूरी तरह टूट गया जिससे व्यापार और कैलाश मानसरोवर यात्रा बुरी तरह प्रभावित हुई है। नेपाल की राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसियों के अनुसार इस महाप्रलय में 579 से अधिक लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है और लगभग 2400 लोग अभी भी लापता हैं। प्रभावित लोगों में स्थानीय निवासियों के साथ बड़ी संख्या में तीर्थयात्री और मजदूर भी शामिल हैं। लगभग 93000 लोगों को तत्काल मानवीय सहायता की आवश्यकता पड़ी है।

बिना भारी बारिश के इतनी बड़ी बाढ़ आने का मुख्य कारण हिमालय की बदलती जलवायु है। बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण हिमालय के हिमनद बहुत तेजी से पिघल रहे हैं और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में जमी मिट्टी की परत लगातार कमजोर हो रही है। इस कारण विशाल चट्टानें और हिमखंड अपनी जगह से खिसक कर नदियों में गिर जाते हैं और विनाशकारी मलबा प्रवाह का रूप ले लेते हैं। नेपाल सरकार ने इस आपदा के तुरंत बाद व्यापक राहत अभियान शुरू किया और 15000 सैनिकों तथा स्वयंसेवकों को प्रभावित क्षेत्रों में भेजा। राहत विमानों की मदद से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया।

हालांकि संकट अभी भी टला नहीं है क्योंकि मलबे के जमा होने से नदियों के रास्ते में दो नई झीलें बन गई हैं जिनके टूटने का अंदेशा बना हुआ है। हिमालय से निकलने वाली नदियां भारत और बांग्लादेश सहित करोड़ों लोगों का आधार हैं। इस प्रकार की प्राकृतिक घटनाओं से बचने के लिए सभी संवेदनशील हिमनदीय क्षेत्रों की उपग्रह के माध्यम से निरंतर निगरानी करना बहुत आवश्यक है। नदी घाटियों में स्वचालित चेतावनी प्रणाली लगानी होगी और भारत तथा नेपाल के बीच मौसम संबंधी जानकारियों का तेजी से आदान प्रदान करना होगा। यह त्रासदी एक बहुत बड़ी चेतावनी है कि यदि प्रकृति के साथ इसी प्रकार छेड़छाड़ जारी रही तो भविष्य में इसके परिणाम और भी अधिक विनाशकारी होंगे।

महेन्द्र तिवारी

रेशम का कोमल धागा

रेशम का कोमल धागा हूं।
बंधता जब मैं किसी कलाई पर
बन रक्षासूत्र विश्वास मधुर बन जाता हूं।
पूछो उस भाई से जिसकी बहना ने बांधा
वह स्नेह हृदय का ,अमिट सूत्र में गुंथा हुआ।
जिसमें कोई भी स्वार्थ लोभ के.भाव नहीं
बस प्यार असीमित प्यार लिए बहना का मन
भाई का हर संकट हरने को किया नमन।
धीरे धीरे बदला मौसम
अहसास हृदय के बदल गए।
वह मूल्यहीन पर बहुमूल्य भावों का रेशमी सूत्र
अब अर्थ और वैभव की लिप्सा का प्रतीक
अर्थहीन केवल साधारण सा अस्तित्व लिए
न स्नेह बचा न मान रहा।
खो गई कहां वह.पवित्रता?
उस बंधी कलाई पर एकाकी रेशम धागा
खो गए स्नेह के रिश्तों में उलझा जीवन
राखी की कीमत जब रिश्तों से ऊंची हो
मैं अश्रुसिक्त हो कितनी रातें जागा हूं।
मैं रेशम का कोमल धागा हूं।

पद्मा मिश्रा.जमशेदपुर

ग़ज़ल

भर सुनहरी धूप के अक्षर ग़ज़ल में
रौशनी भी लिख कहीं दिनकर ग़ज़ल में

छोड़ भी दे खून को स्याही बनाना
क्यों भरे नफरत के हैं खंज़र ग़ज़ल में

जिसके दम से है इमारत की बुलंदी
लिख वहीं अब नींव के पत्थर ग़ज़ल में

कश्तियां काग़ज़ की औ बारिश का पानी
भीगता बचपन लिखो अक्सर ग़ज़ल में

गाँव की अमराईयों से दफ्तरों तक
ज़िन्दगी के रंग भी कुछ भर ग़ज़ल में

मजहबी उन्माद आपस की लड़ाई
मत दिखा बरबाद ये मंज़र ग़ज़ल में

दिनकर राव दिनकर

सृजक-सृजन समीक्षा

रविवारिय केंद्रीय रचनाकार विशेषांक

आज अन्तरा शब्दशक्ति के पटल पर पुष्पा अरविंद शर्मा, नागपुर का परिचय एवं उनकी छह रचनाएँ पाठकों की समीक्षा एवं विचारार्थ प्रस्तुत हैं

पुष्पा अरविंद शर्मा, नागपुर जी एक संवेदनशील एवं बहुआयामी रचनाकार हैं। साहित्य-सृजन के साथ लेखन को अपने मन के भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम मानने वाली पुष्पा जी **कविता, लघुकथा एवं संस्मरण** जैसी विधाओं में निरंतर सक्रिय हैं। उनकी रचनाओं में जीवन के विविध अनुभवों, मानवीय संवेदनाओं, प्रकृति-प्रेम, भक्ति, स्मृतियों तथा स्त्री-मन की अनुभूतियों की सहज अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उनकी रचनाएँ **नवभारत नागपुर, दैनिक भास्कर** सहित विभिन्न महिला पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं।

पुष्पा जी की लेखनी की विशेषता उनकी सरल, सहज एवं भावप्रधान अभिव्यक्ति है। **'छुक-छुक करती गाडी आई'** और **'तितली'** जैसे बालगीतों में बालमन की चंचलता और प्रकृति के प्रति आकर्षण दिखाई देता है, वहीं **'ख़त'** में बीते समय की आत्मीय स्मृतियाँ और बदलते संचार माध्यमों के साथ बदलती जीवन-शैली का चित्रण है। **'राम!'** में भक्ति एवं समर्पण का भाव मुखरित होता है। लघुकथा **'अपराध बोध'** मानवीय संवेदना और समय रहते किए जाने वाले परोपकार की महत्ता को मार्मिक ढंग से सामने रखती है, जबकि **'पहचान'** स्त्री के आत्मबोध और स्वयं की स्वतंत्र पहचान की तलाश को स्वर देती है।

आइए, पुष्पा जी की रचनाओं से परिचित हों और अपने विचारों एवं समीक्षात्मक प्रतिक्रियाओं से उनका उत्साहवर्धन करें।

प्रस्तुतकर्ता
डॉ. प्रीति समकित सुराना
संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

रचनाकार का परिचय

नाम : पुष्पा अरविंद शर्मा
पिता श्री चिरंजीव लाल शर्मा
माता श्रीमती सावित्री देवी शर्मा
पति अरविंद कुमार शर्मा
रुचि लेखन, कविता, लघुकथा, संस्मरण
प्रकाशन नवभारत नागपुर, दैनिक भास्कर एवं कुछ महिला पत्रिकाएँ।
संप्रति : निजी व्यवसाय: निवेश- सलाहकार तथा लेखन में सक्रिय।

आत्मकथ्य **लेखन सिर्फ शौक नहीं, मन के भाव और विचार को शब्दों में उकेरना और लोगों तक पहुँचाना है।**

कविताएँ

1. अपराध बोध!

दिसंबर का महीना है, कड़ाके की ठंड पड़ रही है। रविवार का दिन है। सुबह होने को है। सब कोई रज़ाई में दुबककर सो रहे हैं। उठने की किसी को जल्दी नहीं है। रमा का भी मन तो उठने का नहीं हो रहा है, पर सोचती है, उठना तो पड़ेगा।

सिटी क्लब वालों की तरफ़ से आज कंबल वितरण का कार्यक्रम है। वितरण की ज़िम्मेदारी रमा पर है। सुबह-सुबह कंबल बाँटने जाना है। सोचती हुई रमा उठकर तैयार होती है।

इतने में ड्राइवर आ जाता है। उसकी मदद से कंबल कार में रखती है। घड़ी पर नज़र जाती है तो लगता है, निकलने में देर हो गई है। सब कोई पहुँच गए होंगे। यहाँ से पुरानी बस्ती की दूरी लंबी है। ऊपर से रास्ता भी जाम दिख रहा है। ख़ैर, देखते हैं, सोचकर रमा कार में बैठ गई।

उसके घर से कुछ ही दूरी पर देवी माँ का मंदिर है। आते या जाते समय वह वहाँ ज़रूर रुकती है। बाहर एक बूढ़ी माई बैठी रहती है। वह किसी से कुछ माँगती नहीं है। कोई अपने मन से दे दिया तो ठीक है। रमा सोचती है, माई ठंड में ठिठुरती हुई बैठी रहती है, एक कंबल उसे ज़रूर दे दूँगी।

मंदिर आया तो मन में विचार आया, वैसे ही देर हो रही है, वापसी में दे दूँगी।

रमा पुरानी बस्ती पहुँच गई। कंबल वितरण समाप्त हुआ। सब कोई रवाना हो गए। रमा मंदिर के पास कार रुकवाती है। कंबल हाथ में लेकर आगे बढ़ती है कि माई को अपने हाथ से ओढ़ा दूँगी।

मंदिर के सामने कुछ लोग झुंड में खड़े थे। रमा ने किसी से पूछा, "क्या हुआ?"

किसी ने जवाब दिया, "यहाँ एक माई बैठती थी, वो नहीं रही।"

रमा ने देखा, उसके हाथ से कंबल माई के ऊपर गिर गया!

रमा रोती हुई कार में बैठ गई। उसके आँसू रुक नहीं रहे थे।

मन अपराधबोध से भर गया।

2.छुक-छुक करती गाड़ी

छुक-छुक करती गाड़ी आई,
उसमें बैठी गुड़िया रानी आई।
चीं-चीं करती चिड़िया आई,
चिड़िया बोली, मैं भी चलूँ तेरे साथ।
गुड़िया बोली, आ जा, बैठ जा मेरे पास।

भौं-भौं करता कुत्ता आया,
कुत्ता बोला, मैं भी चलूँ तेरे साथ।
गुड़िया बोली, आ जा, बैठ जा मेरे पास।

म्याऊँ-म्याऊँ करती बिल्ली आई,
बिल्ली बोली, मैं भी चलूँ तेरे साथ।
गुड़िया बोली, आ जा, बैठ जा मेरे पास।

सबके साथ बैठी गाड़ी चलती जाए,
घूम-घाम के सब वापस घर को आए।

3. तितली!

तितली रानी, तितली रानी,
रंग-बिरंगे पंख तुम्हारे,
नाज़ुक-नाज़ुक प्यारी-सी,
कितनी सुंदर लगती हो।

फूल-फूल पर मंडराती हो,
फूलों का रस पी उड़ जाती।
मेरे आँगन सुंदर फूल खिले,
तुम क्यों नहीं आती तितली?

मेरे आँगन आ जाओ रानी,
फूलों का रस पी उड़ जाना।
कल फिर आ जाना तुम,
मैं नहीं तुमको पकड़ूँगा।

तितली रानी, तितली रानी।

4.राम!

साँवली सूरत, मोहिनी मूरत,
दर्शन अपना दे जाओ,
राम मेरे आ जाओ,
राम मेरे आ जाओ।

घिस-घिस चंदन भरी कटोरी,
संग में रोली भी ले ली,
अपने हाथों तिलक सजाने को,
राम मेरे आ जाओ।

बगिया से चुन-चुन फूल लाई,
मैंने प्यार से माला बनाई,
अपने हाथों से पहनाने को,
राम मेरे आ जाओ।

मैंने प्यार से लड्डू बनाए,
थाली में भर-भर सजाए,
अपने हाथों से खिलाने को,
राम मेरे आ जाओ।

जी भरकर निहारूँगी,
हाथ न राम अब छोड़ूँगी,
संग तुम्हारे मैं भी चलूँगी।
कहे पुष्पिन्द, राम मेरे आ जाओ,
राम मेरे आ जाओ।

राम मेरे अब आ जाओ,
राम मेरे अब आ जाओ।

5.पहचान!

समुद्र तट पर अकेली बैठी,
मैं उसकी ऊँची-नीची गिरती लहरों को
ताकती।

अतीत के पन्नों में उलझ-सी जाती हूँ,
सोचती हूँ ज़िंदगी में अब तक,
क्या खोया, क्या पाया!

पाना तो दूर,
मैंने तो अपनी पहचान,
मैंने तो अपना नाम भी खो दिया।

क्या यह मेरी सही पहचान है?

नहीं!

बेटी, बहन, बहू, बीवी, माँ—
यह सब तो रिश्तों की पहचान है!

अब मुझे अपनी पहचान बनानी है।

मौत के बाद परिचित चेहरों के बीच
एक भी अनजान चेहरा,
याद कर दो बूँद आँसू गिरा दे,
तो मुझे
मेरी सही पहचान मिल गई।

6. ख़त!

याद रहेगा वो ज़माना,
बातों को शब्दों की लड़ी में पिरोना,
ख़त में मोती-सा सजाते जाना,
दौड़ लगा डाकघर जाना,
ख़त पोस्ट कर धीरे-धीरे आना,
करते डाकिए का इंतज़ार।

ख़त हाथ में आते ही इबारत
से पहचानने की कोशिश,
आज भी याद हैं वो क़िस्से,
लगता ख़त के हो न जाएँ
हिस्से।

खोलने के लिए छीना-झपटी,
बहन-भाई से लिपटी।
आया फ़ॉरवर्ड का ज़माना,
मैसेज, इमोजी से जानना।
गुज़रा ख़तों का ज़माना,
ख़तों से प्यार जताना।

याद रहेगा वो ज़माना।

पुष्पा अरविंद शर्मा
नागपुर

www.antrashabdshakti.com
संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

वेब अंक
सोमवार, 31 अगस्त 2026

अन्तरा शब्दशक्ति – हिन्दी साहित्य, प्रकाशन और रचनाकारों के सशक्तिकरण का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच।

अराधना

अक्षत चन्दन पुष्प लिए,
साथ लिए हल्दी रोली,
हाथ में लोटा लिए जल का,
चली में करने *अराधना* शिव की!

सोच रही क्या माँगूँ शिव से,
सब कुछ दिया उन्हीं का है,
तेरा तुझको अर्पण करती,
क्या कुछ यहाँ मेरा है!

न शिकायत है कोई शिव से,
बस अराधना करती हूँ दिल से,
हर दुआ में सबकी भलाई चाहूँ,
और न चाहूँ मैं कुछ शिव से!

घर परिवार सुखी संसार,
बस ये मंत्र सुखी जीवन के,
न शिकवे शिकायतें किसी से,
बस चाहूँ प्राण तजूँ तेरे दर पे!

अदिति रुसिया
वारासिवनी

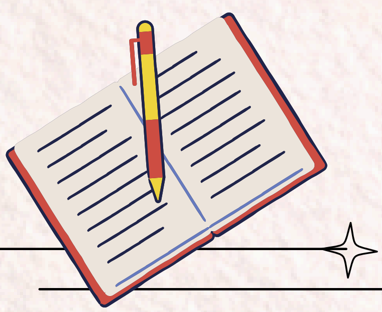

कब करें आराधना?

जब हमें बस कष्ट हो
या जिंदगी ही रुष्ट हो!
कितने जिए संघर्ष हमने
क्या हाथ उसका थामना!
कब करें आराधना?!

जब सुखों में झूलते हैं
प्रभु को हम फिर भूलते हैं
सम रखें हर दिन अगर
इतनी कठिन ये साधना!
कब करें आराधना?

कर्म में भी,धर्म में भी
जीव दुखों के मर्म में भी
मानव के सत व्यवहार में
क्या हो गई अवमानना!
कब करें आराधना?

है क्या ये करूणा दया में
नैन,कर्ण,दृष्टि,वफा में
भाव भंगिमा से हमेशा
उसकी रजा पहचानना!
कब करें आराधना?

रोम हर,हर सांस से भी
जिंदगी की आस से भी
दूर हो या पास हर कण
अस्तित्व उसका मानना!
कब करें आराधना?

किरण मोर कटनी.म.प्र.

एक कदम समाज की ओर

1)
आओ-आओ एक बात सुनायें,
रक्षाबंधन की कथा सुनायें,
कहतीं थीं दादी और नानी,
उनकी कहानी मेरी जुबानी।।
2)
एक बार देवता-दैत्य में,
घमासान युद्ध हुआ,
जो लगातार तो देखो,
बारह-वर्ष चलता रहा।।
3)
इस युद्ध में सभी देवता,
दैत्यों से पराजित हो गये,
प्राण बचाने की खातिर तो,
इंद्र,बृहस्पतिदेव से कहने लगे।।
4)
हे स्वामी!इस समय यहां पर,
न तो मैं ठहर सकता हूँ,
और ऐसी स्थिति में,
न तो मैं भाग सकता हूँ।।
5)
अब तो मुझे लड़कर ही,
प्राण अपने गँवाना होगा,
या फिर स्वामी आपको ही,
कोई उपाय बताना होगा।।
6)
ऐसे वचन सुन इंद्राणी,
बीच में ही बोल उठीं,
नाथ आप निर्भय रहें,
मैं भी कुछ अवश्य करूँगी।।
7)
मैं ऐसा उपाय करती हूं,
विजय आपको ही मिलेगी,
निराशा अब दूर रखिये,
सफलता आपको ही मिलेगी।।
8)
प्रातः श्रावणी पूर्णिमा थी,
शुभ अवसर की बेला थी,
इंद्राणी ने उपाय किया,
ब्राम्हणों को बुलवा लिया।।
9)
स्वस्ति वाचन उनसे कराकर,
रक्षा-पोटली तैयार की,
इंद्र की दाहिनी भुजा में,
इंद्राणी ने बाँध दी।।
10)
रक्षाबंधन से सुरक्षित,
इंद्र जब रण में खड़े,
दैत्यों को उस समय वे,
काल के समान दिख पड़े।।
11)
उस समय ही दैत्य वो सारे,
डरकर ही भाग गये,
और समस्त देवता फिर,
भय से मुक्त हो गये।।
12)
इस त्योहार की इतनी महत्ता,
दुश्मन से मुक्ति मिले,
ईश्वर की कृपा से तो,
धन-धान्य भी खूब मिले।।
13)
इस दिन मनुष्य सुबह से उठकर,
प्रथम तो स्नान करे,
फिर पितर, देवता और,
सप्तऋषियों का तर्पण करे।।
14)
दोपहर के बाद में,
ऊनी, सूती वस्त्र ले,
उसमें चाँवल को रखकर,
गाँठ फिर बाँध दे।।
15)
हल्दी,केशर से रंग कर,
एक पात्र में रख दीजिये,
घर को गोबर से लीपकर,
चाँवल का चौक पूरिये।।
16)
अन्न से भरकर एक घट,
चौक पर रख दीजिये,
चाँवल की गांठों को फिर,
पीले कपड़े में लपेटिये।।
17)
ऐसे ही चाँवल की फिर,
कई पोटलियाँ बनाइये,
इन सबको चौक पर,
स्थापित कर दीजिये।।
18)
ब्राम्हण से पूजन करवाकर,
यज्ञोपवीत पहनिये,
सब सदस्यों के हाथ में,
गांठो को फिर बांधिये।।
19)
इस पावन रक्षासूत्र से,
सब की रक्षा होती है,
प्रभु की है कृपा बरसती,
धन-धान्य की वर्षा होती है।।
20)
भाई के हाथों में राखी,
बहन भी है बाँधती,
यह प्रथा तो आज भी,
इस तिथि पर है प्रचलित।।
21)
प्राचीन ग्रंथों में लिखी,
श्रावणी की इतनी महत्ता भी,
प्राचीन समय में ऋषि-महर्षि,
शुरुआत कराते विद्या की।।

साधना छिरोल्या
दमोह(म.प्र.)